नाम के पति

(हास्य रस का शिष्ठ उपन्यास)

लेखक

शौकत थानवी

अनुवादक

हृदयेश सिंह

वितरक—

आनन्द पुस्तक भवन, वाराणसी

कार्यालय—औरातनगंज, वाराणसी—१

प्रकाशिका—
श्रीमती प्यारी देवी
साधना प्रकाशन
औसानगंज, वाराणसी-१

प्रथम संस्करण
१९५९
ढाई रुपया
२ रु० ५० न०पै०

मुद्रक—
शिवपूजन पाण्डेय
राजेन्द्र प्रेस
सोराकुआँ, वाराणसी

१

यहाँ उन लोगों की चर्चा नहीं जो अपनी बेगमों और स्लीपरों में बिना गौर किये भेद ही नहीं कर सकते । और न उन बुजुर्गों से कोई बहस है जो झूठे खुदा तो कायल हैं, लेकिन नीजी रूप से सचमुच के खुदा भी बने हुए हैं खैर सचमुच के खुदा तो वह क्या बनेंगे, पर अपनी बीबियों को उन्होंने पूजा का अभ्यस्त जरूर बना दिया है और बीबियों की यह बन्दना उनको सचमुच का खुदा बन जाने पर हमेशा उकसाया करती है।

पतियों की एक किस्म वह भी है, जिसके नजदीक बीवी एक ऐसे इन्सानी शक्ल का जानवर होती है जिसे पालने का आमतौर पतियों को शौक होता है। अब यह पतियों की इच्छा पर निर्भर है कि वह अपने इस पालतू जानवर के साथ प्रेम का व्यवहार करें, अपेक्षा का बर्ताव करें या सिर्फ नाम के पति बने बैठे रहें।

इन सबके अलावा पतियों की एक साधारण नस्ल जो हमारे यहां पायी जाती है वह यह है कि चूँकि इस नस्ल के सब पूर्वज अपने-अपने समय में पति गुजरे हैं, और यह वंश परम्परा चली आ रही है कि सब मर्दों की एक न एक औरत से शादी कर दी जाती है और वह उस औरत के पति कहलाते हैं, अतः इस खानदानी रीति के अनुसार वह भी शादी करके एक औरत के पति बन बैठते हैं और इससे ज्यादा उन बेचारों को कुछ पता नहीं रहता।

सारांश यह कि ऐसी-ऐसी हजारों किस्में हैं। बल्कि कहने वाले तो यहां तक कहते हैं कि सांपों और पतियों की किस्में गिनती में आ भी नहीं सकतीं। पर फैयाज साहब अपनी किस्म के पहले पति थे। न ऐसा पति सुना, न कभी देखा।

सूरत-शक्ल से बड़े ही शरीफ, हर मामले में सुलझे हुए, आवश्यकता के समय अत्यधिक गम्भीर, काम पड़ने पर बड़े दिलचस्प, हँसोड़ ऐसे कि हँसा-हँसा कर मार डालें, कभी शायरों की महफिलों की जान और कभी दूसरों की उलझनों के सामान ! संक्षेप में यह कि बनाने वाले ने आपको ऐसा गर्म मसाला बनाया था जिसमें बीसों चीजें मिली थीं ।

खैर, उनकी सब बातें तो मरसप कर सहन की जा सकती थीं, पर घरेलू मामलों में उनका प्रतिनिधित्व स्वीकार करना किसी व्यक्ति के बस में नहीं हो सकता जो अपनी बेगम के सिलसिले में अपनी पालिसी को स्वयं अपने हाथ में रखना चाहता हो ! और जिसका विश्वास यह हो कि हम मियाँ-बीबी के पारस्परिक सम्बन्धों पर किसी आलोचक को आलोचनात्मक दृष्टि डालने का इस लिए कोई अधिकार नहीं है कि मियाँ-बीबी के अपने सम्बन्ध हैं और बड़ी-बूढ़ियों के कथनानुसार मियाँ बीबी की बात में कोई दूसरा क्यों बोले ?"

मगर यह फैयाज साहब थे कि जरूर बोलते थे और बोलते ही नहीं थे बल्कि इस सिलसिले में उन्होंने हमारी नाक में दम कर रखा था !

भूमिका बाँधने की कोई जरूरत नहीं, और न तो इस बात में शर्म की जरूरत है ! बात वस्तुत: यह है कि हमारे विचार में एक शरीफ पति की पहिचान यही है कि वह अपनी बीबी से डरता रहे क्योंकि डरना वैसे भी शराफत की निशानी है !

खुदा का शरीफ बन्दा वह है जो खुदा से डरे । अफसर का शरीफ कर्मचारी वह है जो उससे डरे । बाप का सबसे अच्छा बेटा वह है जो बाप से डरे ! इसी प्रकार एक अच्छा पति वही है जो बीबी को डराने के बजाय बीबी से डरने का कायल हो ! कहने का तात्पर्य यही कि हम अपनी शराफत से मजबूर थे, पर फैयाज साहब ने हमारी इस शराफत के अजीब अजीब नाम रख छोड़े थे ! जोरू के गुलाम, बीबी का चमचा, पालतू पति, बेगम की बेगम—और न जाने क्या-क्या !

निदान् हमने भी एक दिन जल कर कहा—"आखिर आप के नजदीक शौहर को क्या होना चाहिये···?"

फैयाज साहब ने उपेक्षा से कहा—"शौहर कम से कम शौहर तो होना ही चाहिए ।"

हमने कहा —"वह तो मैं हूँ ही। मेरा मतलब यह है कि आप मुझे किस किस्म का शौहर देखना चाहते हैं ?"

फैयाज ने सम्हल कर बैठते हुए और अपने चेहरे पर लेक्चर देने के लक्षण पैदा करते हुए कहा—"जी नहीं ! आप को वहम हो गया है कि आप शौहर हैं। मैं आपको किस किस्म का शौहर देखना चाहता हूँ, यह सवाल तो आप कीजिये अपनी बेगम से ! अलबत्ता मैं आपको इन्सान देखना चाहता हूँ। लेकिन देख यह रहा हूँ कि आप की इन्सानियत को भी धीरे-धीरे मोर्चा लगता जा रहा है ! कम से कम आप पूरे इन्सान तो हैं ही नहीं। आपने बेगम को शौहर होने की बड़ी तेजी को अपने ऊपर इतना छा जाने दिया है कि अपना शौहर होना भूलकर आप बजाय शौहर के बीबी बनते जा रहे हैं ! न आपकी राय आजाद है, न आपकी बातें आजाद हैं और न आप खुद आजाद हैं, समझे जोरू के गुलाम......?"

हमने इस लेक्चर से घबरा कर कहा—"कैसी बेवकूफी की बातें कह रहे हो फैयाज ? क्या तुम इस मजे को सचमुच बिल्कुल महसूस नहीं करते कि एक औरत एक मर्द की जंजीर बन जाये !'

फैयाज ने शरारत से अथवा न जाने गम्भीरता से कहा जंजीर तक तो गनीमत थी, मगर वह तो आपके लिए लगाम बन गयी है ! सवाल यह है कि अपनी बेगम को मजिस्ट्रेट बनाकर कोई कैसे जिन्दगी बिता सकता है ?'

हमने कहा—"एक बार प्रयोग करके देखो ! बस अपने को भागी के सुपुर्द कर दो। फिर देखो, कितना सन्तोष मिलेगा ! न घर के किसी झगड़े से सरोकार, न नमक तेल, न लकड़ी की फिक्र और न किसी दूसरी बात का गम ? मैं तुमसे सच कहता हूँ कि मेरे मोजे और बनियाइनें तक सब बेगम ही खरीदती हैं। और मैं खुश होता हूँ कि वह किस प्यार से मेरे लिए हर चीज खरीद कर लाती हैं !'

फैयाज ने तुच्छता के साथ कहा—यह तो है, और इस बात का थोड़ा बहुत तजुर्बा मुझको भी है ! एक बार की बात है मैंने एक बहुत खूबसूरत जंजीर अपने कुत्ते के लिए खरीदी और जब वह जंजीर पहिन कर मैं उसे अपने साथ टहलाने ले गया तो वह बहुत खुश था और मैं भी !'

हमने कहा—"आपने अपने नजदीक बहुत बड़ा हमला किया है ! मगर मैं आपको संजीदगी के साथ सलाह देता हूँ कि एक बार अपने को सौंप कर देखो तो

तुम्हें पता चलेगा कि तुम्हारा घर जिसमें तुम्हारा दिल (मुझे मालूम है नहीं कि है या नहीं) नहीं लगता वह किस हद तक तुम्हारे लिये जन्नत बन जाता है !"

फैयाज ने मुंह बिचका कर कहा—'भई' खुदा बचाये ऐसे इस जन्नत से कि घर के अलावा सारी दुनिया ही बेकार होकर रह जाय ! हो सकता था कि मैं आपकी राय पर चलने की बेवकूफी कर गुजरता, लेकिन मेरे सामने सबक सीखने के लिए आपका नमूना जो मौजूद है !'

हमने कहा—"तो क्या आपके खयाल में मेरी जिन्दगी बहुत तकलीफदेह बीत रही है ?'

फैयाज ने इस भरोसे से कहा मानो जिन्दगी मेरी है, और जिता वह रहे हैं—'बिल्कुल ! इससे बढ़कर और क्या तकलीफ होगी कि आपको अपनी तक-लीफें महसूस नहीं होती ! दुनिया की सारी दिलचस्पियां अपनी जगह पर ठीक हैं, पर स्वभाव ने आपको उनसे महरूम (वंचित) कर रखा है। और फिर मजा यह है कि इस बात की भी आपको शिकायत नहीं बल्कि खैरियत यह है कि आप खुश हैं ?'

हमने कहा—"यह तर्क अगर बात को सजाने के लिए है तब तो खैर ठीक है, नहीं तो यह आपने कैसे समझ लिया कि मैं किसी दिलचस्पी में हिस्सा ही नहीं लेता ? जिस बात पर आप नाराज हुए हैं, यानी सिनेमा न जाने पर, इस बारे में आपको मालूम है कि मैं अक्सर सिनेमा जाता रहता हूं।"

फैयाज ने माथे पर हाथ रख कर कहा—"खैर' खैर ! मैंने भी दवा के तौर पर अक्सर अंगूर खाये हैं और उनमें भी अंगूरों का स्वाद महसूस किया ! आप सिनेमा गये भी तो किस तरह...बेगम के साथ ! दुनियाँ के किसी भी समझदार, खुश मिजाज और तमीजदार आदमी से पूछ लो कि साईस के साथ टहलने में घोड़े को कभी भी मजा आ सकता है ! वह घास पर लोटता भी है तो रस्सी साईस के हाथ में रहती है ! हाय, उसका क्या-क्या जी चाहता होगा सरपट भागने को, दुलत्ती उछालने को, उछलने को, इधर-उधर कूदने को ! पर साईस उसके गले में रस्सी बांध कर जिस वक्त उसे तफरीह करने की इजाजत देता है, उस वक्त वह ज्यादा से ज्यादा यही कर सकता है कि पूरे मौज से लोट लें ! क्या आपको

खयाल में घोड़े की यह तफरीह काफी है ? और अगर घोड़ा खुद कहे कि मैं इसी तरह खुश हूँ तो क्या आप मान लेंगे...?'

छड़ी घुमाते हुए फिर बोले—"हो सकता है आप इसी में सन्तुष्ट हो जायं, मगर एक घोड़े की इस बात पर कोई घोड़ा यकीन नहीं कर सकता ? मैं यह कैसे समझ लूं कि जिस तरह जनाब सिनेमा जाते हैं, या दूसरी तफरीहों में हिस्सा लेते हैं वही आपके लिये काफी है ? यह भी कोई तफरीह में तफरीह हुई कि साथ में साईस साहबा यानी बेगम हैं और आप बड़ी फरमाबरदारी से साथ-साथ चले जा रहे हैं। हाथ पर बेगम की शाल या चेस्टर डाले, चेहरे पर अर्दली होने का पूरा हाव-भाव पैदा किये हुए, बाअदब बामुलाहिजा होशियार के अंदाज से। न किसी से हंस सकते हैं, न बोल सकते हैं। अगर बोलना भी पड़ा तो नपी-तुली बातें कीं और भागते बने। खुदा के लिए मुझे बताया कि यह तफरीह है या बेगम की लगाम जिसे वह जब चाहें खींच कर रोक लें और जब जी चाहे जरा ढीली छोड़ दें।"

हमने कहा—'एक नुक्ते तुम ! अब सुनो, तुम इसको इसलिए पाबन्दी और लगाम बता रहे हो कि तुम्हारी समझदारी चोरों वाली है ! और मैंने इस पाबन्दी को अपनी आदत बना लिया है। इसलिए अब मुझे बेगम की मौजूदगी बिल्कुल नहीं खलती, बल्कि अगर वह साथ न हो तो एक कमी...जरूर महसूस होती है। मैं दर-असल इस जिन्दगी में इन बातों को बहुत पसन्द करता हूं जो बेगम के साथ होने से मजबूरन करनी पड़ती हैं।'

फैयाज़ ने त्योरियों पर बल डाल कर कहा—"क्या बनाते हो मुझे, मालूम है तुम जैसे जन्टिल-मैन हो। कहो तो कसम खाकर कह दूं कि तुम में वह सब शोखियां, वह सब तेज़ियाँ और सारी जिन्दा-दिलियां मौजूद हैं, जो एक नौजवान में होनी चाहिए। लेकिन तुम इन सब मांगों को कुचल कर रखते हो।'

हमने इस बहस से तंग आकर कहा—"खुदा के लिए अब मेरी जान बख्श दो ! मैं इन सब शोखियों सब तेजियों और हर बात को मानता हूं मगर..."

फैयाज ने बात काट कर कहा—"मगर बेगम की मौजूदगी में और उन्हीं के साथ ! डाक्टर इकबाल ने तो कभी कभी एकान्त की भी राय दी है, लेकिन जनाब इसके भी कायल नहीं हैं।'

फ़िर तो वह जिन्दगी भर सिर उठा ही नहीं सकता। उस समय भी दिल तो यह चाहता कि फैयाज़ के गले में बाहें डाल कर खूब रोये। मगर हमको विश्वास था कि हमारी इस बातचीत को भी सुना जा रहा होगा, इसलिए भलाई इसी में थी कि हमने फैयाज़ से इस प्रकार की बातें की। हमारा यह विचार देखिये किस हद तक ठीक निकला। हमको जो पर्चा भेज कर बाहर से बुलाया गया था उसका उद्देश्य इस बातचीत के विषय में हमारी पेशी थी।

अतएव हम जिस समय बेगम के सामने पहुँचे तो सरकार अपनी पूरी प्रफुल्लता के साथ मुस्करा रही थी। दिल को इतमीनान हो गया कि सब कुशल ही है। हमारे पहुँचते ही आपने मुस्करा कर पूछा—

"फैयाज साहब, क्या चले गये?"

हमने लापरवाही का अभिनय करते हुए कहा—"जी हाँ तशरीफ ले गये। मगर दिमाग की वह सारी नेकी जिसका ताल्लुक समझ बूझ से है, अपने साथ लेते गये हैं!"

बेगम ने हाथ पकड़ कर हमको अपने पास बैठने का सौभाग्य प्रदान करते हुए कहा—"आखिर आप अपने दोस्तों को मेरी वजह से क्यों नाराज़ किये हुए हैं...? "मैं तो कभी मना नहीं करती कि आप दोस्त-यारों में न जाएं?"

देखा आपने यह सफेद झूठ! पर इससे भी अधिक चमकीला झूठ देखिए कि हमने ज़रा बुरा मान कर कहा—"गोया दोस्त-यार मेरे लिये आप से बढ़ कर हैं? सुब्हानअल्लाह! वह तो यह चाहते हैं कि जिस तरह उन सबने एक एक बीबी लाकर घर में बन्द कर रखी है और खुद बाहर गुलछर्रे उड़ाते हैं, वही मैं भी करूँ?"

बेगम ने सनद प्रदान करने के अंदाज़ से फरमाया—"खैर गुलछर्रे तो आप उड़ा ही नहीं सकते। मगर मुझे तो हैरत है उन औरतों पर जो अपने शौहरों के इस बर्ताव पर भी खुश रहती हैं।"

हमने शब्दों को पूरे ज़ोर के साथ कहा—"खुश क्या खाक रहती हैं! बस यह कहिए कि जिन्दगी के दिन पूरे करती होंगी। खैर, आपको उन औरतों पर हैरत है मगर मुझे उन मर्दों पर ताज्जुब है कि बाहर के मनोरंजनों के वह कैसे

आदी हो गये हैं ? अब फैयाज ही को देख लीजिए, कोई भी उसे देख कर यह नहीं कह सकता है कि उसके घर पर भी एक बीबी बंधी हुई है।"

बेगम ने होशियारी से काम लेते हुए कहा—"बंधी हुई है, बहुत खूब कहा। मगर मैं तो चाहती हूँ कि फैयाज़ साहब की बीबी से मिल कर यह अन्दाज़ा करूँ कि वह किस किस्म की औरत है। फैयाज साहब को उससे जो दिलचस्पी नहीं है इस में कसूर किसका है, फैयाज साहब का या उनकी बेगम का।"

हमने कहा—"उस बेचारी का क्या कसूर होगा। आपको दरअसल मालूम नहीं कि यह मर्द औरतों पर कितनी ज्यादती करते हैं।"

बेगम ने फरमाया—"खैर, आप मुझे किसी तरह फैयाज साहब की बेगम से मिला दीजिए।"

हमने सहमते हुए कहा—"जब कहिए। बल्कि मैं तो यह चाहता हूँ कि आप मेरे यार दोस्तों की बीबियों से मेल बढ़ाइए, ताँकि आपको अन्दाजा हो सके कि आपकी बहिनों को हमारे भाइयों ने किस किस तरीके पर कैद कर रखा है।"

अब बेगम आखिर कब तक मन की बात मुँह पर न लाती। धीरे धीरे फैयाज के सम्बन्ध में खुलने लगी—"मगर यह फैयाज साहब मुझे अच्छा आदमी नजर नहीं आते और चाहते यह हैं कि जैसे वह खुद हैं उसी तरह सब हो जायें।"

यह बात जरा खतरनाक थी और इसका तात्पर्य यह था कि बहुत शीघ्र ही फैयाज को चोर-उचक्का और आवारा आदि कहकर हमको बिल्कुल मना कर दिया जायेगा कि उसकी बुरी संगत से बचें। और भविष्य में कभी उससे मिलते हुए न पाये जायें। अतः हमने दूरदर्शिता से काम लेकर अर्ज किया—

"सचमुच अजीब तबीयत पायी है। ताज्जुब तो यह होता है कि कमबख्त इतना बुरा नहीं है जितना बुरा अपने आप को साबित करता रहता है। आपको हैरत होगी कि ताश का कोई खेल नहीं जानता। गैर-औरतों से इस तरह शर्माता है। जैसे औरतें पराये मर्दों से शर्माती हैं। यूँ तो कैंची की तरह जबान चलती है, मगर किसी औरत से बात करेंगे तो मालूम होगा कि जन्म ही से हकले हैं।

जिस तरह कोई सूरज से आँख चार नहीं कर सकता यही हाल जनाब का औरतों के सिलसिले में है...!"

बेगम ने बात काट कर कहा—"फिर आखिर वह क्यों मरे जाते हैं? उनका दिल यह क्यों चाहता है कि दुनियाँ के सारे मर्द अपनी-अपनी बीबियों को तलाक देकर आजाद हो जायें !"

बेगम ने आखिर में अपने रंग पर आना शुरू कर ही दिया। इसलिए हमने बेगम की इस भड़कने वाली आग को दबाने का यत्न करते हुए कहा—

"अरे, नहीं-नहीं! तलाक-वलाक कुछ नहीं, यह उसका मतलब नहीं हो सकता।"

वह एकदम से जलकर बोलीं—"कैसे मतलब नहीं हो सकता? साफ यही मतलब था। मैं यह पूछती हूँ कि आखिर वह कौनसी ऐसी बातें हैं जो बीबियों से छुपा कर आप लोग करना चाहते हैं और बीबियों की वजह से ऐसे मजबूर हो गये हैं कि बीबियाँ मुसीबत बन गयी हैं। सिनेमा जाने के लिए मैं खुद आपसे कहती हूँ कि चलिए सिनेमा हो आएँ। पिकनिक, दोस्तों की दावतें, सैर-सपाटे सभी कुछ तो होता रहता है। हर बात का मैं खुद ख्याल रखती हूँ, मगर इस पर भी साहब नाम यह है कि बीबी से दबे हुए हैं, बीबी के कैदी हैं, बीबी बाँध के रखती है। आखिर यह रोना क्यों रोया जाता है......?"

जल्ल तू जलाल तू, साहबे कमाल तू, आई बला टाल तू......! तूफान शुरू हो चुका था! ऐसे तूफान का सामना हमारे जैसा मर्द कैसे कर सकता है, तोबा कीजिए। मगर हमको भी अजीब प्रयोग आते थे। तुरन्त गम्भीर रूप धारण करते हुई बेगम का हाथ प्रेम से पकड़ कर कहा—"तो क्या मैं भी दुनिया के दूसरे मर्दों की तरह हूँ, क्यों...?"

बेगम पर फौरन प्रभाव हुआ। एकदम मन्द पड़कर आवाज में गरज की बजाय खनक पैदा करके कहा—"अल्लाह न करे! मगर यह लोग तो यह चाहते हैं कि जैसे राक्षस यह खुद हैं वैसा ही सबको बना दें। इसीलिए तो मैं कहती हूँ कि फैयाज साहब की बीबी से मुझे फौरन मिला दीजिए। मैं उससे कहूँगी कि बहिन या तो अपने मर्दुए को आदमियों में बैठने के लायक बनाओ, इन्सानियत सिखाओ नहीं तो बांध कर रखो!"

हमने हँसते हुए कहा—"हाँ, यह दूसरों के शौहरों को जंगली बनाता फिरता है। तुम इतमीनान रखो, मैं मिसेज फैयाज से मिलने की तरकीब करता हूँ। मुझे तो खुद हैरत है कि वह किस किस्म की औरत हैं। सुना है कि अच्छी खासी पढ़ी-लिखी हैं। फैयाज साहब ने रोमाँस के बाद उनसे शादी की है। शुरू शुरू में तो फैयाज साहब जमीन पर पाँव ही न धरते थे। इस जोर से बीबी की खूबियां बताते थे कि हम सबको उनकी बेगम से उलफत-सी होने लगी थी। या तो वह लाग-लगाव था या अब यह शुष्कता है!"

बेगम ने मुँह बना कर कहा—"तोते, बिल्कुल तोते! यह मर्द सब के सब तोते हैं। ऐसी आँखें फेरते हैं कि......"

हमने बात काट कर कहा—"कि बस कुछ न पूछो!" और बेगम को अनायास हँसी आ गयी।

३

घर में तो मिसेज फैयाज और बेगम सिर जोड़कर कुछ सलाहें कर रही थीं और बाहर हम फैयाज से सिर खपा रहे थे। फैयाज इस समय भी बेगम के प्रति हमारी गुलामी का रोना निरंतर रो रहा था और हम खुश थे कि बेगम इसके हक में जरूर ऐसे कांटे बो रही होंगी कि यह भी क्या याद रखेगा।

इसमें संदेह नहीं कि फैयाज पचहत्तर प्रतिशत ठीक था और इसका कारण यह था कि खुदा ने उसको शरीफ किस्म का पति नहीं बनाया था और हमको इस खूबी से मालामाल करके कहीं का न रखा था। हम और वह दोनों अपने नियमों में अंजाम को पहुँचे हुए थे। वह अपनी बीवी पर धाक जमा कर ऐसा दृढ़ किस्म का दलेर पति बन चुका था कि पारिवारिक मामलों में उससे किसी अच्छाई की आशा ही व्यर्थ थी और यहाँ यह हालत थी कि बेगम के सामने विनम्रता से सिर इस कोण तक झुक चुका था जहाँ से विद्रोह की सब सम्भावनायें विदा हो जाती हैं। फैयाज की बीबी फैयाज का शासन स्वीकार करके शान्त हो चुकी थीं और हम अपने यहाँ अपनी मिट्टी ऐसी पलीद कर चुके थे कि अब यदि अपनी बेगम पर रोब जमाने की कोशिश भी करें तो बेगम को हमारे इस अभिनय पर जरूर हँसी आ जायेगी।

लेकिन यह बात सत्य है कि फैयाज़ के कथनानुसार अभी तक उमंगे जिन्दा थीं और मन यह चाहता था कि जीवन के कुछ क्षण बेगम की अधीनता रहित अपने निजी भी हों। मगर इन क्षणों के लिए या तो अब चोरी की जाये, झूठ बोला जाये, बातें गुप्त रखी जायें। कहीं तो बेगम के होठों पर मुस्कान की लहर के बजाय आंखों में शोले, भौंवों में भूकम्प, श्वासों में ज्वार भाटे आदि सहन किये जायें। इसलिए सरल उपाय यही था कि विद्रोह की अपेक्षा थोड़ा बहुत लफंगापन धारण किया जाये।

लम्बे अरसे से ताश की सूरत भी न देखी थी, बरबस जी चाहता था कि रमी की महफिल जमायी जाये। दिल खोल कर बाजियाँ लगे और ज़रा अच्छी-खासी रकम की हार-जीत हो। इसके लिए आज से अच्छा अवसर भी और कौन-सा हो सकता था। फैयाज़ की बीबी हमारे घर आयी हुई थीं और हम एक तरह से छुट्टी पर ही थे। मगर हारने के लिए रकम कहाँ से आये? देर तक विभिन्न युक्तियों पर ग़ौर करते रहे। आखिर फैयाज़ ने ज़ोर देकर कहा—

"कोई फैसला आखिर करोगे भी, जब सब यार-दोस्त अपने-अपने घर से निकल गये तो फिर कहाँ उनको ढूँढ़ा जायेगा......?"

हमने कहा—"भई, ज़रा दम तो लो। चलना तो खैर है ही है पर सवाल यह है कि रुपये का इन्तज़ाम कैसे किया जाये।"

फैयाज़ ने हैरानी से हमारा मुँह देखते हुए कहा—"क्या मतलब? यानी साल सवा साल के बाद खेलने के लिए भी आपके पास रुपये नहीं हैं? मैं पूछता हूँ कि आखिर तुम इतने मनहूस क्यों होते जा रहे हो तुम तो रोज़ के खेलने वाले थे और क्लब के कुछ माने हुए हारने वालों में तुम्हारा नाम हमेशा सुनहरे हरफों से लिखा रहा है। मगर मैंने तो तुम्हारे मुँह से कभी रुपये के इन्तजाम के बारे में नहीं सुना।"

हमने कहा—"वह तो ठीक है। लेकिन यह बात तब की है जब शादी नहीं हुई थी। अब तो रुपया बेगम से माँगना पड़ेगा, इसलिए यह बताओ कि क्या कहकर माँगा जाये...?"

फैयाज़ ने अपने साधारण स्वर में कहा—"कह दो जाकर कि ताश खेलना है।"

हमने होंठों पर ऊँगली रख कर कहा—"खुदा के लिये ज़रा धीरे बोलो, नहीं तो बना बनाया खेल बिगड़ कर रह जायगा। तुम लाख कहो, पर मुझसे इतना बड़ा सच न बोला जायगा!"

फैयाज़ ने अवज्ञा से कहा—"लानत है इस जिन्दगी पर! समझ में नहीं आता कि जनाब ने कालेपानी जाने की बजाय शादी करना क्यों पसन्द फरमाया?"

हमने अपनी बेबसी का स्वंय मज़ाक उड़ाते हुए कहा—"जब घर बैठे बिठाये जन्म भर कैद मिल जाये तो कालेपानी की क्या ज़रुरत है? बहरहाल, अब जल्दी ही कोई तरकीब बताओ!"

फैयाज ने बिना ग़ौर किये हुए कहा—"ऊँ हूँ हज़ार तरकीब हैं, जाकर कह दो कि कालिज में जलसा है और सब ओल्ड-ब्वायज़ को खास तौर पर बुलाया गया है, शायद चन्दा भी देना पड़ेगा इसीलिए सौ रुपये से कम में जान न छूटेगी।"

हमने फैयाज़ की इस अपराधी मनोवृत्ति की मन ही मन में सराहना की और इसी युक्ति को तनिक और सुन्दर बना कर जनाने घर की ओर चल दिये। बेग़म को नौकरानी से बुलवा कर कहा—"मैं जरा कालिज तक जा रहा हूँ।"

बेग़म ने बात पूरी भी न होने दी और झट से कहा—"कितनी देर में लौट आयेंगे?"

हमने ऐसे ही कह दिया—"उम्मीद है चाय के वक्त तक आ जाऊंगा। कालिज में आज ओल्डब्वायज़ डे है और स्कीम यह है कि कालिज के कम्पाउँड ही में ओल्ड-ब्वायज़ की तरफ से एक ऐसा बोर्डिंग बना दिया जाये जिसमें ग़रीब लड़के रह सकें। मुझे खास तौर पर बुलाया गया है और शायद चन्दा भी देना पड़ेगा। पर मैं इस वक्त तो सौ रुपये से ज्यादा न दूँगा!"

बेग़म ने कहा—"हाँ, हाँ। जो ठीक समझिये कीजिएगा?"

हमने जल्दी से कहा—"मेरा मतलब यह था कि चन्दा तो देना ही पड़ेगा?"

बेग़म ने कहा—"तो चेक-बुक लाऊँ या आप नाम लिखवा दीजिएगा। रकम बाद में जाती रहेगी।"

अब बताइये, ऐसे अवसर पर क्या कहा जाये? मगर वाह री रही-सही समझदारी। हमने तुरन्त कहा—"न, न। मैं तो यह करूँगा कि सौ रुपये का

पर्स फौरन पेश करूँगा। नकद देने का असर यह पड़ता है कि दूसरे भी नकद ही देना शुरु कर देते हैं। यह तो भेड़ चाल है न ?'

बेगम ने कृपा करके फरमाया—"मैं सौ रुपये लाये देती हूँ। अच्छा यह तो बताइये कि फैयाज साहब यहीं रहेंगे ?"

हमने कहा—"मालूम नहीं मुझे। मगर शायद वह भी जायेंगे, क्योंकि कालिज तो उनको भी जाना होगा।"

बेगम ने जाते हुए कहा—"अच्छा, आप ठहर जाइये, मैं रुपया निकाल लाऊँ।"

हम अपनी सफलता पर तो खुश थे, लेकिन आत्मा निरन्तर धिक्कार रही थी। हमने आत्मा को लारियाँ देकर सुलाने का प्रयास करते हुए न जाने क्या गुनगुनाना शुरु कर दिया कि इतने में बेगम ने सौ रुपये देते हुए कहा—'मिसेज़ फैयाज को तो खबर भी नहीं कि आज ओल्ड-ब्लायज डे है।"

हमने कहा—"आपने भी क्या बात कही है। गोया फैयाज़ भी अपनी बेगम को हमारी तरह अपना प्रोग्राम बताते ही तो होंगे ?'

बेगम ने कहा—"मिसेज़ फैयाज़ तो सचमुच मदद के लायक हैं। मैंने उससे सब हालात मालूम कर लिये हैं और आप को भी इस मामले में पड़ना पड़ेगा। फैयाज़ साहब की अब यह सब ज्यादतियाँ खत्म होनी चाहिए। उनको तो दर असल बीबी से कोई मतलब ही नहीं रहा है। खैर, आप कालिज से हो आयें, फिर इतमीनान से बातें होंगी।"

बेगम तो उधर गयी और इधर हम फैयाज़ को लेकर चल दिये अपने मनोरंजन की खोज में। यह निश्चित हुआ कि सीधे क्लब चलें ? छुट्टी का दिन है इसलिए अधिकतर मित्रगण वहीं मिल जायेंगे।

अतएव जिस समय हम क्लब पहुंचे तो लगभग सभी वहाँ जमा थे। हमको देखते ही सबने आकर घेर लिया और लगे अपनी-अपनी बोलियाँ बोलने।

रमेश ने सिर से पांव तक देखते हुए कहा—"अरे। यह तो सचमुच अभी तक कुछ जिन्दा ही मालूम होता है।"

इखिलाक ने कहा—"छोड़ तो नहीं दिया अपनी बेगम को जो यहाँ नजर आ रहे हो ?"

मसऊद ने दूर ही से नारा लगा दिया—"आहा, यानी आप...।"

टण्डन ने अपने विशेष गम्भीर अंदाज़ से कहा—"जनाब? हमारा कबूतर छै माह के बाद एक दिन उड़कर हमारे यहां आ गया था।"

फैयाज़ ने हंसते हुए कहा—"दावत दीजिए मुझको कि इसको यहां तक हांक कर लाया हूँ और ज़मानत के तौर पर अपनी बीबी को वहां छोड़ा है।"

इखिलाक ने हमको इन सब की भीड़ से अलग ले जाकर अपने पास बिठाते हुए कानाफूसी जैसे अंदाज से कहा—"क्या सचमुच यह खबर ठीक है कि हमारी भाभी हर वक्त पहरा दिया करती हैं। आखिर यह आप ईद के चांद क्यों हो गये हैं?"

हम भी आखिर कब तक चुप रहते। हमने भी अत्यंत गम्भीरता से कहा—"भई, बात यह है कि तुम हो अभी कुँआरे। तुम्हारी समझ में यह बातें नहीं आ सकती।"

इखिलाक ने कहा—"यह गलत है। आपको मालूम होना चाहिए कि क्लब ने एकमत हो कर यह रेज़ुलेशन पास किया है कि सब मिल कर आपकी बेगम के पास जायेंगे और उनसे अपील करेंगे कि वह आपको सिर्फ अपना शौहर समझें, लावारिस जायदाद समझ कर मालिक न बनें। वरना क्लब के सब मेम्बर सत्याग्रह शुरु कर देंगे।"

इतनी देर में शेष लोग भी आ चुके थे। रमेश ने कहा—"मेरी राय तो यह है कि सज्जनता के इस बर्ताव के बजाय हमी लोग इन हज़रत को अब जाने ही न दें। भाभी को बिदायी का दावा करने दें।"

इस विदायी के दावे पर एक जोरदार कहकहा पड़ा।

मसऊद ने अपनी आवाज़ को इस शोर में से गूंजा कर कहा—"भाभी बेचारी का तो सिर्फ इतना ही कसूर है कि वह एक दब्बैल किस्म के शौहर की बेगम बन गयी हैं। मगर इन हज़रत ने तो सचमुच मर्दों की नाक कटवा रखी है, उनकी लुटिया डुबो रखी है। ऐसे ज़माने में ऐसा शौहर चिराग लेकर ढूँढ़ने से भी न मिलेगा कि बीबी क्या मिली, खुद ही खो गये। सज़ा तो इनको ही देनी चाहिए।"

टंडन ने तुरन्त कहा—"और सज़ा भी ऐसी कि बाकी सब होने वाले

पति शिक्षा ग्रहण कर सकें। जिस तरह अगले ज़माने में चौराहों पर फाँसियाँ दी जाती थी। इनके लिए भी कुछ इसी तरह की सज़ा सोचनी चाहिए।"

इखिलाक ने सब को चुप कराकर कहा—"यह कुछ नहीं! इन हज़रत से पूछना यह है कि यह सीधी तरह क्लब की हाज़िरी को अपने जरूरी फर्जों में समझते हुए तैयार हैं या फिर लोग इस सिलसिले में कुछ करें!"

रमेश ने कहा—"आप इनसे समझौते की आशा रखते हैं, हालाँकि इनकी हालत अब तो इन सब मंज़िलों से गुज़र चुकी है। मेरे विचार में तो इस मामले में कोई कदम उठा कर हमें अपना प्रोग्राम शुरू कर देना चाहिए!"

इखिलाक ने बड़े सोच विचार के बाद अपनी योजना सब के सामने पेश करते हुए कहा—"मेरी स्कीम में इन मियाँ-बीबी के घरेलू रिश्ते की उमर बहुत कम रह गयी है। होगा यह कि पहले तो पन्द्रह दिन तक चुपचाप छुपी-छिपी लड़ाई होगी। ठंडी और लम्बी साँसों का सिलसिला जारी होगा। आँखों में शिकायतें बढ़ती जायेंगी। दम घुटा हुआ और दिल टूटा हुआ महसूस होगा। इसके बाद फिर एक दिन आमने-सामने की ठहरेगी। सब्र का पैमाना छलक जायेगा, कसमों के एतबार उठ जायेंगे और इसके सवा महीने के बाद बक्स घसीटे जायेंगे, बिस्तर बांधे जायेंगे और दरवाजे पर एक परदे वाला टांगा खड़ा होगा। आपके घर की चहल-पहल यानी बेगम जाने को तैयार हो जायेंगी। टांगा चला जायेगा और फिर आप क्लब आने-जाने के लिए आज़ाद! फिर दो महीने के बाद उधर से मुकदमेबाज़ी की धमकी दी जायेगी और इधर से दर्शन करने के लिए खुशामदें की जायेंगी, मगर बेकार? क्योंकि इस अरसे में कुछ और सबूत आपकी बदमाशी के उन्हें मिल चुके होंगे! आखिर छठे महीने से पहले ही आप हम सबसे सलाह करेंगे कि तलाक देने का कानूनी ढंग क्या है! यह है हमारी स्कीम, जिस पर आपको चलना होगा, समझे मियाँ!"

कम्बख्त ने ऐसा भयानक रेखा-चित्र पेश किया था कि आखिर हमने कानों पर हाथ रख लिये और हाथ जोड़कर कहा—"खुदा के लिए, मेरे हाल पर रहम करो! मैं वायदा करता हूँ कि क्लब में हर रोज़ आऊँगा!"

इखिलाक ने कहा—"यह गलत है! इस किस्म के वायदे हमको राज़ी नहीं कर सकते, समझे मियाँ! अगर इस सिलसिले में आपकी नीयत सचमुच साफ

है तो लीजिए यह कागज़ है, यह कलम है और यह दवात एक इकरार नामा लिखकर दीजिए जो हमारे पास रहेगा और जब कभी आपने इसके खिलाफ चलने की कोशिश की तो हमारी तरफ से आपकी बेगम की अदालत ही में मुकदमा दायर होगा और आपको सजा दिलवाने के लिए आपका लिखा हुआ यही इकरार नामा काफी होगा, समझे मियाँ !'

हमने कहा—''लाइये, लिख देता हूँ, जबरदस्ती का यह इकरार नामा !'

मसऊद ने कहा—'जबरदस्ती का हरगिज नहीं, चर्चा न दो ! हम लोग बेवकूफ जरूर हैं मगर इतने नहीं कि आप हमारी बेवकूफी से फायदा उठा सकें। बेगम से घर जा कर कह देंगे कि दोस्तों ने यह मजाक किया है और हम से इस तरह का एक इकरार नामा लिखवा लिया है। आप तो एक प्राइवेट खत लिखिये जिसमें अपनी बेगम के जुल्मों का बयान कीजिए और इन जुल्मों से छुटकारा पाने की तरकीब पूछिये !'

इखिलाक ने कहा—'मैं मजमून तैयार किये देता हूँ। आप उसी की नकल कर दीजिए, समझे मियाँ !'

यह कहकर उन सबने सिर जोड़ कर एक ऐसा मजमून तैयार किया कि अगर सचमुच इसे कहीं बेगम पढ़ लेतीं तो उनका दिल चूर-चूर हो कर रह जाता !

हमने लाख चाहा कि इसमें कुछ संशोधन करायें, इसके शब्दों को कुछ नर्मी मगर हमारी एक न सुनी गयी। वहाँ तो तलवार की धार की तरह यही तकाज़ा था कि बस हस्ताक्षर कर दो। अतः इस मजमून की नकल करके उसके नीचे अपने हस्ताक्षर करके अपने को इन शैतानों के सुपुर्द करते ही बन पड़ा !

इस सारी कारवाई के बाद इन लोगोंको चैन आया और अब बड़ी मुश्किल से खेल शुरू हो सका। हमारी अनुपस्थिति में तो यहाँ फ्लाश, कटो, ब्रिज और न जाने क्या क्या खेल होते रहे थे, पर आज सब ने हमारे कारण से रमी को प्रोत्साहन दिया। क्योंकि ताश के सब खेलों में हमारा सबसे प्रिय खेल यही है !

खेल होता रहा, कभी जीते कभी हारे ! आखिर जब हमने चाय के समय के करीब जाने की आज्ञा चाही और फैयाज़ ने भी हमारा समर्थन किया तो हम साठ रुपये जीत पर थे। फैयाज़ के परामर्शानुसार हमने यह सारी रकम

यानी मूल और जीत की रक़म क्लब ही में जमा करा दी, ताँकि फिर कालिज के किसी और बोर्डिङ्ग हाउस के लिए बेगम से चन्दा माँगने को आवश्यकता न पड़े।

०

४

झूठ और चोरी की यह यह रीति है कि अगर एक बार यह भूलें किसीसे हो जायें तो उसके बाद उनको गुप्त रखने के लिए लाखों झूठ गढ़ जाते हैं और सैंकड़ों दूसरी चोरियाँ करनी पड़ती हैं। अगर पहले ही दिन हमने ज़रा साहस से काम लेकर बेगम से कह दिया होता कि चाहे तुम जानसे मार डालो, पर हमको ताश खेलने का शौक़ है और क्लब में इसी शौक़ को पूरा करने के लिए क्लब जाने पर मजबूर हूँ, तो उसी दिन और उसी समय जो कुछ होने वाला था हो जाता।

स्पष्ट है कि वह आसानी से अपने पति का जुआरी होना सहन न करती इसलिए कुछ अपने भाग्य पर आँसू बहाती, अपने को पीड़ित प्रकट करने के लिए एक-आध ठंडी साँसें भरती। सम्भव था कि भूख हड़ताल तक की नौबत पहुँच जाती। फूली-सूजी रहती, मगर अन्त में धीरे-धीरे अपने आप ढंग पर आ जाती और हमारी एक वीरतापूर्ण सच्चाई सदा के झूठ और निरंतर की चोरियों से तो बचा देती लेकिन बहुत सी बातें केवल लिखो और कही जाती हैं, क्रियात्मक-रूप में कभी नहीं आ सकती।

सुना है कि बहुत से पति ऐसे भी पाये गये हैं, जो इस प्रकार के भयंकर सच बोलते हैं और उन सब स्थितियों का सामना कर गुज़रते हैं, जिनकी कल्पना होने से एक नार्मल किस्म के पति को कँपकपी शुरू हो जाती है।

बहरहाल, हम स्वीकार करते हैं कि न हम यह सच बोल सके और न भविष्य के लिए यह साहस पाते हैं। कहिये तो आग के दरिया को कूद कर पार

कर जायें, तोप के मुकाबले पर डट आयें या इसी किस्म की जान की बाजी के किसी भी युद्ध-क्षेत्र में भेज दीजिए। क्या मजाल जो कदम जरा भी डगमगा जायें। मगर बेगम के सामने सच बोलने के लिए जिस साहस की आवश्यकता है, उससे हम जरा मजबूर हैं।

जानते हैं कि चोर हो कर रह गये हैं। समझते हैं कि झूठ बोल रहे हैं। अनुभव करते हैं कि यह कमजोरियाँ हमें और भी कायर बना रही हैं। बेचारी आत्मा ने बराबर धिक्कारा। पहले तो उसकी आवाज बराबर सुनते थे। फिर दूसरे तीसरे सुनने लगे। धीरे धीरे यह आवाज हफ्ते-हफ्ते आने लगी और और अब तो मालूम भी नहीं कि बेचारी आत्मा जिन्दा भी है या अल्लाह को प्यारी हो गयी! लेकिन बेगम को अब तक पता नहीं है कि उनका यह आज्ञाकारी पति, अब कितना झूठा और कैसा खतरनाक चोर हो कर रह गया है!

कभी दफ्तर में किसी बड़े आफिसर के निरीक्षण के कारण ज्यादा समय देना पड़ा है। कभी किसी साहब की लड़ाई की व्यवस्था में लगे रहने का बहाना लगाना पड़ता है, कभी दौरे पर जाना पड़ जाता है। साँराश यह कि क्लब जाने के लिए तो किसी न किसी तरह समय निकालना ही पड़ता है। गालबत्ता अब बेगम को यह चिन्ता जरूर है कि इतनी व्यस्तता में कहीं स्वास्थ्य पर बुरा असर न पड़ जाय!

समझे यह थे कि कुछ दिन तक ही वह देर सबेर के विषय में पूछ-ताछ का क्रम जारी रखेंगी इसके बाद धीरे-धीरे अभ्यस्त हो जायेंगी और शायद यह पूछ-ताछ बन्द कर देंगी। मगर बेगम यह जवाब माँगने में कभी नहीं चूकती कि—'और आज क्या काम पड़ गया था जो आधी रात हो गयी...?' इसमें संदेह नहीं कि बहाने बाजियों ने हमें अच्छा खासा कहानीकार बना दिया है! जहाँ उन्होंने सवाल किया तुरन्त एक बहाना गढ़ कर सुना दिया जाता!

कल रात ही की बात है कि क्लब में रमी की ऐसी महफिल जमी कि दोस्तों ने यह कह कह कर कि 'बस यह आखिरी रमी है...इसके बाद खेल खत्म!' रात के साढ़े बारह बजा दिये!

जब घर पहुँचे तो देखा कि सरहाने टेबिल लैम्प जल रहा और कोई

किताब पढ़ी जा रही थी। हमारे पहुँचते ही हमारी सुनने की शक्ति पर बिजली गिरा कर बोली—"माशाअल्लाह, माशाअल्लाह! जरा घड़ी देख लीजिए!"

हमने शेरवानी एक ओर उछालते हुए कहा—"आपको अपनी पड़ी है, यहाँ जिन्दगी से तंग आ चुके हैं। जोड़-जोड़ फोड़े की तरह दुःख रहा है!"

लाख कुछ सही, फिर भी आखिर बेगम हैं! तुरन्त सहानुभूति शुरू कर दी—"कोल्हू के बैल की तरह जुते ही तो रहते हैं काम में! मैं तो दो महीने से यही नक्शा देख रही हूँ कि घर पर सूरत ही दिखाई नहीं देती। रोज कोई न कोई काम निकल आता है, आखिर आज इतनी देर क्यों हो गयी?"

हमने थकी हुई आवाज में कहा—"आदमी थोड़े ही समझते हैं यह लोग, जानवर समझ रखा है जानवर! दफ्तर का काम खत्म करके आ ही रहा था कि डायरेक्टर साहब का तार मिला। घर आने की बजाय स्टेशन जाना पड़ा। गाड़ी दो घंटे लेट थी, वहीं जैसी भी मिली चाय पी ली और भरते रहे प्लेट-फार्म पर। खुदा-खुदा करके कहीं गाड़ी आई तो अब गोया उन हजरत की अरदली में आ गये। उनके साथ दफ्तर आये। बड़ी देर फाइलों से सिर खपाते रहे। इसके बाद उनके साथ सिनेमा जाना पड़ा! अंग्रेजी फिल्मों से यूँ ही उलझन रहती है। आधी रात तक वहीं आँखें फोड़ी!"

बेगम ने कहा—"इन डायरेक्टर साहब ने तो अच्छा घर देख लिया है। अभी छै-सात दिन हुए जब आ चुके थे!"

सचमुच एक हफ्ता पहले भी हम यही बहाना कर चुके थे। बात यह है कि क्लब जाना तो ठहरा रोज का और बहाने ठहरे इने गिने! इसलिए हर रोज नया बहाना मुश्किल ही से मिलता है! मगर हमने बिना घबराये तुरन्त कहा—'कौन वह? लेकिन वह तो दूसरे डायरेक्टर थे। यही तो मुसीबत है इस महकमे में! कर्मचारी तो हम कुछ ही हैं बाकी अफसरों और साहबों की कोई गिनती ही नहीं! तीन चार तो डायरेक्टर ही हैं। एक मुआयना (निरीक्षण) करने आता है तो उसकी ज़िद में दूसरा जरूर आता है! पिछले हफ्ते मझले डायरेक्टर साहब आये थे!'

बेगम ने हँस कर कहा—"अच्छा! अब डायरेक्टर भी बड़े, मंझले संझले और छोटे होने लगे!

हमने विश्वास दिलाने के लिए कहा—'आप तो सिर्फ यही कह रही हैं। हमारे यहां तो डायरेक्टर सगे और सौतेले तक होते हैं। फिर दो तरह के डायरेक्टर और भी हैं यानी चचेरे डायरेक्टर और मौसेरे डायरेक्टर !'

बेग़म ने मज़ाक समझ कर कहा—"अच्छा, अब रहने भी दीजिए! चले हैं मुझे बनाने।"

हमने गम्भीरता से कहा—'यक़ीन तो माना कीजिए! बात यह है कि खुद हमारे महकमे के चार डायरेक्टर हैं। वह अपने ओहदे के हिसाब से बड़े, मंझले संझले और छोटे डायरेक्टर कहलाते हैं। अब चूंकि जंगल का भी थोड़ा बहुत इस महकमे से ताल्लुक है इसलिए नहर के रिश्ते उस डायरेक्टर को मौसेरा डायरेक्टर कहा जाता है। इन्कमटैक्स वाले डायरेक्टर को हम लोग सौतेला डायरेक्टर कहते हैं। और इस तरह हमारी हाल यह है कि—

'आसमाँ गर्दिश में हैं हमको मिटाने के लिए,
चक्कियाँ भी चल रही हैं एक दाने के लिए!'

बेग़म ने कदाचित् हम पर तरस खा कर या स्वयं उलझ कर कहा—"अच्छा! खैर होंगे डायरेक्टर, खाना मंगवाऊँ या उसका भी इरादा नहीं?"

ताश के खेल में और विशेषतः क्लब में जो खेल हों वहाँ मुँह तो बराबर ही चलता रहता है ताकि दिमाग़ पर पेट के खाली होने से असर न होने पाये। वहाँ खाना खाने की गुंजायश ही कहाँ थी? इसलिए हमने अपनी जान से तँग होने की एक्टिंग करते हुए कहा—"इस वक्त तो बस सोने दीजिए! बिल्कुल चुपचाप लेट कर सोने को दिल चाह रहा है!"

चुपचाप लेटने की सचमुच आवश्यकता थी, ताँकि कल के लिये कोई नया बहाना सोच सकें और फिर सो भी सकें।

बेग़म ने चिन्तित होते हुए कहा—"यही तो देख रही हूं, कि मेहनत तो है ऐसी और सेहत हमेशा से लाजवाब है; कि दिन भर के थके हारे और मुँह लपेट कर पड़ गये!"

थके हुए तो थे ही, मगर आज सचमुच हारे भी खूब थे। क्लब में जितना रुपया जमा था वह सारा और इसके अलावा कुछ और भी हार चुके थे। अब

सिफ क्लब जाना ही नहीं था बल्कि रुपये का भी प्रबन्ध करना था और इसके लिए लेट कर कुछ जोरदार तरकीब सोचनी थी। लेकिन बेगम की सहानुभूतियाँ खत्म हो न होती थीं।

आखिर हमने अत्यन्त गमगीनी के साथ —"मैं खुद ही तंग आ चुका हूँ इस नौकरी से। इस कदर मेहनत, दिमागी उलझनें, न खाने का होश न पीने का होश। फिर बहुत सी परेशानियाँ ऐसी भी तो होती हैं जो मैं आपको बताना नहीं चाहता।"

बेगम ने हमारे अभिप्राय के ठीक अनुसार तड़प कर कहा —"मुझे पहले ही शक था कि आजकल आप कुछ दिमागी उलझनों में हैं। न घर की किसी बात से दिलचस्पी है और काम हो या न हो, मगर वैसे भी आपकी तबीयत घर से कुछ उचाट-सी गयी है। यह बात तो आप आप ने नयी सीखी है कि मुझ से भी अपनी परेशानियाँ छुपायें। आखिर आप अपने मन की बात मुझसे न कहेंगे तो किससे कहेंगे? आज मालूम नहीं कैसे आपके मुंह से इतनी बात निकल गयी। अब तो मैं पूछ कर ही रहूंगी कि आखिर बात क्या है? आपको मेरी ही कसम है जो मुझसे कुछ छुपाओ।"

अपना मतलब तो पूरा हो चुका था, पर आत्मा ने आज फिर हस्तक्षेप शुरु कर दिया। एक आवाज सी आई कि—'ओ कमबख्त! देख इस मासूम बेगम को जो तेरे लिए कितनी बेचैन है। और तू है कि इसको धोखा देना चाहता है!'

अतः आत्मा के बहकावे में आकर कहने ही वाले थे कि बेगम यह सब झूठा अभिनय है और सच यह है हम बड़े धूर्त हजरत हैं। लेकिन फिर उसी समय विचार आया कि सदा के लिए अपना एतबार उठाना हो तो इस समय अपराध स्वीकार कर लो। अतएव हमने आत्मा को अनुचित हस्तक्षेप के सिलसिले में डाँट-डपट कर के बहुत ही दर्द भरे स्वर में बेगम से कहा—"मैं खुद परेशान रह सकता हूँ, मगर मुझ से यह नहीं हो सकता कि आपको परेशान देखूँ। मर्द तो परेशानियों का सामना करने के लिए ही बनाये गये हैं पर आपका तो यह काम नहीं!"

बेगम ने बड़े प्रेम से हमारा हाथ पकड़ कर कहा—"आप कैसी बातें कर

रहे हैं ? आप अगर परेशान रहेंगे तो क्या आपको यह यकीन है कि मैं खुश रह सकूँगी ? कभी नहीं ! अलबत्ता अगर आपकी परेशानियाँ मेरी वजह से दूर हो सकें या कम से कम हलकी हो गयीं तो मैं अपने को खुशनसीब समझूँगी। अच्छा, खैर अब मैं आपको कसम दे चुका हूँ और अब आपको बताना ही पड़ेगा कि क्या बात है......?"

हमने कहा—'बात बताने वाली तो नहीं है, मगर मुसीबत तो यह है कि आप बात-बात पर कसम दे देती हैं। इसलिए अब तो झख मार कर कहनी ही पड़ेगी। बात दर-असल यह है कि हमारे वह डाक्टर साहब जो पिछले महीने मरे थे, उन्होंने कोआपरेटिव सोसायटी से कर्ज लिया था और उनके दो जामिनों में से एक मैं भी हूँ जिसने ज़मानत दी थी और जिन्दा भी हूँ। इसलिए अब कानूनन जितनी किश्ते वह चुका कर मरे हैं उनके बाद जो रुपया बाकी रह गया है उसका जिम्मेदार मैं और एक दूसरे साहब जिन्होंने जमानत दी थी वह हैं। इस तरह मेरे हिस्से में एक हजार रुपया आता है जो मुझे दो दो सौ रुपयों के पाँच किश्तों में चुकाना चाहिये।"

बेगम ने बड़ी उदारता के साथ कहा—'तो इतनी सी बात के लिए आप अपने को उलझनों में डाले हुए हैं। आखिर बैंक में जो रुपया मेरे नाम से जमा है, वह किस दिन के लिए है ? बल्कि मैं तो यह कहती हूँ कि किश्तों-किश्तों का झगड़ा ही फजूल है। पूरा एक हजार बैंक से निकलवा कर दे दीजिए। मैं इस रुपये से ज्यादा इस बात से खुश हूँगी कि जो रुपया जमा है उसका एक हिस्सा आपके काम आ सका।"

हमने मुँह माँगी मुराद पाने के बाद कहा—'रुपया कैसे देंगे ! अभी तो हमको केस लड़ना है कि आखिर यह रुपया उनके रिश्तेदारों से क्यों न वसूल किया जाये। सुना है कि उनका कोई मकान भी कहीं है जो उनके लड़के को मिला है। असल में इस कर्ज का भार उस मकान पर ही होना चाहिये ! अब इस काम के लिए जरूरत है कि वकील किया जाये और सवा सौ रुपया फौरन खर्च किया जाये ! उम्मीद है कि हमारा यह उज्र मान लिया जायेगा।"

बेगम ने हमारे बालों से खेलते हुए कहा—"हाँ हाँ ! जो तरकीब हो सके वह कीजिए न ! परेशान होने की आखिर क्या जरूरत है ? आप कल ही मुझसे

रुपये लेकर वकील को दे दीजिए। मगर आपका उज्र सुन लिया गया तो अच्छा है। वरना जहां एक हजार वहां बारह सौ ही सही। मगर खुदा के लिए अपने को इस तरह सती तो न कीजिए!"

हमने मुंह से तो हां, हूं कहकर बात टाल दी, लेकिन दिल इतना खुश था कि क्या बतायें। सौ डेढ़ सौ रुपया तो जैसे तुरन्त ही मिल रहा था। अगर इस में बरकत हुई तो ठीक है, नहीं तो भविष्य के लिए एक हजार रुपये का और भी प्रबंध हो ही चुका था।

अगर हम बेगम से यह कहते कि हम को ताश खेलने और मित्रों में उड़ाने के लिए रुपया चाहिये तो वह भला कहीं इतनी बड़ी रकम अपने उस रुपये में से दे सकती थी जो उनके नाम से जमा है। तोबा कीजिए! मगर यह तरकीब ऐसी काम आ गयी कि न हल्दी लगी न फिटकरी और रंग चोखा आ गया।

मन को ऐसा सन्तोष हो गया कुछ मत पूछिये! क्लब में तो तौर पत्तों ने साथ न दिया, मगर घर पर आ कर बाजी जीत ली। उड़ी हुई नींद वापस आ गयी, निश्चिन्तता ने थपकाना शुरु किया और आखिर थोड़ी देर में हमको पता न था कि हम क्या हुए?

५

क्लब के मेम्बरों में एक मेम्बरानी भी थीं, जिनका नाम था शीला और लेडी डाक्टर थी। आप इस वहम की शिकार थी कि संसार के जितने मर्द हैं उनको कुदरत ने इसलिए बनाया है कि वह आपके रोगी बन कर रह जायें। विलायत में रहने का यह प्रभाव था कि मर्दों में अपने को अजनबी अनुभव न करती थीं। अलबत्ता, हम लोगों के लिए वह अच्छी खासी मुसीबत बन कर रह गयी थीं। इस सिलसिले में हम सब मिलकर कोरस में फैयाज को बुरा भला कहते थे और कोसा करते थे जिनकी मेहरबानी से डाक्टर शीला हमारे क्लब की मेम्बर बनी थीं।

हमारे क्लब का नियम यह है कि किसी नये मेम्बर का दाखला तभी हो सकता है जब कम से कम तीन मेम्बर उसकी सिफारिश करें। और हमारे यह फैयाज़ साहब तो है हो शैतान के पर्सनल असिस्टेण्ट ? आपने न जाने कहां से डाक्टर शोला को ढूंढ निकाला और अपनी इस खोज के सिलसिले में हम सब पर धाक जमाने के लिए इनको अपने साथ अपने मेहमान के रुप में क्लब लाना शुरु किया। उद्देश्य यह था कि हम लोग जरा आपके रोब में आ जायें कि ओह हो यह तो क्यूपिड का कोई निकटस्थ सम्बन्धी है। जिस ने ऐसी बेजोड़ हिरणी का शिकार किया है, हालांकि वह बेजोड़ तो खैर क्या होती, अलबत्ता आदमी का बच्चा जरुर थी।

धीरे धीरे हम सब से भी उनकी घनिष्ठता हो गयी और बावजूद हमारे कड़े विरोध के फैयाज ने रमेश और इखिलाक के वोट प्राप्त करके उनको मेम्बर बनवा ही दिया। हमने उन सबसे साफ कह दिया कि अब हम गब ठहरे पुलिंग और हम एक स्त्रीलिंग के आने के कारण क्लब के इस स्वर्ग से निकलने पर मजबूर होंगे। खैर, क्लब से तो हम लोग न निकल सके, पर क्लब को उन साहबजादी ने मर्क़बुल्ग जरुर बना डाला ? उनकी उपस्थिति में कोई भी बेतकल्लुफी नहीं हो सकती थी। आपस में कोई बात खुलम-खुला कहने में हिचकिचाते और सतर्क से रहते। वह बेचारी तो लाख चाहती थीं कि हम सब बिल्कुल फ्रैंक हो जायें। ढूँढ़-ढूँढ़ कर ऐसी चर्चा छेड़ा करती थीं कि हम अपनी सतर्कता के घेरे से बाहर आ जाये।

लेकिन पता नहीं क्या बात थी कि हम को इन देवी जी से कुछ उलझन-सी थी। जहाँ तक हो सकता था उनसे अलग-अलग रहने का हमारा ख्याल होता था। उनसे कतराना, उनसे दामन बचाना, उनसे आँख चुराना हमारी एक बरबरा अदा बन चुकी थी। मगर वह थी हर तरफ से घेरे रहती थी। रमी की टेबिल पर भी आने लगीं और हमारे साथ रमी खेलना भी शुरु कर दिया, पर इसके बावजूद सम्भवतः उनको मालूम था कि यहाँ उनकी दाल गलने का नाम ही नहीं लेती। मगर यह जानने के बावजूद सन्तुष्ट थीं कि यह उपेक्षा ही एक दिन हमें उसके आगे नत मस्तक करती नजर आयेगी।

निरन्तर छेड़-छाड़, बे बात की बात पर हम से बोलना, मानों हाथ धो कर

ही हमारे पीछे पड़ गयी थी। खैर अन्य मेम्बर तो इसमें कोई हर्ज भी न समझते थे। लेकिन हमारा यह नियम जरा दूसरा है। औरत में लज्जा, औरतपन, आत्म सम्मान और एक हद तक गर्व होना जरूरी है। अगर औरत स्वयं दूर भागने की बजाय पीछा शुरु कर दे तो मर्द की सुरुचि का कर्तव्य है कि वह सिर पर पाँव रख कर भागे! अतएव हम भी अपने नज़दीक सिर पर पाँव रख कर भागते रहे! और हमारी यह उपेक्षा उनको और भी प्रोत्साहन दे रही थी। यहाँ तक वह भावनाओं की रौ में बहक चुकी थीं कि उनकी निगाहों को क्लब के प्रत्येक मेम्बर ने पढ़ लिया था!

क्लब में यही चर्चा थी और उनको भी यह खबर थी कि चर्चा हो रही है। मगर वह ठहरी शिक्षित, विलायत से डिपलोमा लिये हुए और फिर घर की ओर से बिल्कुल स्वतंत्र। माता-पिता स्वयं उनकी प्रजा थे। शादी इसलिए नहीं की थी कि फिर फ़ुरसत के ऐसे रात दिन कहाँ थे?

अतएव उनको खुदा ने हमारे अपराधों की मुँह बोलती, फिर खेलती सजा के रूप में हमारे बीच भेज दिया था वह मारे दुलार के हमें 'शौकी' कहा करती थीं और ज़रा मुँह टेढ़ा करके इस ढंग से कहतीं और आवाज़ में भी कोयल जैसी कूक पैदा करके ताकि हम बिल्कुल ही खत्म हो जायें।

ठिगना सा कद, बिखरे-बिखरे बाल, फूले-फूले गाल, मुँह पर रखी हुई नाक, चोटी-चोटी थिरकती हुई, हर लिबास में एक समान नजर आने वाली। और फिर चेहरे पर मेक-अप के सामान की इतनी खपत कि कुछ मत पूछिये! सेंट में डूबकर जब वह क्लब से एक फर्लांग दूर होतीं तो पता चल जाता था कि तशरीफ ला रही हैं। कभी छोटी, छोटी बातें कर रही हैं तो कभी साहित्य और शायरी के विषय में टाँग अड़ा रही हैं, कभी संगीत के प्रति अपने भाव प्रगट किये जा रहे हैं तो कभी चुटकुले सुना रही हैं!

सारांश यह कि भाँति-भाँति के दाँव केवल इसलिए चलाये जाते थे कि कभी तो हम प्रभावित होंगे। मगर उनको कौन समझाता कि आपकी इन्हीं बेहूदा बातों से तंग होता चला जा रहा हूँ। संसार में शायद इससे बढ़कर और कोई जबरदस्ती नहीं हो सकती कि जिसको दिल न चाहे वह दिल में समाने की कोशिश करें!

आखिर एक दिन उनकी सारी हरकतों से तंग आकर निश्चय किये बैठे थे कि आज ता डाक्टर शीला से साफ साफ बातें करेंगे और जरा खरी-खरी सुना भी देंगे।

खेल हो रहा था कि एकाएक आपने आकृष्ट करने का प्रयत्न किया, बड़े प्यार से बोलीं—'शौकी! तुम में यह क्या बीमारी है कि खेलते समय गूँगे हो जाया करते हो?'

हमने उदासीनता से कहा—''लेडी डाक्टर होने का यह मतलब तो नहीं कि सारी बीमारियां ही आपको समझ में आ जायें। बहुत सी बीमारियां ऐसी भी तो होती हैं जिनका कोई इलाज नहीं!''

शीला ने लज्जित होने के बजाय अपने नजदीक बड़ी वाक्-पुटुता से काम लेते हुए कहा—''इलाज वाला हो, या बे-इलाज का, मगर बीमारी ता आखिर बिमारी ही होती है!'

रमेश ने बात काट कर कहा—''और क्योंकि यह भी बीमारी है इसलिए यह तय है कि उसके इलाज के लिए किसी डाक्टर की जरूरत तो होगी ही!'

इखिलाक ने सोचा मैं क्यों पीछे रह जाऊँ। पट से बोल उठा—''और डाक्टर होने की हैसीयत से डाक्टर शीला डिप्लोमा-होल्डर हैं!'

शीला ने जरा गम्भीरता के साथ कहा—'नहीं! सचमुच मैं यह देखती हूँ कि जहां खेल शुरु हुआ नहीं कि आप इतने चिन्तित बनकर बैठ जाते हैं जैसे कोई बहुत बड़ी देश की समस्या सुलझा रहे हैं और इन्हीं ताश के पत्तों से देश का फैसला कराने वाले हैं!'

हमने जलकर कहा—'तो खैर, आपका मतलब क्या है? आप यह चाहती हैं कि देखने में तो ताश खेलता रहूँ, लेकिन पर असल मेरा फर्ज यह होना चाहिए आपकी मुसाहीबत करता रहूं!'

शीला ने कहा—''मुसाहबित का सवाल नहीं है। मगर ताशों के इस खेल को पूजा का दर्जा तो न दो शौकी!''

हमने एक गलत पत्ता फेंकते ही अपनी भूल महसूस करते हुए कहा—''लाहौल विलाकूवत...! यह होता है बात करने का नतीजा कि गलत पत्ता फेंक गया! यानी बना बनाया सेट तोड़ कर गारत करा दिया!''

शीला ने अपने पत्ते बढ़ाते हुए कहा "इस में से अपनी पसन्द का पत्ता ले लो !"

इखिलाक ने एक दम से 'शो' कर दिया—"लीजिए, मैं इस बहस का दरवाजा ही बन्द किये देता हूँ !"

हमने ताश के पत्ते मेजपर पटकते हुए कहा—"सारे खेल का सत्यानाश हो गया ! 'निल' (Nil) से मैं खुद 'शो' (Show) करने ही वाला था। अब अठारह में फसा हूँ !"

रमेश ने हँस कर कहा—"शुक्रिया, डाक्टर साला यह नमकहलाल बना हुआ था और अगर यह सचमुच 'शो' कर देता तो सब ही खत्म थे। अब कम से कम थोड़ी देर खेल तो जारी रहेगा !"

शीला ने कहा—"आप लोग तो इनको और भी भिड़ा रहे हैं। सचमुच, मैंने बातों में लगा कर इनकी जीती हुई बाजी हरा दी। शौकी, मुझे बड़ा अफसोस है ! मेरा मतलब तो सिर्फ यह था कि ताश की मेज पर मरघट का सन्नाटा न रहे !"

रमेश ने कहा—"लीजिए" यहाँ तो नाज नखरे शुरु हो गये। अफसोस किया जा रहा है, माफी माँगी जा रही है !"

इखिलाक ने भी पीछे न रहते हुए फरमाया—"और कहा जा रहा है कि—

'हमको दुआयें दो, तुम्हें कातिल बना दिया' !"

शीला को भी हंसी आ गयी और शेष सब ने भी इस हँसी में साथ दिया। हमने निश्चय किया कि अब यहाँ से खिसक जायें। अतः इधर उधर के बहाने कर के वहाँ से टल गये। लेकिन अभी लान पर एक एकान्त कोने मे पहुँचे ही थे कि शीला की आवाज आयी—

"अब यहाँ अकेले मैं किस पर गुस्सा उतारोगे ! तुमको जितना गुस्सा आ रहा है वह मुझ पर खर्च कर दो मगर भगवान के लिये लड़कियों की तरह यह रूठना छोड़ दो !"

हमने शिष्टाचार के नाते मुस्कराते हुए कहा—'गुस्सा तो नहीं, अलबत्ता जरा एकान्त के लिए यहाँ चला आया था ! थोड़ी देर एकान्त में बैठने को दिल चाह रहा है !"

शीला ने समीप आकर कहा—"आश्चर्य है कि तुम को एकांत प्रिय है। मेरा तो दम उलटजायें। मैं अपने एकान्त ही से घबरा कर क्लब में आयी हूँ।"

हमने कहा—"इसकी वजह यह है कि आपका वास्ता एकान्त से पड़ा है इसलिए आपको चहल-पहल प्यारी है। और यहाँ तो हर वक्त चहल पहल से उकता कर एकान्त की तलाश रहती है।"

शीला ने गर्दन के एक खास झटके के साथ अपने स्वर में अपने नज़दीक ग़ज़ब का आकर्षण पैदा करते हुए कहा—"लेकिन मैं यह देखती हूँ कि शौकी, तुम सिर्फ मुझसे कतराते हो। इस चहल-पहल से नहीं बल्कि मुझसे तंग होकर एकांत के कोने ढूँढते फिरते हो।"

हमने चकित हो कर कहा—"डाक्टर! मैं कई बार कह चुका हूँ कि तुम आखिर मुझ ग़रीब को अपना निशाना क्यों बनाये हुई हो। तुमको मालूम है कि सारे दोस्तों को यह जीता जागता चुटकुला हाथ आ गया है। इस सिलसिले में काफी चर्चे हो रहे हैं। अभी इखिलाक ने जो मिसरा पढ़ा था, शायद उसका मतलब बताने की जरुरत नहीं। इन सब बातों पर मुझ से ज्यादा तुमको खयाल करना चाहिये था।

शीला ने कहा—"लेकिन मैंने खयाल नहीं किया! इसलिए कि इस चर्चे में कोई बात झूठ भी तो नहीं है। मुझको बड़ी सच्चाई के साथ स्वीकार है कि मैं सचमुच तुम से दिलचस्पी लेती हूँ। और इसी बात ने तुम को मुझ से इतना सावधान बनादिया है......।"

हमने कहा—"यह तो ठीक है। मगर कम से कम मुझको मेरा कसूर तो मालूम होना चाहिए।"

शीला ने अचरज से कहा—"क्या मतलब? कसूर कैसा......?"

हमने कहा—"यानी वह कौन सा कसूर है जिसकी सजा के तौर पर आप मुझसे दिलचस्पी ले रही हैं मैंने यह पहेली पहले खुद सुलझाने की बहुत कोशिश की। बार बार शीशा उठाया, पर कुछ समझ में न आया। अपनी शक्ल को देखा, किसी नतीजे पर न पहुँचा। अपनी एक अदा को परखा, कुछ न मालूम हो सका।"

शीला ने और समीप होते हुए कहा—"शौकी! तुम इतने भोले न बनो।

इन बातों का जवाब न मैं दे सकती हूँ और न मेरे जवाब से तुम सन्तुष्ट हो सकते हो हाँ, यह बात तुम गिरह में बांध लो कि अब तक तो और मैं पूरे धीरज से काम ले रही हूँ, लेकिन तुम्हारी यह बातें कहीं मुझे सचमुच तमाशा बनाकर न रख दें।"

हमने कहा—"शीला अब सिर्फ मेरे लिए यह चारा रह गया है कि मैं क्लब को छोड़ कर एकान्त वासी बन जाऊँ ताकि मैं इस उलझन और आपकी इस जुल्मी बातों से बच सकूँ।"

शीला ने मानो निराशा और पीड़ा की सारी सम्भव स्थिति अपने ऊपर धारण करते हुए कहा—"मैं तुमसे कुछ नहीं कहती। और अगर तुम मेरे कारण से क्लब का छोड़ना चाहते हो तो कल से तुम मुझको क्लब में न देखोगे, लेकिन याद रखना शौकी! अगर मैं सच्ची हूँ तो आज के बाद से तुम्हारे दिल को भी कभी शान्ति न मिल सकेगी।"

यह कह कर शीला ने अपनी गर्दन झुका ली। उसका सम्भवतः अभिप्राय यह होगा कि हम प्रभावित होकर नाटकीय ढंग से पहले खामोश रहे फिर पागलों की तरह आगे बढ़े और घुटने टेक कर उसका दामन थाम लें। फिर हार मानते हुए कह दें कि—ऐ सौन्दर्य की मूर्ति! तू ने अपने मन की मुराद पायी, तेरे कदमों में है तेरा सौंदर्य!'

इस नाटकीय कल्पना के आते ही हमको हँसी आ गयी। शीला ने पहले तो भौंचक्की हो कर हमारी हँसी को देखा फिर उसको इस हरकत पर सचमुच गुस्सा आ गया। उसको क्या मालूम था कि हम क्यों हंसे हैं। वह तो यही समझी कि हमने उसकी भावनाओं का बड़ी बदतमीजी के साथ मजाक उड़ाया है। यह स्पष्ट है कि उसे अपने स्वभिमान को गहरी नींद से जगाना ही पड़ा।

एकाएक उसने आँखों में आँसू डाल कर काँपती हुई आवाज़ के साथ कहा—"तुम जंगली जानवर हो! यह मेरी भूल थी कि मैंने इस पत्थर से सिर फोड़ा!"

उस की आँखों में दो बूंदें काँप रही थी और सारा शरीर भी काँप रहा था। बिफरी हुई शेरनी की तरह वह दाँव-पेच खा रही थी।

हमने घबराकर कहा—"डाक्टर साहिबा, आप ज्यादा बेतकल्लुफी फरमा रही है।"

शीला ने हल्की-सी चीख के साथ कहा—"शटअप !" और बिजली की तरह कौंध कर पांव पटकती हुई वहां से चली गयी।

वह अभी थोड़ी ही दूर गयी होगी कि पेड़ों की ओट एक-एक कर के सब शैतानों ने निकल कर हमें घेर लिया। मगर न किसी के चेहरे पर हँसी थी, न कोई और शरारत के चिन्ह।

इखिलाक ने आते ही कहा—"यह आखिर आपने क्या हरकत की है ?"

रमेश ने मानो शीला की ओर से बुरा मान कर कहा—"आप इन्सानियत के साथ भी उसे समझा सकते थे; बजाय इसके कि इस तरह उसका अपमान करते !"

फैयाज़ ने बड़े बुजुर्गाना अँदाज़ से कहा—"मालूम नहीं आपको किस दिन महसूस होगा कि अब आपकी उमर इस गैर-संजीदगी और गैर-जिम्मेदारी की नहीं है। मालूम नहीं यह कमियाँ कब तक आपमें रहेगी !"

हमने इस चारों ओर के आक्रमण से घबरा कर कहा—"भई, मेरी भी सुनोगे या बस मुझे ही को बुरा भला कहे जाओगे !"

इखिलाक ने निर्णयात्मक ढँग से कहा—"हम लोग सब सुन चुके हैं और तुम्हारे नफरत के इस भेद-बर्ताव से इसलिए शर्मिन्दा हैं कि तुम हम में से एक हो तुमको चाहिये कि शीला से माफी मांगो और उसका जितना दिल दुखाया है उसे दूर करो। इसके बाद अगर तुम उसकी तरफ ध्यान नहीं देना चाहते तो इसकी हजार खूबसूरत तरकीबें हैं, समझे मियां !"

७

६

अगर नई रोशनी के शिक्षित व्यक्ति की हैसियत से गौर कीजिए तो क्लब जाना और वहां आधी-आधी रात तक ताश खेलना और वह भी रुपये की हार-जीत के साथ, प्रगट रूप में कोई अपराध नहीं है। बल्कि इस नये दौर में तो इससे भी ज्यादा सुविधायें हैं। उदाहरणतः शराब पीने तक में कोई हर्ज नहीं

समझा जाता है। मगर यहाँ तो गौर करना है बेगम के दृष्टिकोण से जो हमारे क्लब और उसके सारे मनोरंजन से बेखबर थीं और इसीलिए हमें लगातार चोरियाँ करने की आवश्यकता पड़ रही थी।

यह सम्भवतः हम पहले भी कह चुके हैं, लेकिन फिर भी बार बार कहने को जी चाहता है कि आदमी चोर स्वयं कभी नहीं बनता वरना बना दिया जाता है। अगर एक व्यक्ति को उसकी आवश्यकता का सामान खुल्लम खुल्ला, दिन दहाड़े में बिना किसी रोक टोक के मिलता रहे तो उसको कभी भी चोर बनने की जरुरत नहीं हो सकती। चोर तो वह है जो मजबूरी की दशा में बनता है। आप ही बताइये, अगर बेगम की ओर से हमें यह विश्वास होता कि वह क्लब मेम्बरी और उसकी जुआबाजी को बुरा न समझेंगी और हमारे मनोरंजन में साथ देंगी तो हमको कुत्ते ने नहीं काटा है कि हम इस तरह के चोर बन-कर रहते!

लेकिन हम जानते हैं उनकी प्रकृति क्या है! वह चाहती थीं कि हम शरा-फत के साथ नियत समय पर दफ्तर जायें और दफ्तर से लौटते ही उनकी अर्दली में रहें और घर से बाहर कदम न रखें। इसीलिए उन्होंने हमारे मनोरं-जन के साधन घर पर जुटा रखे हैं। उदाहरणतः कैरम-बोर्ड मंगवा लिया था और शतरंज भी थी, बैडमिन्टन भी था। मानों उनके विचार में हम यह गुड़ियाँ उनके साथ खेल कर सन्तुष्ट रह सकते थे! और एक आदमी के लिए बस इतने ही मनोरंजन काफी थे!

अब उनको कौन समझाता कि शेर कभी घास नहीं खाता। एकाध बार अपने एक दो रिश्तेदार की चर्चा करके बेगम कानों पर हाथ रख चुकी थी और कहा था—'तौबा है! अहमद भाई तो पैसे लगाकर ताश खेलते हैं और मुझे जुवारिओं से ऐसी नफ़रत है कि वह अपने भाई फूटी आँख नहीं भाते!'

हमने भोलेपन के साथ कहा—'और अगर मैं दांव लगाकर ताश खेलने लगूँ तो......?'

प्यार से मुँह चिढ़ा कर फरमाया—'खुदा न करे! मगर आप खेल ही नहीं सकते। एक तो आपको इतनी फुरसत ही नहीं, दूसरे अल्लाह न करे आप जुआरी हों।''

अब बताइये, कि ऐसी विश्वास पात्रा बेगम से चोरी न की जाये तो क्या किया जाये। फैयाज का नियम दूसरा था। अव्वल तो वह बेगम को इसका हक़दार ही न समझता था कि वह यह पूछताछ कर सके दूसरे उसका दृष्टिकोण भी कुछ और था। वह सदा यह कहा करता था कि जब कोई अपराध करता हो तो उससे बड़े अपराध की सूचना बेगम को पहुँचाओ, ताकि वह तुमको बहुत ही बड़ा अपराधी समझ ले और फिर धीरे-धीरे उसको यह मालूम हो सके कि नहीं यह खबर गलत है। यानी यह खूनी नहीं हैं सिर्फ डाकू हैं। स्पष्ट है कि वह खूनी के मुकाबले में डाकू होना पसन्द करके खुदा का शुक्र अदा करेंगी कि उनका मियां सिर्फ डाकू ही निकला और अल्लाह का लाख लाख शुक्र है कि खूनी नहीं है।

अतएव इसी दृष्टिकोण के अन्तर्गत फैयाज हमें अपनी प्रयोजनीय तरकीब समझाते हुए कहता—'मियां, मुझे देखो। शुरु-शुरु में मेरी घर वाली भी मेरे इन शौकों के बहुत खिलाफ थी। बेचारी ने बड़े हाथ पांव मारे। भूख हड़ताल भी की, मुँह फुलाया, ठंडी सांसे भरी, नींद हड़ताल की, आंसू बहाये और जब दाल न गली तो मायके जाने की धमकियाँ दीं। बात-बात पर लड़ने की कोशिश की। मगर आखिर हमको एक तरकीब सूझ गयी। दर असल उनको फिक्र यह थी कि रात को एक एक दो दो बजे तक कहां गायब रहते हैं। हमने कई बार समझाया कि क्लब जाते हैं, ताश खेलते हैं। इससे ज्यादा और कुछ नहीं करते।

लेकिन वह क्लब जाने के खिलाफ थी। आखिर अपने एक दोस्त की मदद से उनको यह खबर पहुँचा दी गयी कि न ताश हैं न क्लब बल्कि वहां तो कुछ और ही हो रहा है। एक दूसरा घर बसाया जा रहा है। बस, सुनते ही बेगम के हाथों के तोते तो उड़ गये कि हाय यह क्या गजब हो रहा है।

"अब जो हम घर पर आते तो नक्शा ही कुछ और था। जबरदस्ती की जगह यह होती कि ज्यों ही घर में कदम रखा और बेगम ताक में बैठी रहती थी कि आज तो आने दो। इसलिऐ हर रोज़ एक नयी किस्म की आव ली जाती थी। दो घंटे तक ऐसा दिल हिलाने वाला लेक्चर होता था कि जिन्दगी से तंग आ जाते थे। फिर इस लेक्चर में आंसू भी होते थे और अपने लिऐ बददुआयें

भी होती थीं। हमारी आने वाली ज़िन्दगी पर बड़ी भयानक रोशनी डाली जाती थी। ग़ैरत दिलायी जाती थी, और इसके लिए नये नये नक्शे खींचे जाते थे। कहने का मतलब यह कि दिमाग़ को चर्खा बनाकर रख दिया जाता था और हम को रोज़ यहीं लोरियां सुनकर सोना पड़ता था। मगर हम भी डटे थे और उधर रोज़ फौजदारी शिकायतें। दोनों अपनी अपनी जगह डटे हुए थे।

"शुरु शुरु में उनको समझाया कि देखो बेगम! यह बड़ी गवारपन की बात है कि रात को देर में घर पहुंचने पर शौहर को टोका जाये! मगर जब इससे काम न चला तो एकाध बार खुशामद भी की,। फिर जब इससे उनकी आदत बिगड़ने का डर हुआ तो चुप्पी साधली कि भोंकने वाले भोंका ही करते हैं लेकिन चांद बराबर दो बजे रात को ही निकलता है। जब खामोशी से जी घबराया तो यह तय किया कि जब वह डांटा करें, तब हम गाया करें। इसलिए यह होने लगा कि उधर उन्होंने डांटना शुरु किया और इधर हमने गाना शुरु कर दिया। ज्यों ज्यों उनकी आवाज़ तेज़ होती गयी, हम पंचम तक पहुंचते गये ताकि उनकी आवाज़ हमारी तानों से दबी रहे। मगर यह तरकीब भी ज़्यादा चलने वाली न थी। आखिर सोचते सोचते यह अचूक तरकीब समझ में आयी कि जिस बात से वह नाराज हैं, उसी बात से खुश हो जाये!"

फैयाज़ के इस लम्बे चौड़े भाषण से तंग आकर हमने उनसे पूछ ही लिया—"तुम तो हमेशा यही रट लगाये रहते हो कि ज़हर का इलाज ज़हर से हो। मगर मेरी समझ में तो आता नहीं कि इसकी सूरत क्या हो सकती है?"

फैयाज़ ने अनुभवशाली अंदाज़ से कहा—फिर वही बच्चों की सी बातें करते हो न! सुनो, मैंने इस सिलसिले में बड़ी खोज की है यह बाल धूप में सफेद नहीं हुए जो देखने में काले नज़र आ रहे हैं। उमर सारी इसी आर्ट को सीखने में बीती है। इस तरीके को बिल्कुल यह समझो कि जैसे किसी पर लक्वे का हमला है, ज़िन्दगी की सारी उम्मीदें साथ छोड़ जाती हैं, डाक्टर जवाब दे देते हैं। रिश्तेदार रो-पीट कर सब्र कर लेते हैं। दवा छोड़कर दुआ शुरु कर दी जाती है। और फिर एकाएक मरीज़ की हालत सम्हलने लगती है, आखिर वह मौत के मुँह से निकल कर ज़िन्दगी की तरफ वापस आ जाता है। हालांकि वह अपाहिज है। उसका एक हाथ और एक पांव बेकार है। वह ज़िन्दा तो है इस-

लिए उसके सब रिस्तेदार खुशियां मनाते हैं। खुदा की कसम, यह रिस्तेदार हरगिज़ इस बात के लिए तैयार न होते कि उस भले-चंगे आदमी की लकवे से यह हालत हो जाये। मगर जब लकवे के बाद उन्होंने मौत का नक्शा देखा तो उन्हें लकवा भी अल्लाह की मेहरबानी नजर आने लगा और वह मौत के मुकाबले में उसकी लकवा मारी जिन्दगी को अपनी अपनी दुआओं का नतीजा समझने लगे।

"बिल्कुल इसी तरह एक बीबी अपने शौहर की छोटी बुराई को तभी माफ कर सकती है जब उसका होनहार शौहर कुछ उससे बड़ी बुराइयां उसके सामने पेश करे आया समझ में......?"

हमने फिर तंग आकर कहा—"वह तो मैं समझ गया मगर फिर तुमने क्या किया?"

फैयाज़ ने अपने भाषण का क्रम जारी रखते हुए कहा—"कह तो चुका हूं कि मेरे कुछ दोस्तों ने उनको यह खबर पहुंचा दी कि मैं जुआबाजी में नहीं बल्कि इश्कबाज़ी के चक्कर में हूं। बस, सुनते ही उनकी तबीयत ठिकाने लग गयी। जंग का नक्शा ही बदल गया। पहले तो चंगेज़ खां वाली बात थी और अब महात्मा गान्धी वाली पालिसी बरती जाने लगी। यानी सब से पहले तो मौन-व्रत रखा, फिर एक हफ्ते वाला व्रत जिस में सिर्फ पानी पीया जाता था कभी-कभी चाय। हम को यह सब मालूम था मगर इस तरह के मौके पर आदमी का सब कुछ देखते हुए भी अनजान बन जाना चाहिए। इसीलिए हम भी गोया इस सत्याग्रह से बेखबर रहे। आखिर उनके सिर पर रुमाल बंधा हुआ देखा। यह देखकर कदम डगमगाये, ममता फड़फड़ायी। मगर दिल को सम्हाला कि कहीं बना बनाया खेल ही न बिगड़ जाये और अपने प्रोग्राम पर उसी तरह सख्ती से डटे रहे, यानी रोजाना दो बजे रात को घर आते।

"आखिर बेचारी कहाँ तक सब्र से काम लेती। एक दिन गले में बाहें डाल कर रो ही तो दी कि मेरा कसूर क्या है बता दो। आखिर मैंने कौनसी गलती की है जिसकी इतनी बड़ी सजा मुझको दे रहे हो। पहले तो हमने हैरानगी दिखाते हुए एक्टिंग की कि माजरा क्या है? कैसी गलती और कैसी सजा? मगर जब उन्होंने बताया कि देखिये मुझे सब पता है और मैं जानती हूँ कि

आपने अब तक मुझसे इसीलिए छिपाया है कि मैं दुखी हूँगी। लेकिन अब जो दुख होना था हो चुका। अगर आप दूसरी शादी कर ही चुके हैं तो अपनी उन बेगम को इसी मकान में ले आइये। और अगर अब तक नहीं की, और यह तय है कि आप दूसरी शादी करने वाले हैं तो मुझे एक मामूली कनीज समझ कर इस भेद में शरीक कर लीजिए। मैं खुद आपकी दुलहन को लाऊँगी और जितनी भी सेवा हो सकेगी, करूँगी।

"मैं तुम से सच कहता हूँ कि बेगम की इन बातों के बाद सारी स्कीम खत्म हो गयी। हम लाख चालाक और ढोंगी सही, मगर उस वक्त पिघल गये और अपनी नेक बेगम को सचमुच गले से लगा कर बड़े प्यार से कहा—'नाजो! तुम किसी गलतफहमी में न पड़ो। यह सारा क़िस्सा तो ढोंग है। शादी की बात भी झूठी है। सिर्फ क्लब में देर हो जाती है जिसको तुम न जाने क्या-क्या मतलब लगाती रहती हो।' मगर तमाशा देखिये, कि हमारी इस सचाई पर उन्हें और भी शक बढ़ गया! कि इतना प्यार जताने के बावजूद हम ऐसे मुजरिम और साथ ही साथ पत्थर दिल भी हैं और अब बात छुपाने की कोशिश कर रहे हैं।

"नतीजा यह हुआ कि हम जितना समझाते उतनी ही वह नासमझ होती गयी। हालाँकि इससे पहले वह खतरनाक हद तक समझदार थी। बहरहाल, उस दिन के बाद तो वह बराबर यह कोशिश करती रही कि हम किसी तरह अपने जुर्म (अपराध) को मान जायें। आखिरकार उनकी तरफ से हमारे पीछे खुफिया पुलिस की किस्म के लोग लगाये गये। वह खुद भी तहकीकात करती रही, लेकिन न उनको हमारी मंगेतर का ही पता चला और न हम किसी ऐसी जगह जाते हुए पाये गये, जहाँ का वह अन्दाजा किये बैठे थे। यहाँ तक कि फिर तो खुद ही हमारा पीछा करना शुरू कर दिया गया। आगे-आगे हमारी फिटन और पीछे-पीछे बेगम का एक परदेदार ताँगा। हम सारा माजरा समझ चुके थे, मगर फिर भी अनजान बने रहे। फिटनका जाने कहाँ-कहाँ का लम्बा चक्कर लगाते रहे ताकि वह जरा खुश होती रहें कि आज तो पकड़ लिया! मगर आखिर में जब फिटन क्लब के फाटक पर जाकर ठहरी तो ताँगा बड़ी निराशा से, वापस हो गया। इस तरह कई बार हमारा पीछा किया गया। लेकिन आखिरी बार यह भेद इस तरह खुला कि रात को जब दो बजे हम क्लब से निकले तो

फाटक से जरा दूर एक टाँगा मौजूद था । उस दिन तो खुद हमें भी शक हुआ कि यह टाँगा किसका है । हम फिटन पर बैठ कर घर चल दिये और जब हम घर पहुँचे तो हमारे साथ ही बेगम भी घर में दाखिल हुईं ।

"उनके चेहरे पर मुस्कराहट थी । ताजगी भी थी, और यह मालूम होता था कि जैसे उनके चेहरे पर किसी ने फुलझड़ी छोड़ दी हो । हमने हैरानगी से पूछा—"यह आप इस वक्त कहाँ से तशरीफ ला रही हैं ?"

"एक सोफे पर लापरवाही से गिरकर कहा—"जरा क्लब गयी थी ताश खेलने ।"

"हमने और भी ताज्जुब से कहा—"क्लब ? ताश ? नहीं ! सच बताइये बेगम आप कहाँ गयी थीं ?"

"उसी इतमीनान से बोली—"हाँ, हाँ ! क्लब गयी थी चोर पकड़ने !"

" अब हम समझे—'अच्छा, अच्छा ! तो पकड़ा आपने चोर ?'

"जरा अफसोस की एक्टिंग करते हुए बोलीं—"जी हाँ, पकड़ा तो है चोर मगर बड़ा चालाक था साहूकार निकल गया ।"

"हमने कहा—'यानी क्या मतलब ?'

"अब जरा एक्टिंग खत्म हो रही थी, बोली—अच्छा, खैर फिर बातें होंगी । कपड़े बदल लीजिये सच कहती हूँ एक हफ्ते से आपने धक्का मारा । आज तो टाँगे वाले ने कुछ देरी कर दी वरना मैं तो रोज आप के साथ ही क्लब से वापस आती हूँ ।"

फैयाज अपनी राम-कहानी सुनाते हुये जरा देर रुका फिर अपनी छड़ी घुमाते हुये बोला—"हाँ तो उनकी बात से यह मालूम हुआ कि बेगम खुद रोज रात को क्लब के दरवाजे पर जाकर ठहर जाती थी और दो बजे रात तक बराबर कमरे में ताक-झाँक कर देखा करती थी कि अन्दर क्या हो रहा है ? इसके बाद वापसी में साथ ही साथ वापस आती थीं और हमसे कुछ देर पहले पहुँच कर इस तरह लेट जाती थीं, गोया सो रही हैं । उस रात हम पर यह भेद खुल गया तो वह भी खुल गयीं कि मैंने तो इस तरह यह यह सुना था । और मुझे यह यकीन दिलाया गया था कि आप क्लब हरगिज नहीं जाते, बल्कि कोई भाटिया साहब हैं उनकी लड़की से आपकी शादी तय हो चुकी है । और क्लब के बहाने

इसी चक्कर में जनाब फँसे हुये हैं। इसीलिये मैंने आपका पीछा करके तहक़ीक़ात की तो पता चला कि यह सब बातें झूठी हैं।

"और इतना ही नहीं, यह भी मालूम हुआ कि कम्बख्त बेगम मिस्टर भाटिया के यहां भी गयी। और वहां भी हर तरह से छानबीन की। [illegible] बड़ी गनीमत है कि उनके घर जाकर यह नहीं कहा कि—'मेरे मियां के साथ तुम्हारी शादी होने वाली है।' वरना लेने के देने पड़ जाते। तो भाई, मैं यह कह रहा था कि जिस दिन से हमारी बेगम को यह इतमीनान हुआ कि हम कहीं बाहर नहीं जाते, तो वह क्लब जाने और ताश के खेल को अब दिल से पसन्द करती हैं। लेकिन अब तो अगर कभी वक्त से आना न हो तो पूछा करती हैं कि तबियत कैसी है? या किसी दिन दस बजे से पहले क्या [illegible] बजे घर आ जायें तो उनका दिल धक से हो जाता है कि न जाने क्या बात हो गयी है कि आज वो जल्दी ही घर आ गये हैं।"

हमने मुस्कराकर कहा—"ग्यारह बजे रात को शाम होती है?"

फैयाज़ हँसी से बेदम होते हुए कहने लगे—"जी और क्या? बारह बजे तक हमारे यहां वक्त जल्दी का समझा जाता है। इसलिए कि रात दस बजे से शुरू होता है। साहिबान! आपने देख लिया कि एक बड़ा जुर्म आपके सामने आया यह क्यों [illegible] 'हुनर' बन गये। वह दिन और आज का दिन कि बेगम ने क्लब जाने या ताश खेलने को कभी मना नहीं किया।"

७

रुपये का प्रबंध तो हो ही चुका था। अल्लाह खुश रखे बेगम को, बैंक से रुपया निकलवा कर दे दिया था और हम बराबर क्लब में रईस बने हुए थे। संयोग से इन दिनों राजा नल भी मेहरबान रहे। खूब-खूब जीते, बल्कि क्लब के अधिकतर मेम्बरों का दिवाला हमारे कारण निकला। और हमारे पास इतना रुपया हो गया कि अगर चाहते तो बेगम का रुपया लौटा देते, लेकिन बुरे समय

के लिए कुछ न कुछ जमा रहना ही चाहिये। क्लब के हारे हुए मेम्बरों पर खुदा की मेहरबानी से इतना रुपया उधार चढ़ चुका था कि खेल के समय हमको अपने सुरक्षित-फंड को छूने की आवश्यकता ही न पड़ती थी।

यह सब कुछ था, लेकिन वह एक चीज है न—'दिल का चोर होना,' इस कमबख्त की बदौलत मन को शांति ही न थी। कभी यह सोचते कि आखिर इसका अंजाम क्या होगा? लेकिन शैतान तुरन्त जवाब देता कि इस अंजाम का सोच-विचार, दिल की कमजोरी की बीमारी है। कभी शराफत का दौरा पड़ता तो देर तक बेगम के भोलेपन पर गौर किया करते। मगर शैतान समझाता कि देखो मियाँ, यह सोच-विचार तुम्हें बूढ़ा बना देगा। याद रखो, बेगम कभी भोली नहीं होती। वह स्वयं अपनी कहानी सुनाता कि मेरी आँखों ने आदमी और हौवा (आदि स्त्री का नाम जो आदमी की बीवी थी) को देखा है। हौवा ही ने आदमी से स्वर्ग छुड़ाया। अब तुम बेगम के कारण यह मनोरंजन छोड़ना चाहते हो? अगर तुमने क्लब जाना छोड़ भी दिया तो इसका कोई अच्छा प्रभाव तुम्हारी बेगम पर नहीं पड़ सकता। जब तक तुम उनको बता न दो कि मैं तुम से चोरी करता हूँ और इस तरह क्लब में रंगरेलियाँ होती रहती हैं और बहाने से रुपया ऐंठकर यूँ गंवाया है। अगर तुमने यह बता दिया तो याद रखो कि एक बार विश्वास खोकर फिर कभी इसे कायम न कर सकोगे। इसीलिए उस कारखाने को तो बस यूँ ही चलने दो। दुनिया इसी का नाम है। लेकिन अब सचमुच यह सवाल था कि तुम्हारा तो हर रोज का यह नियम बन चुका था कि टेढ़े-मेढ़े रात को घर आना, नित्य नये झूठ बोलना, दूसरे दिन के लिए और बहाने सोचना और मुँह लपेट कर पड़ा रहना। स्पष्ट है कि कोई बीवी भी यह बातें सहन नहीं कर सकती।

फैयाज से सलाह ली तो उसने अपनी राम-कहानी सुना डाली। मगर एक बात थी कि फैयाज की तर्कें थी मजबूत, और साथ ही दिल में उतरने वाली। फिर यह कि हमारे लिये तो इनके लिये उपयुक्त अवसर भी था। यानी शीला मौजूद ही थी, जो हम पर जान छिड़कती थी। इसलिये एक झूठी प्रेमिका खोजने की भी जरूरत न थी। बार बार इस तरकीब पर चलने की कोशिश की, मगर

हरबार हिचकिचा कर रह गये। आखिर एक दिन अपने गुरु फैयाज से सलाह ली।

उससे पूछा—"अरे भई! खुदा के लिये मुझे भी बता दो कि यह रोज-रोज की बहाने बाजियाँ और यह सदाबहार झूठ आखिर कब तक चलेगा...?"

फैयाज ने उपदेश देने के अन्दाज से कहा—"जब तक सच बोलने की हिम्मत न पैदा करो और बेगम से साफ-साफ यह न कह दो कि मैं क्लब जाता हूँ और कार्जज (ताश) खेलता हूँ।"

हमने विरोध करते हुए कहा— "यह तो मरने तक नहीं कह सकता।"

फैयाज ने अजीब सवाल किया—"क्यों मार डालेगी जान से तुम्हें ? मुर्गा बना देगी ? आखिर क्या करेगी ? उनसे आप आखिर यह क्यों नहीं कह सकते कि तुमको मेरी इन बातों पर रोक-टोक करने का कोई हक नहीं है। खास कर ऐसी हालत में जब कि सोसायटी ने इन मनोरंजकों को जायज ठहराया है। दरअसल तुम न कोई बदमाशी करते हो, न चोर हो, न उचक्के हो। दिल बहलाने को बस क्लब जाकर ताश ही तो खेलते हो, यही न। फिर इसको आप इतना बड़ा जुर्म क्यों समझ रहे हैं कि दम ही निकला जाता है।

हमने बिलकुल सच बोलते हुए कहा—"अरे भाई! तुम समझते नहीं हो, न जाने क्यों मेरा दम निकलता है अपनी बेगम से। बात दरअसल यह है कि वह मुझपर धाक जमा चुकी हैं। उनका रोब मुझ पर बैठ चुका है, इसलिए अब उनके सामने हिम्मत का सवाल ही पैदा नहीं होता। इस तरह की सिपाहियों वाली दलेरी की तरकीब न बताओ बल्कि तुम तो ठहरे छटे हुए चार सौ बीस ? कोई ऐसी तरकीब बताओ जिसको तुम 'तिकड़म' कहते हो, जिसमें हल्दी और फिटकरी वगैरा कुछ भी न लगे और रंग भी चोखा आया करता है। आखिर तुमने खुद भी तो कैसी अच्छी तरकीब निकाल ली थी।"

फैयाज ने फड़क कर कहा—"हाँ तो वही मेरे वाली तरकीब ही सही। मगर यह जरा यूनानी तरीके का इलाज है जिसमें दो बातों की जरूरत हुआ करती है। यानी पक्के मिजाज की और परहेज की। मिजाज में मजबूती तो यह होनी चाहिये कि चाहे कितनी ही देर लगे, मगर नतीजे की तरफ से मायूस (निराश) न होना और परहेज यह कि फिर आपकी बेगम चाहे कैसी भोली-

भाती नजर आये उस पर कैसी ही प्यार क्यों न आये, लेकिन उसे यह भेद कभी न बताना चाहिये, जब तक कि वह खुद उस भेद को न खोल दे। या यह भेद अपने आप उस पर न खुल जाये, समझे।"

हमने कहा—"जनाब, हकीम साहब! मैं इस यूनानी तरीके के इलाज के लिये तैयार हूँ, इसलिए कि अब तो चोरों वाली इस जिन्दगी से तंग आ चुका हूँ।"

फैयाज ने सचमुच हकीम बनते हुये कहा—"फिर वही चोरों वाली जिन्दगी यार! बात यह है कि तुम निजी तौर पर भी कुछ बामद हो। तुम्हारे लिये तो जरूरत इसकी है कि पहले तुम्हारे जमीर (आत्मा) को मारा जाये, इसके बाद तब कहीं तुम इलाज के लायक हो सकते हो। तुमको असल में शराफत की टी० बी० हो गयी है। यह बीमारी भी इलाज के लायक है। पर शर्त यह कि तुम लुकमान हकीम को हकीमी पढ़ाने की कभी कोशिश न करो और सच्चे दिल से वादा करो कि मेरे इलाज के तरीके में कभी टाँग अड़ाने की कोशिश न करोगे।"

हमने प्रण करते हुए कहा—"मैं वादा करता हूँ कि कभी दखल न दूँगा।"

फैयाज ने सम्हलकर बैठते हुए कहा—"अच्छा तो अब कल ही से आप का इलाज शुरु हो जायेगा। इस सिलसिले में मुझे अपनी बीवी नाजो से भी मदद लेनी पड़ेगी। कल तुम्हारी बेगम को चाय पर मेरे यहाँ बुलाया जायेगा और वहीं बिसमिल्लाह कहकर पहली खुराक उन्हें पिला दी जायेगी। बाद से इलाज होगा आपका मगर दवा भाभी जान को पीनी पड़ेगी। आपको शायद मालूम नहीं कि कड़वी दवा ही सख्त बीमारी के लिए हकीम जरुरी समझा करते हैं। इसलिए दवा की सारी कड़ुवाहट को यह महसूस करेंगी और फायदा आपको होगा! इलाज के इस नये तरीके को—'दुख सहे फाख्ता और कौवा अंडे खाय!' कहते हैं, समझे मियाँ!"

हमने तंग आकर कहा—"खुदा के लिए यह बकवास खत्म करो और यह बताओ, आखिर उन से कहा क्या जायेगा?"

फैयाज ने आँखे निकाल कर कहा—"बकवास"…? यानी यह हकीमी बातें

बकवास है ? ऊँहूँ···तुम्हारा इलाज नहीं हो सकता । तुम सख्त नालायक किस्म के मरीज मालूम होते हो !"

हमने कहा—"अच्छा साहब, माफ कीजिए ! और कम से कम यह तो बता दीजिए कि आखिर उनको कहा क्या जायेगा ।"

फैयाज़ ने कहा—'उनसे जो कुछ कहा जायेगा वह तुम खुद सुन लेना । उनको ऐसे कमरे में बिठाया जायेगा कि साथ वाले कमरे में तुम बैठकर सब कुछ सुन सको । मगर तुमको अपना दिल सख्त करना पड़ेगा हो सकता है तुम न सुन सकोगे, या जो कुछ बेगम सुने उसके बाद जो उनका हाल हो, वह तुम से बर्दाश्त न हो । इन सब बातों की तरफ से इतमीनान करलो । हम लोग इसी लिए कमजोर दिल लोगों को आप्रेशन थियेटर में आने की इजाजत नहीं देते !"

अब हमने बड़ी खुशामद करते हुए कहा—"भाई मैं सब कुछ बर्दाश्त कर लूंगा । लेकिन मुझे तैयार रखने के लिए पहले से बता दो कि उनसे क्या कहा जायेगा ?"

फैयाज ने सोचते हुए कहा—आपकी बेगम को सिर्फ शीला का किस्सा बता देना बहुत काफी है !"

हमने एकदम उछल कर कहा—"ओ कमबख्त । तू खुदा की कसम बड़ा समझदार है । मेरे दिमाग में यही बात थी कि खुद तुम को यह सलाह दूंगा मगर······'

फैयाज ने बात काट कर कहा—"मगर लुकमान हकीम को आपसे दुकीमी का सबक लेने की जरूरत न पड़ी, अरे भाई, मैं खुद हैरान हूँ कि कुदरत ने यह नेकी की काबलियत मुझ नादान में कैसे पैदा कर दी है ? मगर यह तो जिसको जी चाहे दे देता है । हाँ, तो आपकी बेगम को यह बता दिया जायेगा कि आपका शीला से इश्क छन रहा है और जल्दी ही शादी होने वाली है । मगनी के मौके पर तीन सौ रुपये की अंगूठी दी गयी है !"

हमने कहा—"अरे रे रे ! बिल्कुल बात चिपक कर रह जायेगी । जल्द से दिमाग में उतरेगी इसीलिए कि हाल ही में एक हजार के वारे-न्यारे कर चुका हूँ जो खुद उनके नाम से बैंक में जमा थे और उन्हीं से बहाना करके निकलवाये हैं !"

फैयाज ने गम्भीरता के साथ बड़ी देर तक गर्दन हिलाते हुए कहा—"जी हाँ, जी हाँ, यह मुझे पहले से ही अन्दाजा था। मैं आप लोगों को सूँघ कर बता सकता हूँ कि आजकल कैसी बीत रही है! इसीलिए आपके लिए मैंने यह तरकीब निकाली है। हाँ, तो फिर मेरी बीवी तुम्हारी बेगम को ऐसे बतलायेगी कि जैसे तुमने मुझसे सब कुछ कहा था और मैंने अपनी बीवी से कहकर ताकीद कर दी है कि किसी को न बतायें। फिर शीला की शक्ल-सूरत बतानी होगी, शीला के साथ तुम्हारी चिट्ठी बाजी और शीला के साथ तुम्हारा इलाहाबाद जाना भी।"

हमने चौंक कर कहा—"ओ जालिम! तुम को हमारा इलाहाबाद जाना भी इसी वक्त के लिए याद रह गया था··· ?"

फैयाज ने कहा—"भाई साहब, कहानी की कड़िया मिलाने के लिये इस तरह की बातों को मैं अपने दिमाग में जमा रखता हूँ कि खुदा जाने कब किस बात की जरूरत पड़ जाये! खैर, मैं यह कह रहा था कि इसी तरह की बहुत सी बातें उनको बता कर फिर यह भी जोर दिया जायेगा कि इन बातों को तुम्हें न बतायें। इसके बाद यह सलाहें दी जायेंगी कि आप किस्मत पर भरोसा रखो, कलेजे पर पत्थर रख लो, जो कुछ बीते सब्र से बर्दाश्त कर लो वगैरह वगैरह! यह सारी सलाहें ऐसी होंगी कि शायद वह उसी वक्त से इसके खिलाफ अमल शुरु कर दें। ऐसा तो खैर जरूरी है मगर हो सकता है कि हमारी बीवी की तरह अक्ल से काम न लें और पहले दिन से ही जंग छेड़ दें। अगर ऐसा हो गया तो बहुत अच्छा होगा और इसका मतलब यह होगा कि नोथा यूनानी दवा ने भी फौरन अपना असर दिखाया है! तुम्हें तो हर हालत में इन बातों का सामना करना ही होगा। क्योंकि बकरे की माँ कब तक खैर मनायेगी, लेकिन तुम बराबर इनकार करते रहना और जो बात सच है कहते रहना कि तुम को शीला से कोई दिलचस्पी नहीं है, बल्कि उलफत सी है। लेकिन वह तो इन बातों को झूठ ही समझेंगी।"

फैयाज ने अपने भाषण को थोड़ी देर के लिए ब्रेक लगादी, फिर छड़ी घुमाते हुए आगे की स्कीम बताते हुए बोला—"इसके बाद उनकी खोज शुरु होगी, हो सकता है मुझसे भी पूछें। देखने को तो मैं तुम्हारा राजदार बनकर जैसे इस बात को छिपाने की कोशिश करूँगा और इस बात पर परदा डालने की

कोशिश करूँगा ताँकि उनको और भी यकीन हो जाय। अगर जरूरत हुई तो कई तरीकों से उन्हें यही खबर पहुँचाई जायेगी। इस तरह उनको सोलह आने तुम्हारे मक्कार, फरेबी धोखेबाज होने का पूरा-पूरा यकीन हो जायगा। और शीला से तुम्हारे मेल-जोल को सही समझ कर वह तुम्हारी तरफ से बिल्कुल निराश हो जायेंगी। उनकी हालत ऐसी हो जायेगी कि तुम लाख पत्थर दिल सही पर तुम्हारा कलेजा मुँह को आ जायगा। याद रखो, उस वक्त अगर तुम बहक गये और इस भाँड़े को फोड़ने की कोशिश की तो जिन्दगी भर पछताओगे। बस कड़े दिल से चुपचाप यह बातें झेल गये तो आखिर में जब उनको मालूम होगा कि तुम सिर्फ क्लब की दिलचस्पियों और ताश वगैरह में ही उलझे हुए हो, फिर देखना उनकी खुशी। और उस वक्त यह भी देखना कि यही नागवार बातें किस तरह खुशी से गवारा कर ली जाती हैं।"

हमने इस लम्बी स्कीम को सुनकर कहा।—"अच्छा भाई! अब खुदा के लिए मुझे बख्श दो। सुनते सुनते कान भी पक गये, सिर चकराने लगा। मगर इसमें शक नहीं कि तुम हो खतरनाक किस्म के आदमी और तुम्हारे काटे का मंत्र नहीं है।"

फैयाज ने कहा—"खैर अब आप मेरी खुशामद न कीजिए। बहरहाल, अब यह तय है कि सुबह आपके यहाँ दावतनामा आ जायेगा और तीसरे पहर शाम को आपकी बेगम मेरे गरीब खाने पर चाय पीने के लिये आयेंगी। आप उनसे छिपकर तशरीफ ला सकते हैं ताँकि खुद सब कुछ देख-सुन लें। अब मैं इजाजत चाहता हूँ, आदाब अर्ज।"

※

८

फैयाज के यहाँ बेगम के पहुँचने से कुछ पहले ही हम पहुँच चुके थे और हमको उस कमरे में बिठा दिया गया था जिसके बराबर वाले कमरे में हमारी बेगम पर बिजली गिराने का प्रबन्ध किया गया था। नाजो से हमारा और

रफ्फो... यह रफ्फो हमारी बेगम के शुभ नाम का सिकुड़ा हुआ रूप है। नाम रफिया है, मगर सब रफ्फो रफ्फो कहते हैं, इसलिए हम भी उन्हें यह कहते चले आये हैं। हाँ तो मैं कह रहा था कि नाजो से हमारा और रफ्फो से फैयाज का परदा न था। अतएव इस ताक-झाँक में कोई हर्ज न था। शुरु-शुरु में कुछ काना परदा दोनों घरों में हुआ, मगर फिर इसको फजूल समझ कर उठा दिया गया।

हमको इस कमरे में बैठे हुए कुछ ज्यादा देर न हुई थी कि बेगम तशरीफ ले आयीं। बड़ी प्यार से वह दोनों आपस में मिलीं। बेगम ने नाजो से कहा—"भाई साहब फैयाज से मेरा सलाम कहला दो ताकि उनको खबर तो हो जाय कि मैं आ गई हूँ।"

नाजो को तो पहले ही पट्टी पढ़ाई जा चुकी थी, कि उन्हें क्या क्या कहना है। अतः उन्होंने बड़ी कटुता से उत्तर दिया—"आपके भाई साहब की खबर मुझ को हो तो कहलवा भी दूँ। न जाने कहाँ गायब हैं। घर तो इसलिये बनाया गया है कि जब उन्हें कहीं ठिकाना नहीं रहता तो मजबूर होकर घर आ जाते हैं। यह भी कोई तुम्हारे मियाँ हैं कि घरवाली की तरह घर में ही रहते हैं।"

बेगम ने हमारे साथ अदृश्य सहानुभूति प्रगट करते हुए कहा—"वह भी कहाँ घर पर रहते हैं। अब तो मुद्दतों से बेचारे का यह हाल है कि दफ्तर चले गए और लौटना हुआ कोई दो ढाई बजे रात को।"

नाजो ने बड़ी शानदार एक्टिंग करते हुए कहा—"और हाँ ठीक तो है। वह अब कैसे घर पर रह सकते हैं...मगर तोबा है। खैर, कोई बात नहीं।"

बेगम ने आश्चर्य से नाजो की ओर देखते हुए कहा—"बात क्या है आखिर तुम कुछ कहते कहते रुक क्यों गयी।"

नाजो ने मानो टालते हुए कहा—"अच्छा पान खाओगी या चाय मंगवाऊँ?"

बेगम ने अपनी ही कही—"पहले यह बताओ कि तुम क्या कह रही थी?"

नाजो ने हँसते हुये कहा—"सचमुच मेरे पेट में कोई बात नहीं पचती। फैयाज साहब ने किस सख्ती से मना किया था कि कभी यह बात जबान पर

न आगे। पर मेरी कमबख्ती है कि यह बात जबान पर आयी भी तो किसीके सामने, जिससे सबसे ज्यादा छिपाने की जरूरत थी।"

बेगम ने अत्यधिक कौतूहल के साथ कहा—"आखिर बात क्या है ? तुमको मेरी ही कसम जो मुझ से कुछ छिपाओ।"

नाजो ने कहा— "अरे अब तो बताना ही पड़ेगा, नहीं तो तुम्हें भला चैन आयेगा। हालांकि ऐसी कमबख्त बात अगर न ही सुनी जाय तो अच्छा है। खैर, तुम चाय पीओ, फिर इतमिनान से बैठ कर बता दी जायेगी हर बात।

बेगम ने अधीरता के साथ कहा—" तुमने तो उलझन में डाल दिया है। अब तो यही जी चाहता है कि पहले वह बात सुन ली जाय फिर बाद में चाय वाय देखी जायेगी।"

नाजो ने उठते हुए कहा—"वाह री आपकी उलझन! कह तो चुकी हूँ कि सब कुछ बता दूंगी। ऐसी भी कौन सी खुशखबरी है कि फौरन ही बता दी जाय! चाय मंगाती हूँ इसके बाद वह मुआ किस्सा भी सुन लेना!"

यह कह कर नाजो तो चाय के प्रबंध के लिये उधर गई और यहाँ बेगम की आँखों मे एक खास सोच-विचार की चमक पैदा हो गयी। सम्भवतः वह नाजो के बताने से पहले स्वयं ही सब कुछ समझने की कोशिश कर रही थी, मगर बेचारी की समझ में कुछ न आता था। खोयी-खोयी सी बैठी हुई थी।

और इधर हम दोनों बड़ी खामोशी के साथ यह तमाशा देख रहे थे। इसमें संदेह नहीं कि इस तमाशे का आरम्भ 'ट्रेजडी' से हुआ था, लेकिन अंजाम की 'कामेडी' हमें मालूम थी इसी लिए बेगम के इस हाल पर हँसी आ रही थी।

बेगम कुछ देर इसी तरह बैठी रही कि चाय आ गयी और नाश्ता चुन दिया गया। मगर बेगम ने बिल्कुल रस्मी तौर पर नाश्ते से दिलचस्पी ली। बेचारी मुंह उठाये हुए कुछ सोच रही थी और हाथों में जिस किसी चीज की प्लेट आ जाती थी मुंह में रख लेती थी। वह तो कहिये कि नाजो ने उनको ठीक-ठीक कर थोड़ा बहुत खिला दिया, नहीं तो वह इतना भी न खाती!

आखिर नाश्ता उठ जाने के बाद फिर यह दोनों इतमीनान से बैठी तो बेगम ने स्वयं ही तकाजा किया—"हाँ, अब बताओ, वह क्या बात थी!"

नाजों ने फिर टालते हुए और और मानो हिचकिचाते हुए कहा—"तोबा है अल्लाह ! कोई बात गो तो नही थी, मैं तो यूँ ही मजाक कर रही थी !"

बेगम ने ज़ोर देते हुए कहा—"ग़लत है ! अब मुझ से छिपाने की कोशिश मत करो । मैं तुम्हारी इन बातों में आने वाली नहीं नहीं हूँ । तुमने वादा किया है तो तुमको बताना पड़ेगा !"

नाज़ो ने कहा—"अरे तुम्हें खुद मालूम होगा, वही शीला का क़िस्सा !"

बेगम ने ताज्जुब से कहा—"शीला...? कौन शीला...?"

नाज़ो ने कहा—"वही जो क्लब में आती है, लेडी डाक्टर शीला ! जिससे पिछले महीने तुम्हारे मियाँ ने मंगनी की है तुम तो ऐसी बन रही हो जैसे कुछ पता ही न हो !"

बेगम ने सन्नाटे में आते हुए कहा—"मंगनी...?चलो हटो, अब चली हैं बेचारी मज़ाक करने ! मेरा मियाँ ऐसा नहीं है कि इस तरह गली गली मंगनी-ब्याह करता फिरे । यह भी कोई बात है भला । सच बताओ क़िस्सा क्या है...?"

नाज़ो ने कहा—"तो क्या सचमुच तुमको कुछ खबर नहीं है ?"

बेगम ने कहा—"मुझ को खबर होती तो मैं तुम से क्यों पूछती ? लेकिन यह खबर उड़ाई किसने है ?"

नाज़ो ने बताते हुए कहा—"बस, तुम इसको उड़ाई खबर समझे जाओ और वहाँ मंगनी के बाद ब्याह भी हो जाये । सच पूछो तो जब फैयाज़ साहब ने मुझ से कहा तो मुझे यक़ीन न आता था । मगर जब रोज़ाना यही चर्चा कि दोनों इलाहाबाद गये, कल यह चिट्ठी शीला ने उनको लिखी, परसों यूँ शीला रुठ गयी थी और और वह मना रहे थे । आखिर में यह भी सुन लिया कि लीजिये मंगनी भी हो गयी दोनों को । अरी बहन, यह क़िस्सा तो कोई चार पाँच महीने से चल रहा है ।"

बेगम ने गौर करते हुए कहा—"हूँ...हूँ । अच्छा तो ज़रा खोलकर बताओ कि यह समझ रही थी कि चार पाँच महीने से कुछ काम ज़्यादा पड़ गया है । तरक्की जो मिली है तो काम में भी तरक्की हो गयी है । आधी आधी रात इसी काम में लगे रहते हैं । मुझे क्या मालूम था कि वहाँ यह गुल खिलाये जा रहे हैं......।"

नाज़ो ने बड़े भेद भरे ढँग से कहा—"गुल खिल भी चुका है अलबत्ता उसकी खुशबू छिपाने की कोशिश की जा रही है। फैयाज साहब तो हर वक्त के देखने वाले, बल्कि शुरू में तो फैयाज़ साहब से भी हर बात छिपायी गयी। मगर वह तो ठहरे ही खोजी पता लगा ही लिया अब जब पता चल ही गया तो उनसे हज़ारों कसमें ली गयी फिलहाल इस बात को छिपाये ही रखो।"

बेगम ने कहा—"क्या नाम बताया तुमने...शकुन्तला ?"

नाज़ो ने कहा—"शकुन्तला नहीं शीला। अरे भाई, यहाँ एक बरिस्टर हैं भारती साहब, उनकी यह लड़की हैं। कुछ ही दिन हुए विलायत से डाक्टरी पढ़कर आयी हैं और लेडी हस्पताल की इँचार्ज हैं। जिस क्लब में यह लोग जाते हैं, उसी को वह भी मेम्बर है। वहाँ का हर वक्त का साथ, फिर पैदा हो ही गयी आपस में दिलचस्पी, । एक दूसरे को चिट्ठियाँ लिखने लगे। क्लब में दोनों जाते, मगर एक तरफ सिर जोड़ कर बैठे रहते। आखिर खुले आम दोनों लैला-मजनू बनकर रहने लगे। सूरत-शक्ल तो मुई की है ही अच्छी। लम्बे लम्बे सुनहरे बाल, बादाम जैसी आँखें और नाज़ुक नाक-नक्शा। फिर यह कि अंग्रेजी पढ़ी और डाक्टरी पास। तुम्हारे मियाँ के साथ उसकी रँगरलिया लोगों को काँटा बन कर खटकने लगी। मगर वह तो जैसे गले का हार हो गयी थी। सुना है कि उसने अपने बाप से साफ कह दिया कि शादी करूँगी तो शौकी के साथ।"

बेगम ने कहा—"यह शौकी कौन है......?"

नाज़ो ने बनते हुए कहा—"हाय मेरे अल्लाह। यह भी नहीं मालूम ? वह प्यार में तुम्हारे मियाँ को शौकी ही तो कहती है। हाँ, तो उसने अपने बाप से कह दिया कि शादी करूँगी तो शौकी से, नहीं तो उमर भर कुवाँरी रहूँगी। आखिर झक मार कर वह लोग भी राज़ी हो गये। सुना है कि तीन सौ रुपये की सिर्फ एक अगूँठी मँगनी को तुम्हारे मियाँ ने दी है।"

बेगम ने समझते हुए कहा—"अच्छा, यह बताओ कि यह किस्सा कब का है...?"

नाज़ो ने याद करने का भी अभिनय करते हुए कहा—"अभी कोई पन्द्रह बीस दिन उधर की बात है।"

बेगम ने कहा—"ठीक कहती हो। मेरे हिसाब से भी इतने ही दिन हुए।"

नाज़ो ने कहा—"अभी तो तुम कह रही थीं कि तुमको कुछ पता ही नहीं है और अब हिसाब भी लगाने लगी।"

बेगम ने कहा—"नहीं। मुझे तो कुछ भी पता नहीं है, मगर पन्द्रह बीस दिन हुए मुझसे न जाने क्या क्या बहाने करके एक हज़ार रुपया ले गये थे। मुझे क्या पता था कि मेरी छाती पर मूँग दलने के लिए मुझ से ही रुपया लिया जा रहा है अलबत्ता यह बात मेरी समझ में न आती थी कि ऐसा भी सरकारी काम क्या हो सकता है कि रोज़ दो-ढाई बजे रात को फुरसत मिलती है। दुनिया के किसी दफ्तर में इतना काम तो किसी से न लिया जाता होगा और फिर उनको देखती थी कि उनको इतनी मेहनत के बावजूद न इस नौकरी से कोई शिकायत है और न काम की ज्यादती से जैसा परेशान होना चाहिये वह परेशान हैं। बल्कि मुझ को तो उनपर हमेशा तरस आता था और मुझे डर था कि अगर यही हाल रहा तो वह अपनी सेहत गवा देंगे, मगर यह नहीं पता था कि वहाँ तो दूसरा ही खेल हो रहा है।"

नाज़ो ने कहा—"ऐसा वैसा खेल। फैयाज़ साहब कहते थे कि दिन भर दफ्तर में टेलीफोन होते हैं। शाम को दफ्तर से लौटने पर उसके यहाँ चाय पी जाती है, और फिर क्लब में उनको न किसी खेल से दिलचस्पी है न ताश से शौक, बस दोनों सबसे अलग कोने में न जाने कौन सी बातें करते हैं कि किसी तरह खत्म होने को ही नहीं आतीं। वह उनसे ऐसे नाज़-नखरे करती है कि देखने वालों को हैरानी होती है। अच्छा, यह तो बताओ कि क्या हाल ही में वह इलाहाबाद गये थे?"

बेगम ने कहा—"हाँ, पिछले ही हफ्ते गये थे, तीन चार दिन के लिये।"

नाज़ो ने कहा—"बस तो ठीक है। असल में वह अपने किसी मरीज़ के साथ इलाहाबाद गयी थी। कोई रानी साहबा थीं। वह चार सौ रुपये रोज़ पर उसको लेकर गयी थीं और उसने तुम्हारे मियाँ को भी साथ ले लिया था। सुना है कि इस दिसम्बर की छुट्टियों में दोनों की सिविल मैरिज हो जायेगी।"

अब बेगम की दशा सचमुच देखने योग्य थी। पहले तो उनके चेहरे पर हवाइयाँ उड़ती रहीं, इसके बाद गर्दन झुकाकर बैठ गयीं। और फिर फैयाज़ की भविष्यवाणी शत प्रतिशत पूरी हो रही थी। यानी बेगम सिसकियाँ भर-भर कर

जिन्दगी नहीं गुजर सकती ! न छानबीन करो न कुछ और । तुम को चुप की दाद जरूर मिलेगी।"

अब बेगम बड़ी खामोशी के साथ आँसू बहाती रही और नाजो उनको इस तरह भयानक दृश्य दिखा दिखा कर मानो दाड़स देती रही। और फैयाज ने हमसे उठने का संकेत किया। हम चुपके से उठ कर फैयाज साहब के साथ बाहर आ गये और दोनों तुरन्त क्लब चल दिये।

क्लब तो जाने का विचार था, लेकिन दिल ऐसा बुझा था कि जाने को दिल न चाहता था। बार बार यही खयाल आता था कि हम तो इस समय जा कर अपने मनोरंजनों में खो जायेंगे और बेचारी बेगम अब अंगारे पर लोटेगी। अतः हमने फैयाज से कहा—"भई, इस वक्त क्लब जाने को जी नहीं चाहता ! बस घर ही जाने का इरादा है।"

फैयाज ने खा जाने के अंदाज से आँखें निकाल कर कहा—"मैं पहले ही जानता था कि तुम इलाज के लायक नहीं हो। तुम ऐसे मरीज हो जो पहली खुराक ही पी कर घबरा जाये। हाँलाकि तुम से पहले ही कह दिया गया था कि तुम को यह सब देखना ही पड़ेगा। अब आप घर जाकर क्या करेंगे ? बेगम से गले मिल कर रोयेंगे ? कान पकड़ कर उठा बैठो करेंगे ? आखिर मालूम तो हो कि इरादा क्या है ? बजाये इसके कि मेरो शुक्रिया अदा करते कि पहली ही खुराक कैसी तेज साबित हुई है। आपने तो बदपरहेजी अभी से शुरु कर दी है। खबरदार जो घर जाने का नाम लिया। चलो सीधी तरह क्लब, अरे मियाँ अभी तो मामला शुरु ही हुआ है आगे आगे क्या होता है ? अभी तो आपको न जाने कैसे कैसे इम्तिहानों से गुजरना होगा—

'अभी इश्क के इम्तिहा और भी है'.... ।"

फिर बोले—"अगर इसी तरह कमजोरी दिखाओगे तो हो चुका काम।"

हमने कहा—"मगर गौर तो करो कि यह कैसी संगदिली और बेरहमी है कि अपने जरा से मनोरंजन के लिए हम उस बेचारी को इतनी सख्त तकलीफ दे रहे हैं।

फैयाज ने कहा—"अपने मन से कहो कि फिलहाल आराम करे। अपनी नस्ली शराफत से कहो कि वह जरा चुपचाप हो कर तमाशा देखे। संगदिली

और बेरुखी तो उस वक्त होती है जब सचमुच तुम उनका हक छीन रहे हो। मगर तुम्हारा इरादा नेक है, तुम सिर्फ एक जरा सी आजादी पा लेना चाहते हो जो हर इन्सान का जन्मसिद्ध अधिकार है। अपने को चोर की बजाय साहूकार बताना है। इसलिए जिस वक्त वह झूमे के नतीजे पर पहुँचेगी तो सब बातें अपने आप ठीक हो जायेंगी। तुम अब गमगीनी के बजाय नतीजे की खुशी पर गौर करो। दवा की कड़ुवाहट के बजाय अपनी अपनी बीमारी के दूर हो जाने के बारे में सोचो। क्या समझे? अब आगे से कभी इस तरह की कमजोरी दिखाई तो बेंच पर खड़े कर दिये जाओगे, समझे।"

*

६

डाक्टर शीला तो सचमुच हमारे लिए मुसीबत बनती जा रही थीं। यहाँ तक कि अब उनके सिलसिले में हमारा राज क्लब में मजाक उड़ाया जाता। उनकी अनुपस्थिति में तो ऐसी बातें कही जाती कि कुछ पूछिये नहीं। लेकिन उनके सामने भी अब खुल्लम-खुल्ला हम पर चोटें होने लगी थीं, मगर उनको इसकी जरा भी परवाह न थी।

अतएव आज भी जिस समय हम क्लब पहुँचे तो यारों ने यही चर्चा छेड़ दी। इन सब में रमेश आगे बढ़-चढ़ कर भाग ले रहा था। वस्तुतः बात यह है कि सबसे अधिक दिलचस्पी इस बात में रमेश को थी कि शीला के सबसे पहले शिकार यही हजरत थे, बल्कि अधिकतर मेम्बरों का तो यह ख्याल था कि बहुत जल्दी ही इन दोनों की शादी हो जायगी। पर रमेश से यह भूल हो गयी कि वह खुद भी भावनाओं की रौ में बह गये, और शीला को पूजना शुरू कर दिया। हालाँकि शीला बड़ी विचित्र किस्म की औरत है, वह खुद तो प्रेम करना चाहती है, लेकिन अगर कोई दूसरा उससे प्रेम करे तो बस उससे दूर भागने लगती है। हम लोग तो उसको परछाई कहते हैं कि अगर उससे दूर भागा जाय तो पीछा करती है। और अगर उसका पीछा किया जाय तो दूर भागती है।

रमेश बेचारा यह भुगत चुका है। पहले तो शीला ने उस पर जान देनी शुरू कर दी। हर समय रमेश-रमेश का ही जाप था। रमेश के साथ रहना, रमेश के साथ उठना-बेठना। सारांश यह कि शीला को रमेश के बिना चैन ही न था। पर जब रमेश भी उसके लिए बेकरार रहने लगा और उसकी बेचैनी का शीला को भास हो गया तो उसने कतराना शुरू कर दिया।

यहाँ तक कि उसने रमेश की तरफ उपेक्षा का भाव दर्शाया। इस बात से रमेश को ठेस पहुँची, वह बहुत दिनों तक शीला से-शीला के प्रति आकर्षित होने के बाद---अब वह यह चाहता था कि यह सम्बन्ध पक्का हो जाये। पर शीला भी अपने इस स्वभाव से मजबूर थी। वह शीला से खेल खेल कर दामन बचाने की अभ्यस्त रही थी। उसने जब रमेश को अपनी ओर बढ़ते हुये देखा तो वह रास्ता काट गयी। और जब क्लब के दोस्तों ने रमेश की वकालत की तो उसने साफ साफ कह दिया कि मैं न जाने क्यों यह सहन नहीं कर सकती कि जिससे मैं प्रेम करूँ, वह भी मुझसे प्रेम करने लगे। यह तो एक तरह की 'तू तू मैं मैं' हुई। मैं ऐसे लेन देन के प्यार की कायल नहीं हूँ।

देखने में शीला की यह तर्क पागलपन-सी मालूम होती थी, पर वह इस सिलसिले में घण्टों भाषण दे सकती थी और रमेश का ऐसा मजाक उड़ाती थी कि बेचारा अपनी जान से तंग आ चुका था उससे हम लोगों ने प्रायः पूछा कि इस बेचारे गरीब ने तुमसे प्रेम किया, यह तो उसकी गलती थी, मगर तुमको जो उससे प्रेम था, वह आखिर क्या हुआ ? इसके जवाब में वह सदा यही कहा करती थी कि मेरे प्रेम को इसका प्रेम खा गया। इसने कदाचित मेरे प्रेम को इतना सस्ता समझ रखा था, कि उसको जैसे इनका प्रेम खरीद सकता था। पर जिस दिन मुझ को उन हजरत के प्रेम का पता चला तो अपने प्रेम को शर्म दिलायी कि देख कमबख्त अपनी आबरू के जाने से पहले डूब मर! अतः वह बेचारा प्रेम जरा गैरत वाला था, इसलिए डूब मरा। और जब प्रेम ही डूब मरा तो हमारा इनका रोमाँस भी खत्म।

रमेश साहब शुरू शुरू में बड़े रंग लाये। अकेले में रोये, एकान्तवासी बने शीला के दर पर धूनी रमायी और न जाने क्या क्या यत्न किये। मगर जब शीला ने बड़े ठंडे दिल के साथ उनको समझा दिया कि बचपना न करो। मैं

अपने दिल से मजबूर हूँ। मैं अब प्रलय तक तुम से दिलचस्पी नहीं ले सकती। तो आखिर धीरे धीरे इनका सब्र आ गया और वह फिर आदमी बन कर क्लब आने जाने लगे।

कुछ दिनों के बाद शीला ने क्लब में फिर खुलेआम यह चर्चा छेड़ते हुए कहा—"हमारे रमेश साहब का रोमाँस भी कैसा शानदार है कि जब चाहा शुरू हो गया और जब इशारा किया खत्म हो गया। ऐसा आज्ञाकारी प्रेम मुश्किल ही से मिल सकता है, मैं तो डर गयी थी कि कहीं एक निर्दोष का खून मेरी गर्दन पर न हो। मगर भगवान का शुक्र है कि आपका प्रेम मौसमी सिद्ध हुआ।"

स्पष्ट है कि इस तरह की चोटों से बेचारे रमेश का क्या हाल होता होगा। लेकिन अब कुछ दिनों से रमेश ने बुद्धि से काम लेकर इस उन्माद को छोड़ दिया था और अपने इस रोमाँस को अपनी हिमाकत (मूर्खता) स्वीकार करके वह खुद भी मजाक में भाग लेने लगा था। लेकिन हमारे सिलसिले में बढ़-चढ़ कर खिल्ली उड़ाने में भी सबसे आगे आप ही थे।

अतः आज भी शीला की अनुपस्थिति से लाभ उठाकर आपने हमको देखते ही कहा—आगये हो मजनू के भाई, मेरे बाद...।"

इखिलाक ने तुरन्त विरोध करते हुए कहा—"यह तो खैर आप गलत कहते हैं। यह भी आपकी तरह मजनू नहीं बना है बल्कि अब तक बड़ी अक्लमन्दी से काम लेकर दूर ही भाग रहे हैं।"

रमेश ने कहा—"अरे यह तो बड़े धूर्त हैं। मेरा हाल देख चुका है न, इसलिए बेचारा चुपचाप रास्ता काट गया है। शीला के अजीब स्वभाव को समझ बूझकर बेचारा अपने मन की बात छिपाए न तो और क्या करे ?"

हमने कहा—"रमेश भैया। खुदा की मेहरबानी से न मेरी आँखें कमजोर हैं, न दिमाग में अब तक फितूर है कि मैं शीला के लिए मन की बात छिपाता या आपकी तरह उनके पीछे उछलता फिरता। मुझे तो इस क्लब ही से सिर्फ उनकी वजह से डर-सा होने लगा है।"

इखिलाक ने कहा—"अरे भाई। कल का किस्सा भी सुना ? उस शीला ने सिर को दर्द चढ़ा दिया। मसऊद के यहाँ दो घंटे तक गाना सुनाया है। समझती यह है कि उससे बढ़ कर गाने वाला शायद कोई और है ही नहीं।"

फैयाज ने कहा'—'जी, आप गाने को कह रहे हैं, अरे साहब वह तो हर-फन मौला' है। (प्रत्येक कला में प्रवीण) उस रोज क्लब के सालाना डिनर में प्रोफेसर मुकर्जी के पीछे पड़ गयी। 'इकनॉमिक्स' (अर्थ शास्त्र) के विषय पर प्रोफेसर मुकर्जी के सामने बड़े-बड़े प्रोफेसर जबान नहीं खोलते। लेकिन लगातार दो ढाई घंटे तक उनका दिमाग ऐसा चाटा कि कुछ न पूछिये। मजा यह कि उनकी बात तो सुनती ही न थी। और न जाने कहाँ कहाँ की हाँक रही थी। भला गजब खुदा का इकनॉमिक्स पर बहस हो रही थी और उन्होंने 'शेर' पढ़ने शुरु कर दिये। बोली, देखिये प्रोफेसर साहब उर्दू का एक शायर कह गया है कि—

'सितारों से आगे जहाँ कुछ और भी हैं,
तेरे सनम कदे के बुत हो गये पुराने'।"

एक जोरदार कहकहा पड़ा। इखिलाक ने हंसी से लोट-पोट होते हुए कहा—"भई, क्या बात कही है। अजीब बात है कि उनको शेर भी आते हैं।"

रमेश ने कहा—"थोड़ी बहुत उर्दू आती है बेचारी को, मगर शेर-शायरी से भी खूब दिलचस्पी दिखाती है।"

इखिलाक बोल पड़ा—"जी, खाक दिलचस्पी है। भला उन्हें क्या पता शेर-शायरी किसे कहते हैं, वह तो डाक्टर ठहरी। उस दिन एक बेतुका सा शेर पढ़ा था कि—

'मीर साहब, जमाना नाजुक है,
दोनों हाथों से थामिये दस्तार।"

सब ने फिर कहकहा लगाया। फैयाज ने कहा—"भाई, सुनो। आज से मैं जरा उनसे कुछ डाक्टरी किस्म की बातचीत करना शुरु करूँगा। सिर्फ इसलिए कि शीला को यह समझाना है कि अगर वह हर विषय पर अपनी राय दे सकती हैं तो हम भी ऐसे गये गुजरे नहीं कि डाक्टरी पर अपनी राय न दे सकें। जरा देखना कैसा तड़पेगी।"

इस प्रस्ताव का हम सबने भी समर्थन किया। अभी इस पर विस्तार पूर्वक बातें न होने पायी थी कि धड़ से हाल का एक दरवाजा खुला। हड़बड़ा कर कुछ कुर्सियां खींची गयी। और न जाने क्या गुनगुनाती हुई डाक्टर शीला प्रगट हो गयी।

रात से पहले हमको देख कर फरमाया—"हल्लो शीकी। मैं तो समझा थी कि शायद आज तुम न आ सको।"

इखिलाक ने कहा—"खैर यह तो कोई बात नहीं है।"

शीला ने एक कुर्सी पर गिरते हुए कहा—"क्या मतलब ?"

रमेश ने कहा—"यानी यही कि आप हमेशा गलत बात ही समझा करती हैं।"

शीला ने समझदारी का प्रमाण देते हुए कहा—"यानी आपको समझने में जो गलती की है आपका उसी तरफ इशारा है न...?"

सब हँस दिये और इखिलाक ने कहा—"भाई रमेश। इस वक्त बात चपक गयी, शराफत के साथ मान लो।"

फैयाज ने अपना नाटक शुरु करते हुए कहा—हाँ, साहबान। तो मैं यह कह रहा था कि 'इकबाल' के बारे में जोश का यह कहना है कि—

'हाय वह नादान शायर हाय वह दाना हकीम।' मैं इस बात को नहीं मानता। जोश ने 'इकबाल' की हिकमत को मान कर उसकी शायरी को पीछे करने की कोशिश की है।"

शीला ने अपने स्वभावानुसार पट से कहा—फैयाज, क्या 'इकबाल' हकीम भी था...?"

कुछ लोगों को तो हंसी आनी शुरू हो गयी पर शीला उसको महसूस न कर सकी। और फैयाज ने बड़ी गम्भीरता से उसका ध्यान अपनी ओर आकर्षित करते हुए कहा—"ऐसा वैसा हकीम। दुनिया भर में मशहूर था। बड़े-बड़े डाक्टर उसका लोहा मानते थे। कई इलाज तो उसने ऐसे किये हैं कि हैरानगी होती है। वह याद है इखिलाक साहब, उसने अमीरातुल्ला खाँ का जो इलाज किया था...?"

इखिलाक ने कहा—"हाँ, साहब। उसने तो कमाल ही कर दिया। किसी की समझ में ही न आता था कि वह कैसे बच गये। मगर सुना है तीन नुस्खों में बिल्कुल ठीक हो गये ?"

फैयाज ने कहा—"गुर्दे में दर्द था जिस की वजह से हमेशा नजला रहता था और आवाज बराबर बैठती जा रही थी।"

शीला ने चौंक कर कहा—'व्हाट नानसेन्स'। यह तुम क्या कह रहे हो ? गुर्दे में दर्द का नज़ले से क्या मतलब और फिर आवाज़ का बैठ जाना।'

फैयाज़ ने कहा—'जी हाँ, बिल्कुल यही शिकायते थी। आखिर इकबाल ने उनको सलाह दी कि वह पानी बिल्कुल न पीये। इसलिए तीन महीने पानी या किसी तरह की कोई तरल चीज़ उनको न दी गयी।'

रमेश ने कहा—'बल्कि सुना है कि दवा तक गोलियों की शक्ल में दी गयी थी।'

फैयाज़ ने कहा—'जी हाँ। इसका नतीजा यह हुआ कि गुर्दे का दर्द बड़ी मुश्किल से गुर्दे से निकल कर पानी की तलाश में पेट तक आ गया ? और अब जो इकबाल ने उसको पेट में देखा तो एक जुलाब दे कर ऐसे उस दर्द को निकाला कि सबको हैरानगी हो गयी।'

शीला ने पागल हो जाने के अंदाज से कहा—'न जाने आज तुम लोगों को क्या हो गया है ? बिल्कुल पागलो जैसी बाते हैं। कोई बात भी तो समझ में आने वाली नहीं है।'

इखिलाक ने कहा—'मेरी मौसी को एक बार यह शिकायत हो गयी थी कि दायें पाँव में दिलके धड़के के दौरे पड़ने लगे। किसी ने कहा गठिया है, किसी ने बताया लकवे का असर है। मगर इकबाल ने देखते ही पहिचान लिया कि यह दिल का धड़का है।'

शीला ने चीख कर कहा—'पाँव में दिल का धड़का ?'

फैयाज़ ने कहा—'क्यों क्या हुआ ? दिल का ताल्लुक (सम्बन्ध) शरीर के हर हिस्से से है या नहीं ?'

शीला ने कहा—'बाबा, यह डाक्टरी है। इसमें दखल न दो तो अच्छा है।'

इखिलाक ने कहा—'यह हम दखल नहीं दे रहे हैं बल्कि यह इकबाल की राय है जिसमें किसी नुकता-चीनी की गुँजाँइश नहीं। आपको मालूम होना चाहिये कि वह इतना बड़ा हकीम था कि हकीम अजमल खाँ या डाक्टर अन्सारी अगर कभी बीमार होते थे तो उससे इलाज कराते थे।'

शीला ने जलकर कहा—'कराते होंगे इलाज। लेकिन यह बात तो तुम पागलों जैसी कर रहे हो कि पांव में दिल का धड़का। जानते हो, तुम एक डाक्टर के सामने बात कर रहे हो।'

फैयाज़ ने उसे और जलाते हुए कहा—'लेकिन जो बात आपकी समझ से बाहर है उसमें आपको दखल देने की आखिर क्या जरुरत है।'

शीला ने कहा—'दखल क्यों न दूं। मैंने डाक्टरी पढ़ी है और इसलिए कम से कम तुम लोगों से ज्यादा हो इन बातों को समझ सकती हूँ।'

रमेश ने कहा—'लेकिन मजबूरी तो यह है कि आपकी समझ में यह बातें नहीं आ रही है।'

शीला ने कहा—'कौन...? ओह, रमेश साहब! आप बोले—खैर आप तो जितने समझदार हैं उसका अंदाज करने से अक्ल भी हैरान हो जाती है। लेकिन इन दूसरे पढ़े लिखे लोगों का यह हाल देखकर तो मुझे सचमुच आश्चर्य हो रहा है। कहीं मेरे आने से पहले कोई दौरा तो नहीं पड़ चुका है......।'

इखिलाक ने बात काटते हुए कहा—"हां तो फैयाज़ साहब आप अपनी बात जारी रखिये......।"

फैयाज़ ने बड़ी खतरनाक किस्म की गम्भीरता के साथ सिगार का कश लेते हुए कुछ कहने को मुँह खोला ही था कि शीला बीच में बोल पड़ी—"जी नहीं। आप इस बहस के आगे फुल-स्टाप लगा दीजिए, और कोई बात कीजिए। बात ऐसी होनी चाहिए जिसमें सब बराबर हिस्सा लें। अब देखिये न शौकी बेचारे चुपचाप मौन-व्रत रखे हुए बैठे हैं और उनको बस यह इन्तज़ार है कि रमी शुरु हो जाये।"

इखिलाक ने कहा—"कान पकड़ लिये साहब, अब तो इनके साथ रमी न खेलेंगे। दस पन्द्रह दिन से जो डाके डालने शुरु कर दिये हैं इनसे तो किसी तरह जीत खत्म ही नहीं होती।"

रमेश ने कहा—"कल आपका दिन ज़रा खराब था, फरमाते हैं कि सिर्फ दो सौ चालीस की जीत रही।'

फैयाज़ ने कहा—"अरे बस। इस तरह बेचारे का काम कैसे चल सकता

है ? इतने ज्यादा खर्चे और हर चीज़ महँगी । अगर इस ज़माने में दोस्तों से हारने में सुस्ती से काम लिया तो बेचारे तो बेमौत मर जायेंगे ।"

हमने सब कुछ सुनने के बाद कहा—"यह तो खैर एक दूसरी बहस है। मगर डाक्टर शीला ने एक अजीब बात फरमाई है कि मैं इस घर में एक ऐसा भोंचू हूँ जिसे इन बातों से कोई लगाव नहीं हो सकता ।"

शीला ने जल्दी से कहा—"नो नो । आप मेरा मतलब नहीं समझे । मैं यह कहना चाहती थी कि आप गुम-सुम बैठे हुए हैं । इसके दो ही मतलब हो सकते हैं कि या तो आप बेहद दिलचस्पी ले रहे हैं और ऐसे तल्लीन हैं कि बिल्कुल ही खो गये हैं । या फिर आपको इस बहस से कोई लगाव नहीं । मगर सवाल तो यह है अब यह बहस कब तक जारी रहेगी ।'

रमेश ने कहा—'भई इखिलाक । मेरा विचार यह है कि आज इन जनाब को भी हारना चाहिये । बल्कि यह जरूर हारेंगे ।'

इखिलाक ने कहा—'तो हो जायें शुरू । निकालो ताश ।'

मेज के चारों ओर हम सब सम्हल कर बैठ गये ! यद्यपि शीला की बातों पर हमें हंसी को इतना दबाना पड़ा था कि पसलियों में दर्द हो रहा था और दम घुटा जा रहा था ! जरूरत इस बात की थी कि शीला को कहीं हटा कर जरा जी खोलकर हँस ले । पर शीला अब वहाँ से कहाँ टलने वाली थी । मजबूरन इसी दशा में खेल शुरू करना पड़ा !

*

१०

आजकल हमारे घर का नक्शा कुछ अजीब सा था

"आँखों में नमी सी है, चुपचाप से वह बैठे हैं,
नाज़ुक सी निगाहों में नाज़ुक सा फसाना है !"

मगर प्रगट रूप में बेगम हम पर खुलने न देती थीं कि उनको सब कुछ मालूम हो चुका है । और इधर हम इस तरह बेखबर बने हुए थे मानो हम क्या

जाने कि क्या हुआ है और क्या हो रहा है। लेकिन उनकी संदिग्ध निगाहों में उनकी निराश मुस्कराहटें और अजीब वीरानी थी। हर ठंडी साँस के साथ अरमानों के खून की बू आती थी। वह जो कुछ न करना चाहती थी, उसी की साकार मूर्ति बन कर रह गयी थी। हर नजर एक शिकायत करती थी और हर अदा पुकार पुकार कर हमको बेवफा कह रही थी।

कमबख्त फैयाज ने हमें एक अजीब उलझन में डाल दिया था। यह सब कुछ खामोशी के साथ साथ देख रहे थे। जानते थे कि हम निर्दोष हैं और बेगुनाह पर ख्वाह-मख्वाह जुल्म ढाले जा रहा है, मगर फिर भी चुप रहने के लिए मजबूर थे। बात असल में यह है कि इस को जोरू की गुलामी कह लीजिए या कुछ और, लेकिन अपनी बेगम से प्यार होना कोई बड़ी बात तो है नहीं और प्यार में बड़े-बड़े अफलातूनों को दबाना ही पड़ता है। हमको भी अपनी बेगम से सचमुच प्रेम था और हम सचमुच उनसे दबते थे, इसलिए उनको भी अधिकार था कि वह हमको दबायें, हम पर शासन करें और हम पर अपना जोर चलायें। अतएव इस नाटक से पहले यही सब कुछ हुआ करता था और आज कल इस नाटक के बाद उनकी तरफ से बड़ी नर्मी विनम्रता और मेहरबानियां हो रही थी, जो अब हमारे लिए कष्टप्रद थी।

बेगम के इस परिवर्तन को महसूस करते हुए भी हम ऐसे बने हुए थे मानो बड़े नन्हें हैं, बड़े भोले हैं। हालांकि दिल ही जानता था जब वह हाथ धुलाने के लिए खुद खड़ी हो जाया करती थीं या दफ्तर जाने के समय टोपी पर बुर्श करने के लिए लपकती थीं। आज तक कभी इस तरह की सेवायें भूल कर भी उन्होंने न की थी। लेकिन अब वह यह अनहोनी बातें भी होने लगी थी। एक नयी बात और नजर आ रही थी। और हर नमाज के बाद हमारे लिए लम्बी लम्बी दुआयें माँगी जा रही थी।

आज बात यह हुई कि फैयाज से हमको यह सूचना मिल गयी थी कि उनकी नाजो हमारे यहाँ आने वाली हैं। दूसरे एक अजीब बात यह भी मालूम हुई कि फैयाज ने अपनी बीवी नाजो को भी असल में अपना राजदार नहीं बनाया है बल्कि उनको भी विश्वास दिलाया है कि हमारा और शीला का किस्सा सही है, बल्कि नाजो से यहाँ तक कहा कि तुमको मुझ पर जो सन्देह थे वह अब

इस तरह पूरे हो रहे हैं कि शौकी और शीला का रोमांस बड़े जोरों पर है और अगर तुमने रफ़्क़ा को सचेत न कर दिया तो बेचारी का घर तबाह हो जायेगा।

मैंने जब फ़ैयाज से इस झूठ का कारण पूछा तो उसने कहा कि ऐसे मामलों में किसी का एतबार न करना चाहिए। मालूम नहीं किसी के मन में आ जाये कि इस भेद को खोल दो। औरतों के पेट में बात मुश्किल ही से ठहर सकती है। मुझे खुद नाज़ो की तरफ से यह विश्वास न था कि वह तुम्हारी बेगम से यह बात छिपा सकेगी। दूसरे एक गहरी हमदर्दी जो इस तरह के अवसरों पर एक औरत को दूसरी औरत से हो जाया करती है, स्वाभाविक तौर पर पैदा न होगी। इसलिए इस सम्भावना के लिए मैंने नाज़ो को भी कुछ नहीं बताया है। और वह भी सच्चे दिल से तुमको बदमाश बेवफा और बड़ा ज़ालिम पत्थर-दिल समझती है, और तुम्हारी तुलना करके मुझे मोतियों में तोलने के योग्य पति समझे हुए है।

बहरहाल, फ़ैयाज से यह मालूम कर लेने के बाद कि नाज़ो हमारे यहाँ आ रही है। हमारे लिए यह ज़रूरी हो गया कि दफ्तर से क्लब जाने की बजाय पहले घर आएँ और अगर अवसर मिल सके तो जरा सुन सकें कि बेगम की अवस्था अब किस मंजिल पर है।

हमको देखते ही बेगम के चेहरे का रँग उड़ गया और चिन्तित होकर हमारी तरफ आते हुये कहा—"क्यों, कैसी है तबियत ?"

हमने सवाल को न समझते हुए कहा—"अच्छा तो हूँ, यह तबियत के बारे में क्यों आपको शक हुआ ?"

बेगम ने लज्जित होते हुए, बल्कि वस्तुतः हमें लज्जित करते हुए कहा—"वे वक्त आ गये इसलिए मैंने सोचा न जाने क्या बात है।"

सचमुच बेचारी बेगम के लिए चिन्तित होने की बात भी थी। छै माह से जो नियम बना हुआ था, आज उसके बिलकुल विपरीत आज यह बात हुई थी। वह स्वाभाविक तौर पर यही समझीं कि शायद तबियत खराब होगी वरना भला यह और इस समय घर पर आते। मगर जब उनको मालूम हुआ कि हम अच्छे खासे हैं तो उनको आज ईद का चाँद निकलने पर जरूर आश्चर्य हुआ होगा।

खैर, हमने कुछ वाजबी सी बातें की और यह कह कर बाहर आ गये कि कुछ सरकारी कागज लेने आ गये थे, तुरन्त वापस जा रहे हैं। अभी हम जाने भी न पायें थे कि नाजा आ पहुँची और हमको घर पर देख कर कहा—"अरे भाई साहब! मैं ने तो सुना था कि आपके बारे में अखबारों में खो जाने का इश्तहार निकल रहा है : पुलिस वालों को हुलिया लिख कर दे दिया गया है, मगर आप तो खुदा की मेहरबानी से यहाँ मौजूद हैं।"

हमने कहा—"यह शायद आपकी कोशिश (आकर्षण) है वरना यहाँ इतनी फुरसत कहाँ कि अपने घर को अपना घर समझे।"

नाजो ने कहा—"आपके सरकारी काम तो हमारी सरकार से भी बढ़ गए। अच्छा तो अब आप जा कहाँ रहे हैं ? बैठिए न दो घड़ी, यह अच्छा तरीका है कि घर में आए मेहमान, और घर से बाहर हो गए मेजबान।"

हमने हँसकर कहा—"अगर तुम भी इस घर में मेहमान हो तो लानत है मेरे मेजबान होने पर। दूसरे आपके तशरीफ लाने का एहसान मुझे तो है नहीं बेगम के पास आई हैं, उन्हीं को शर्मिन्दा कीजिए। मैं माफी चाहता हूँ मुझे बड़े जरूरी काम से फौरन पहुँचना है।"

यह कह कर हम तो बाहर चले गये और यहाँ कॉन्फ्रेंस की कारवाई शुरू हो गई, जिसे सुनने के लिए हम अपना प्रोग्राम स्थगित करके यहाँ आ गये थे। अतः बाहर जाकर बाहर ही से इस कमरे के पीछे वाले कमरे में चुपके से आ गये, जिसमें बेगम और नाजो बैठीं हमारे विषय में बातें कर रही थी।

पहुँचते ही हमें बेगम की आवाज जो कह रही थी—"खैर, यह तो तय है जाते तो क्लब ही हैं। और वहीं से रात को दो-ढाई बजे वापस लौटते हैं चार-पाँच रोज तक मैंने खुद देखा। इसके बाद अपने एक रिश्ते के छोटे भाई इरफान से कहा कि जरा खबर रखें। उसने भी यही बतलाया है कि क्लब के अलावा और कहीं नहीं जाते।"

नाजो ने कहा—"क्या तीर मारा आपने जो यह खोज की। यों तो मैं पहले ही बता चुकी थी कि दोनों क्लब ही में मिलते हैं और सारे गुल वहीं खिल रहे हैं।"

बेराम ने जल्दी से कहा— 'नहीं, वाह तुमने तो कहा था कि शाम को शीला के यहाँ चाय पीते हैं। यह बात तो ग़लत है या हो सकता है अब किसी वजह से न जाते हों। दफ्तर से सीधे क्लब जाते हैं और वहाँ से सीधे घर आते हैं।"

नाज़ो ने कहा—"ज़रुरत तो इसकी है कि क्लब के अन्दर की बातें भी मालूम हों।"

बेराम ने निराशा के साथ कहा—"वहाँ तक भला मेरी पहुँच कैसे हो सकती है। इसके लिये किसी तरह तुम फैयाज़ साहब से रोज़ की खबरें मालूम कर लिया करो। ख़ैर, जो कुछ होना है वह तो होकर ही रहेगा। मगर मैं चाहता हूँ कि कम से कम मुझे सारी बातें मालूम होता रहें।"

नाज़ो ने कहा—"उनसे तो मैं बराबर पूछती रहती हूँ बल्कि वह खुद मुझे बताते रहते हैं। अच्छा तो यह होता कि वह खुद तुम्हारे राज़दार बन जाते और बातें बताते। मगर बात दरअसल यह कि है इनको तुम्हारे साथ भी हमदर्दी है और दोस्त के भेद का भी ख्याल है। वह यह तो किसी तरह नहीं चाहते कि शीला के साथ उनकी शादी हो जाये। वह तो उससे बेहद नफ़रत करते हैं। कल ही बहुत बुरा भला कह रहे थे कि शौकी-शौकी कह कर बेवकूफ बना रही है। और उन हज़रत को जाने क्या हो गया है कि दुनिया से मुँह मोड़े हुए बस उसी को पूज रहे हैं। सब हंसते हैं मज़ाक उड़ाते हैं, आवाज़ें कसते हैं मगर उनको परवाह नहीं है कल कह रहे थे कि मैंने तो बहुत समझाया कि—"देखो तुम नागिन को आस्तीन में पाल रहे हो और यह इश्क का भूत तुम पर सवार है चार दिन की चाँदनी है। विलायत-पलट डाक्टर लड़की है और अगर तुमको उससे वफ़ा की उम्मीद है तो यह तुम्हारी भूल है। सिर पर हाथ रख कर रोना पड़ेगा और बेज़बान बेराम का कहर ऐसा पड़ेगा कि तुमको किसी तरह चैन न आयेगा।' मगर बहिन तुम्हारे मियाँ खामोशी से सब कुछ सुनते रहे और आखिर में सिर्फ इतना कहा कि—

'इश्क पर ज़ोर नहीं है यह, वह आतिश ग़ालिब,
कि लगाये न लगे और बुझाये न बने।"

बेराम ने एक ठंडी साँस भर कर कहा—"ख़ैर, मैंने तो अपना मामला ख़ुदा को सुपुर्द कर दिया है और बहुत कुछ ग़ौर करने के बाद यह फैसला किया है कि इस

में दरअसल उनका कसूर इतना नहीं है बल्कि खुद मुझमें कोई कमी ऐसी है कि कि वह दूसरी तरफ झुक गये हैं। अगर मुझ में कमी न होती तो वह क्यों शीला से इश्क लड़ाते!"

नाज़ो ने त्योरियों पर बल डाल कर कहा—"चलो हटो, आई हैं वहाँ से कमी लेकर, यह भी कोई बात है? रज़िया को तुमने देखा है? कैसी चाँद सी शक्ल है। हज़ार दो हजार खूबसूरतियों में एक है, साँचे में ढली हुई, जो कोई देखे, देखता ही रह जाये! और सुना है उनके मियाँ ने एक काली कलूटी, मोटी-ताजी पहलवान जैसी शक्ल हो जिसे न बात करने का ढंग, न पढ़ी लिखी, और सूरत शक्ल जैसी है मैं कह चुकी हूँ। मगर वह अल्लाह का बन्दा दिन रात उसी के यहाँ पड़ा रहता है और रजिया बेचारी जिसके लिए सब यही कहा करते थे कि मियाँ पाँव धो धो कर पीयेगा, अपनी किस्मत को पड़ी रोया करती है।"

बेगम ने बहुत ध्यान से सुनते हुए कहा—'ऐसे मौकों पर तकदीर को मानना पड़ता है।'

नाज़ों ने कहा—'नहीं जी, यह मर्द होते ही घिनावने हैं। जैसी रुई वैसे फरिश्ते! देख लेना जिस शीला की खूबसूरती की बड़ी धूम है वह भी ऐसी ही कुछ निकलेगी।'

बेगम ने कहा—'मेरा तो खयाल है कि मैंने उसको देख लिया है। परसों जब मैं क्लब की तरफ से वापस आ रही थी तो रिक्शे पर एक औरत क्लब के फाटक तक आयी! ठिगना कद, फूले-फूले से ऊजड़े हुए बाल, साँवला रंग मगर उस पर थोपा हुआ मेक-अप गजब का था! साड़ी बाँधे हुए और हाथ में एक बेग लिये हुए!'

नाज़ों ने कहा—'हाँ, हाँ वही होगी। फैयाज साहब ने भी यही हुलिया उस चुड़ैल का बताया है, अब भला बताओ कि कौन सी परी है वह!

बेगम ने कहा—'मगर मुझे शक है। इसलिए कि शीला की खूबसूरती की बहुत तारीफ सुनी है और यह औरत जिसको मैंने देखा है, खूबसूरती उसके आस पास भी नज़र नहीं आई!'

नाज़ों ने मुँह चिढ़ा कर कहा—'चलो हटो, खूबसूरत नहीं है तो न सही! अगर यह मर्द ऐसी ही अक्ल के न होते तो अपनी बदमज़ाकियों (कुरुचियों)

के नित्य नये नमूने पेश न करते। इन लोगों के न तो सिर में दिमाग़ होता है न चेहरे पर आँखें, बस सीने में दिल की जगह पत्थर रखे जिसको चाहते हैं किस्मत फाड़े देते हैं। रजिया के मियाँ का किस्सा तुम्हें सुना ही चुकी हूँ। शमीम को भी तुमने देखा जिनके मियाँ के पास वह औरत थी मोटी छिपकली जैसी शक्ल देखकर मितली हो और वह याद है तुमको डाक्टर सोहराव की बहिन ज़रीना? हाय हाय कैसी प्यारी शक्ल थी नाज़ुक-नाज़ुक सा नक्शा, नशेमें चूर आँखें, गोरा रंग, कमिनी सी औरत! सूरत देख कर प्यार होता था, मगर मियाँ कमबख्त ने जला जला कर मार डाला। एक औरत डाल ली थी, जो सुना है उन्हीं के किसी चपरासी की बीबी थी! थू-थू...मतलब कहने का यह है कि इन मर्दों से ज्यादा नाकदरा और कौन होगा? हीरे को हमेशा यह कमबख्त पत्थर से तोड़ता है। जरीना बेचारी जल जल कर रही, आखिर टी० बी० हो गयी और इसी डाह में दुनियां से चल बसी और मियाँ को राह पर न ला सकी। हालांकि सुना है बड़े चाव से शादी की थी, पहले बड़ा इश्क बखेरा था, चिट्ठी-बाजी होती थी। ज़रीना ने डाक्टर सोहराब से साफ कह दिया था कि मेरी शादी इन्हीं के साथ कर दो। एक दूसरी जगह बात चल रही थी वहां से छुड़ा कर इनके साथ शादी की गयी थी जिसका यह नतीजा हुआ?'

बेगम ने सब कुछ सुनकर कहा—'यह ठीक है मगर बहिन यह तो ऐसे न थे! मैंने तो इनके बारे में कभी ऐसा शक तक नहीं किया!'

नाज़ो ने जल कर कहा—'बस, तुम यही कहे जाओ! ऐसे नहीं थे तो फिर आखिर ऐसे हो क्यों गये? मछली के बच्चे को तैरना कौन सिखाता है? यह कहो कि यह मर्द सबके सब बने बनाये ऐसे ही होते हैं। कुछ छिपे रुस्तम, कुछ खुले काफिर! और जो इन बातों में नहीं हैं वह या तो फरिश्ता होते हैं या बीमार, समझी!'

बेगम को बावजूद इस दशा के अनायास हँसी आ गयी—'तुम्हारा मतलब यह है कि खुदा न करे मेरे मियाँ अब तक बीमार थे और अब खुदा ने उनको ठीक कर दिया है?'

नाज़ो ने उसी गम्भीरता से कहा—'मैं तो फैयाज़ साहब से बराबर कहा करती हूँ कि या तुम बड़े चालाक हो कि अपनी कोई बात खुलने नहीं देते या

तुम्हारी तबीयत ठीक नहीं रहती वरना मुझे तो किसी मर्द का ज़रा सा एतबार नहीं है। यह सत्तर हांडियो का मज़ा चखने वाले निटते बैठ ही नहीं सकते !'

बेगम ने कहा—'खैर, यह तो है मगर अब यह बताओ कि क्लब के अन्दर की बातें कैसे मालूम की जायें ? बाहर बाहर की यारी जासूसी तो मैं करती रहती हूँ मगर कोई खास बात पता नहीं चली, सिवाय इसके कि वह दफ्तर से क्लब जाते हैं और क्लब से घर आते हैं।'

नाजो ने कहा—'तरकीब बस यही है कि या तो तुम मेरे मियां को खुद बुला कर सारे भेद पूछ लिया करो...'

बेगम ने बात काट कर कहा—'खैर...उनसे सारे भेद....पूछना बहिन तुम्हीं को मुबारक हो।'

नाज़ों ने हंसकर कहा—' ऐ है ! मेरा मतलब यह नहीं है। मैं तो यह कह रही थी कि या तो वह तुमको क्लब की खबरें पहुंचाये या फिर एक और भी तरकीब है कि तुम अपने भाई इरफान को क्लब का मेम्बर बना दो वह रोज़ की रिपोर्ट तुम्हें पहुँचाता रहेगा !'

बेगम ने गौर करते हुए कहा—'ठीक तो कहती हो ! इरफान दर असल मेरे रिश्ते के भाई हैं और मेरे मियां उनको शायद जानते भी नहीं हैं। इसीलिए मैंने उनको जासूसी करने के लिए उनके पीछे छोड़ा था। अब यह ठीक है कि मैं उनको क्लब का मेम्बर बनवाने की कोशिश करती हूँ। तुम अपने मियाँ से उनकी सिफारिश करा देना !'

इस वार्तालाप के बीच ही में वहां चाय आ गयी। और अब हमारा ज्यादा ठहरना भी उचित न था, इसलिए वहां से खिसके !

❋

११

इरफान हमारे क्लब के मेम्बर बन चुके थे और फैयाज की सलाह के अनुसार अब हम दिखाने के लिए शीला के साथ ज्यादा रहने लगे थे। सबसे अलग क्लब के किसी कोने में बैठ शीला के साथ दिमाग खपाते रहे और यह अलग

सिर खा रही थी। ऐसी बुद्धिमान जो इकबाल के हकीम होने का मतलब बनफशा और खत्मी वाली हकीमी समझ ले, किसी तरह की बातचीत के योग्य नहीं हो सकती। पर फैयाज का आदेश यही था कि हम हमेशा की खुशी पाने के लिए थोड़े से समय की इस 'बोर' को सहन करें।

फैयाज का यह कहना था कि इससे दो लाभ होंगे। एक तो यह कि इरफान के द्वारा बेगम तक शीला की बातें पहुँचती रहेंगी। दूसरे शीला से छुटकारा पाने की सूरत भी यही है कि उससे दूर भागने के बजाय उससे घुल-मिल कर रहने की कोशिश की जाये। और जब पूर्णतया यह निश्चय कर लिया जाये कि अब शीला से कोई सरोकार नहीं रखना है तो बस उसी दिन उसपर अपना प्रेम प्रगट कर दिया जाये। जिसका नतीजा वही होगा जो रमेश का हो चुका है।

अतएव इधर तो हम शीला के साथ रहते थे और उधर इरफान साहब क्लब के शेष मेम्बरों के लिए कारटून बने हुए थे। बेचारे सीधे-साधे किस्म के आदमी, ताजा-ताजा ग्रेजुयेट। हाल ही में नहर के विभाग में न जाने किन साहब की मेहरबानी से आपको एक अच्छी-खासी रकम की नौकरी मिल गयी। न आदमियों में अब तक बैठे थे, न सोसायटी में उठने-बैठने की तमीज जानते थे। कालिज में भी दीमक टाइप के लड़कों में से थे, जिनका उद्देश्य सिर्फ किताबों के चाटने के और कुछ नहीं होता। ये लोग आदमी थोड़े ही होते हैं, परीक्षा पास करने की मशीन होते हैं। उनको परीक्षा के कमरे में बिठा कर पर्चा दे दीजिए, ये सवाल हल करके नम्बर लेने के जिम्मेदार होते हैं। बस इसके अलावा न किसी से बात करने योग्य, न दुनियाँ के किसी मामले से उनको मत-लब। भला यह बेचारे क्या जानें कि क्लब में क्या होता है, बल्कि इनका तो यह हाल है कि—

'यह तो बहू बेटियाँ, यह क्या जानें।'

ताश के खेलों में कभी कभी गुलाम चोर या ज्यादा से ज्यादा तुरुप खेला होगा। हालाँकि आजकल ताश के सब नए खेल कालिज के होस्टल से निकलते हैं मगर यह बेचारे तो कालिज में सिर्फ किताबी कीड़े थे, कालिज जाते थे कि पढ़ें और वहाँ से आकर जो कुछ पढ़ा है उसको याद करें। उनको क्या मालूम था

कि भाग्य में क्लब की मेम्बरी भी लिखी हुई है। मगर बहन की हमदर्दी से मजबूर थे। लेकिन अब यह हाल था कि क्लब की हर चीज से भड़कते थे।

कोई उनसे बात करता तो आप किसी दूसरे की आड़ में आ जाते, ताश खेलने को कहा जाए तो अँगूठा चूमने लगते। शेर-शायरी की बात हो तो गुम-सुम बैठे रहते। सवाल यह था कि आपने क्लब में पधारने का क्यों कष्ट किया? इसका जवाब स्वयं आपके पास भी न था।

रमेश और इखिलाक़ उनको बेहद तंग करते थे। सम्भवतः फैयोज ने रमेश और इखिलाक से यह सारा किस्सा कह दिया था, यही कारण था कि आजकल जहाँ शीला के साथ हम किसी तरफ गये, तो इरफान के सामने यह सब मिलकर हमारे इस रोमाँस की ऐसी चर्चा छेड़ते थे कि बस मानों हम दोनों की आज कल में ही शादी होने वाली है। इरफान इस चर्चा को बड़ी दिलचस्पी से सुनते थे और सिर्फ यही एक विषय ऐसा था कि वह कभी कभी एकाध सवाल कर लिया करते थे, चाहे वह कैसी ही मूर्खतापूर्ण क्यों न हो।

शीला से आप बेहद जलते थे। एक ना इसलिए कि वह आपकी बहन की सौत होने वाली थी, दूसरे शीला उनको छेड़ती भी बहुत थी। आज उसने इनको घेरकर आग्रह शुरू कर दिया कि आइये ताश खेलिए।

इरफ़ान ने लड़कियों की तरह शर्माते हुए कहा—"मुझे तो खेलना आता ही नहीं।

शीला ने कहा—"कोई मुश्किल खेल नहीं है, मैं थोड़ी ही देर में सिखा दूँगी।"

इरफान साहब ने एक तरफ सिमटते हुए कहा—कौन सी अच्छी बात है जो सीखी जाये।"

शीला ने कहा—"अच्छा, तो फिर हम दोनों गुड़िया खेल करें यहाँ... ?

इरफान तो शर्मा कर चुप हो गये। और बाकी सब हँस दिये।

इखलाक ने कहा—"सचमुच, इरफान साहब। हम लोग बेहद शर्मिन्दा होते हैं कि आखिर आप के लिए दिलचस्पी का क्या सामान जुटायें। ताश आप नहीं खेलते, बिलियर्ड टेबिल पर आप नहीं जाते, टेनिस से आपको लगाव नहीं।

अगर किसी खास खेल या किसी खास तफरीह की जरूरत हो तो फरमा दीजिए न ।"

इरफ़ान ने पहले तो जवाब देना ही न चाहा, इसके बाद बड़ी मुश्किल से इतना ही कह सके—"जी नहीं, बस काफी है।"

शीला ने उनकी ओर ध्यान से देखते हुए कहा—"क्या मतलब हुआ आप का ? क्या चीज काफी है...?"

इखिलाक ने कहा—"आपका मतलब शायद यह है कि आप के लिए फिलहाल यही काफी है कि आप दूसरों की दिलचस्पियों को ही देखते रहें। दिलचस्पी पाने का यह तरीका भी है कि किसी का घर जले और कोई तापे।"

इरफान ने जल्दी से कहा—"जी नहीं। मेरा मतलब यह नहीं है...कि खैर कुछ नहीं।"

रमेश ने कहा—"आखिर इसमें शर्म की कौन-सी बात है, कह दीजिए न। अब तो आपकी उमर शर्माने-लजाने की नहीं है। भगवान की कृपा से आप तो समझदार हैं। अपनी भलाई-बुराई को समझ सकते हैं।"

फैयाज ने कहा—हाँ, हाँ, माशाअल्लाह समझदार और बालिग है।

इरफान का शर्म के कारण या गुस्से से चेहरा लाल हो गया। उसने एकबार साहस करके न जाने क्या कहना चाहा, पर बेचारे सिर्फ यह कह सके—"मैं ताश-वाश खेलना पसन्द नहीं करता।"

शीला ने कहा—"यह तो मालूम हुआ, मगर सवाल यह है कि फिर आप पसन्द क्या करते हैं...?"

रमेश ने कहा—"खैर, आप यह बात न पूछिये। न मालूम क्या कह बैठें।"

इस पर सब को अनायास हंसी आ गयी।

इखिलाक ने कहा—"आखिर आप लोगों को इरफान साहब की दिलचस्पी की ऐसी खोज क्यों है ? हर आदमी निजी तौर पर अपनी दिलचस्पी पाने के तरीके जानता है।"

हमने कहा—"तरीकों से बहस नहीं। लेकिन अगर दिलचस्पी का पता चल जाता तो अच्छा था।

शीला ने कहा—जी नहीं ! बहुत सी दिलचस्पियाँ ऐसी होती हैं जिसमें से किसी दूसरे का हिस्सा लेना बर्दाश्त नहीं किया जा सकता।"

रमेश ने कहा—"उदाहरण के तौर पर...।"

फैयाज बीच में बोल पड़ा—"आप शौकी और शीला के मेल-मिलाप को देखें, अगर हम कहेंगे तो शिकायत होगी।"

शीला ने तड़प कर कहा—"मिस्टर फैयाज! अब आप व्यक्तिगत चोट कर रहे हैं! शौकी मेरा दोस्त है और मैं आजाद हूँ कि अपने दोस्त के साथ दोस्ती करूं। इसमें किसी को शिकायत की क्या बात है...?"

फैयाज ने कहा—"किसी और का तो क्या, आप ही को शिकायत पैदा हो गयी। खैर, मैं अर्ज कर रहा था कि आप इनकी दिलचस्पियों में हिस्सा लेने पर क्यों तुली हैं!"

शीला ने कहा—"कोई जबरदस्ती थोड़ी है। अगर इरफान साहब खुद हिस्सा देंगे तो ले लिया जायेगा वरना उनकी मर्जी है हमारा क्या जोर है।"

इरफान ने साहस कर के कह ही दिया—"मेरी दिलचस्पी यह है कि मैं सबकी दिलचस्पियाँ देखता रहता हूँ।"

इखिलाक ने कहा—"क्या खूब शेर कहा है अपने—

"हम देखने वाले को नजर देख रहे हैं!"

रमेश ने इरफान के समीप खिसकते हुए कहा—"अच्छा, यह बताइये इरफान साहब कि आपको कभी किसी से इश्क हुआ है... ?"

इस बेतल्लुफ सवाल पर सबको हंसी आ गयी। और इरफान तो सचमुच लड़कियों की तरह शर्मा कर फैयाज के पीछे छिपने की कोशिश करने लगे।

शीला ने रमेश को मानो डाँटा—"यह क्या बेहूदा सवाल है! वह बेचारे ऐसी बातें क्या जाने! इनकी पढ़ाई-लिखाई आप लोगों की तरह नहीं हुई है कि जिसे देखिये मजनू फरहाद बना फिर रहा है!"

रमेश ने कहा—"माफ कीजिएगा, मुझे नहीं मालूम था कि इन्हें पढ़ाने-लिखाने में आप का भी हाथ है।"

अब फिर एक जोरदार ठहाका लगा। और इरफान ने वहाँ से खिसकने की कोशिश की तो इखिलाक ने उनको रोका—"यह आप कहाँ जा रहे हैं? अरे भाई, तुम तो सचमुच लड़कियों की तरह शर्माते हो! आखिर यह क्या हरकत

है ? पढ़ लिख कर कालिज से निकल आये, इतने अच्छे सरकारी नौकरी पर हो और यह हाल है।"

शीला ने कहा—"तो सरकारी नौकरी वालों के लिए यह तो जरूरी नहीं कि वह इश्क भी करता फ़िरे।"

रमेश ने कहा—"लेकिन यह तो जैसे जरूरी है कि यह लड़कियों की तरह बात बात पर दुपट्टे से मुँह छिपा ले, लजा जाये, शर्म से बल खा जाये!"

इखिलाक ने इरफ़ान को अपने पास बिठाते हुए कहा—"अब आप को चाहिये कि यह बचपना छोड़ दे और एक जिम्मेदार इन्सान की तरह जरा रख-रखाव से रहे। अगर आप का यही हाल है तो समझ में नहीं आता कि आप अपनी सरकारी जिम्मेदारियाँ कैसे पूरी करते होंगे। इस तरह तो आप के नीचे काम करने वाले भी आपको उगलियों पर नचा कर रख देंगे और आपके आफिसर आपके बारे में न जाने क्या राय कायम करते होंगे!"

इरफान ने इखिलाक को सचमुच अपना हमदर्द समझ कर कहा—"जी हाँ, मगर......"

रमेश ने कहा—"मगर शर्म आती है।"

शीला ने डाँटा—"यह क्या हरकत है रमेश साहब आप की! वह बेचारा एक सीधा सादा आदमी है तो आप उसको लगातार छेड़े ही जा रहे हैं।"

रमेश ने कहा—"लीजिए भाइयों। पत्र मिला, समाचार मालूम हुआ, शेष समाचार यह है कि डाक्टर शीला के इस पक्षपात को मेरा तजुर्बा सूँघ रहा है और कह रहा है कि इसमें वफा की बू आ रही है।"

सब हँस दिये। लेकिन शीला ने फिर डाँटा—"रमेश, तुम तो सचमुच पागल होते जा रहे हो। मैंने तुम से हजार बार कह दिया है कि तुमको बात करने का ढँग नहीं है तो चुप रहा करो।"

रमेश तो शिला के सिलसिले में बेगैरत हो ही चुके थे, तुरन्त बोले—"मैं इसलिए चुप नहीं रहता कि फिर इस रहे सहे ढँग में भी मोर्चा लग जायेगा।"

इखिलाक ने पूर्ववत् इरफान को समझाते हुए कहा—"आखिर आपको दुनिया के किस काम से दिलचस्पी है, कभी कोई खेल खेला है।"

इफरान ने सोचते हुए कहा—"जी हाँ, मुझे कुछ दिलचस्पी शिकार में रही है।"

फैयाज ने कहा—"खैर, इससे तो आप हम जानवरों को बचाये रखियेगा... कुछ और फरमाइये।"

इरफान ने कहा—"और कभी कभी शतरँज खेल लिया करता था।"

शीला ने उछल कर कहा—"ओह शतरँज! आई लव इट, मुझे बहुत पसन्द है इखिलाक सचमुच शतरंज का इन्तजाम कर दो, मैं इरफान के साथ खेला करूँगी।"

इखिलाक ने कहा—"बहुत अच्छा शतरँज तो आ जायेगा मगर मिस्टर इरफान मैं अब आपको राय दूँगा कि आप कभी कभी ताशों से भी दिल बहला लिया कीजिए! दूसरी बात यह है कि हँसा भी कीजिए! यह आपकी लाज-शर्म चाहे कैसी ही शरीफाना क्यों न हो, मगर आप फिर भी मर्द हैं।"

रमेश ने हँसी के मारे लोटकर कहा—"फिर भी इस बात की तारीफ नहीं की जा सकती। क्या खूब कहा है—आप भी मर्द हैं।"

इस अवसर पर शीला को भी हँसी आ गयी। और उसने बात टालने के लिए कहा—"यह रमेश तो सचमुच पागल होने वाला है। बड़े खतरनाक लक्षण हैं। जरा देखिए तो सही, कैसे पागलों की तरह हँस रहा है।"

रमेश ने हँसी पर काबू पाते हुए कहा—"देखिये! आपने फिर मुझसे इस प्यारे ढंग से बातचीत की, जिससे मुझको फिर कुछ प्रेम की गलत फहमी पैदा हो जायेगी।"

शीला ने कहा—"गलत फहमी क्या? यह तो सच्चाई है। प्रेम तो मैं अब भी तुमसे करती हूँ लेकिन साथ ही साथ यह भी प्रार्थना करती रहती हूँ कि कहीं तुम भी प्रेम न करने लगो।"

इखिलाक ने इरफान की ओर फिर ध्यान दिया—"हाँ तो बर्खुरदार! मैं यह कह रहा था कि आप क्लब के मेम्बर बने हैं तो क्लब की दिलचस्पियों, चहल-पहल में भी हिस्सा लें। एक तो यह क्लब वैसे ही खुश्क किस्म का क्लब है यहाँ की पहली शर्त यह है कि शराब पीने वाले क्लब के मेम्बर नहीं बन सकते। इसलिए हमारे इस क्लब को कोई गर्ल्स स्कूल कहता है, कोई सन्यासियों का अड्डा

कहता है, कोई इसको यतीमखाना कहता है। कहने से मतलब यह है कि सिर्फ शराब का प्रतिबन्ध न होने से ऐसे नाम रखे गये हैं। अगर आप की तरह कुछ मेम्बर शायद और भी ऐसे हो गये तो हो सकता है इस क्लब का नाम हरम सराय हो जाये। इसलिए मेहरबानी करके ताश का खेल सीखिये और ज़रा मुँझसे बोला कीजिए न।"

रमेश ने कहा—"अब तो आपको कई दिन हो चुके। आखिर यह लज्जा तो नई नवेली दुलहनें भी कुछ दिन के बाद छोड़ देती हैं।"

इखिलाक ने ताशों का पैकिट सम्हालते हुए कहा—"बस, अब हो चुकी शर्म! आज ही से शुरु कीजिए, इन्शाअल्लाह कुछ दिनों के बाद आप ही हमारे क्लब के सब से बड़े ताश खेलने वाले मेम्बर होंगे।"

इरफान कुछ हिचकिचाये, कुछ इनकार करने का निश्चय किया, पर जब इखिलाक ने उनको रमी का पाठ पढ़ाना शुरु किया तो बड़े आज्ञाकारी बन कर समझने भी लगे।

इखिलाक ने पहले तो उनको समझाया कि इस तरह पत्ते बनाये जाते हैं, इस तरह पत्ते फेंके जाते हैं और इस तरह दूसरों के फेंके हुए पत्तो को देखा जाता है और क्या क्या सावधानियाँ रखनी पड़ती हैं। इसके बाद कहा—"अब आप देखिये! एक आध खेल हम लोग खेलते हैं। फिर आपका इम्तिहान लिया जायेगा।"

इरफान बड़े आज्ञा कारी बने दिलचस्पी से देखने लगे और खेल शुरु हो गया।

*

१२

खुदा बचाये इस कमबख्त फैयाज़ से! न जाने किस समय वह बातें सोचा करता था जो कम से कम हमारी समझ में आ नहीं सकती। एक दिन बैठे बिठाये कहने लगे—"सुना है तुमने वह मिसरा—

"शिकार खेलने आये, शिकार हो के चले"

हमने आश्चर्य से कहा—"क्या मतलब ?"

कहने लगे—"मैं यह सोच रहा हूँ कि आपके जो साले साहब हैं न इरफान, उनका क्या बन्दोबस्त किया जाये !"

हमने और भी आश्चर्य से कहा—"कैसा बन्दोबस्त...? आखिर आप पहेलियाँ क्यों बुझा रहे हैं। साफ साफ क्यों नहीं कहते, क्या बात है ?"

हमको समझाते हुए बोले—"भई उसे तुम्हारे लिये क्लब में तैनात किया गया है न तुम्हारी बेगम की तरफ से, तुम्हारी जासूसी करने ?"

हमने समझने की कोशिश करते हुए कहा—"हाँ हाँ...तो फिर ?"

फैयाज़ ने कहा—"फिर यह कि उसको भी तो कुछ सज़ा या जुरमाना हो मिलना चाहिये ! खैर, सज़ा देने वाला तो खुदा है, मगर कुछ न कुछ मजे तो हमको भी उसे चखाना चाहिये।"

हमने पूर्ववत् आश्चर्य से कहा—"तो आप क्या करने का इरादा करते हैं उसके साथ।"

फैयाज़ ने कहा—'इरादे तो बहुत कुछ हैं ! लेकिन इन्सान का हर इरादा पूरा नहीं हुआ करता, फिलहाल तो इरादा यह है कि क्यों न उसको शीला के इश्क के चक्कर में घुमाया जाये ! वह हज़रत नमाज़ बख़्शवाने आये हैं, रोजे उनके गले में डाल दिये जाये ! फिर याद करेंगे उमर भर बच्चू !'

हमने सम्हल कर बैठते हुए कहा—"यार ! है तो बड़ी दिलचस्प तरकीब और तुम्हारी मामूली से मामूली तरकीब वह खतरनाक रँग लाती है कि मैं क्या कहूँ !'

फैयाज़ ने बड़ी गम्भीरता से कहा—"अब सिर्फ मुझे यह सोचना है कि अगर इरफान को शीला की तरफ भेज देता हूँ तो इसका कोई असर असल मामले पर तो नहीं पड़ता ? यानी वह इश्क के चक्कर में रहे तो अपनी जासूसी के कमाल जरा कम कर सकेंगे। हाँलाकि इस वक्त इसी की जरूरत है कि वह हजार अपनी बहिन की यानी आपकी बेगम को रोज की रीपोर्ट बराबर पहुँचाते रहें ताँकि हमारी खिचड़ी उसी रफ्तार से पकती रहे, जिस रफ्तार से पक रही है !"

हमने कहा—"यार एक बात बताओ कि यह खिचड़ी तुम कब तक पकाओगे मेरा खयाल यह है कि अगर बेगम को इस वक्त मालूम हो जाये कि मैं सिर्फ

ताश ही खेलता हूँ और बाकी सब बातें गलत हैं तो वह बड़ी खुशी के साथ ताश खेलने की इजाजत दे देगी।"

फैयाज ने दाँत पीस कर कहा—"धामड़ बेवकूफ! यार तुम मेरे सामने से दूर हो जाओ, सख्त गुस्सा आ रहा है। न हुए तुम मेरी औलाद, खुदा की कसम इतना मारता इतना मारता कि आगे के लिए सारी नस्ल गंजी हो जाती। हजार बार कह चुका हूँ कि भाई जब तुम्हारी समझ में एक बात आ ही नहीं सकती तो बिना वजह टाँग न अड़ाया करो। तुम दर असल इन पेचीदा गुत्थियों को सुलझा ही नहीं सकते। इसके लिए दिमाग की जरूरत है, लेकिन तुम्हारे दिमाग में एक तो पहले ही घास भरा हुआ था और उसको भी तुम्हारी बेगम इस हद तक चर गयी है कि तुम से अब किसी समझदारी की उम्मीद कम से कम मुझको तो हो ही नहीं सकती।"

हमने कहा—"और मेरा खयाल यह था कि अब भेद खोलने का वक्त आ चुका है।"

फैयाज ने गुस्से से दाँत पीस कर कहा—"आप का खयाल कच्चा है और आपकी अक्ल भी खराब है आप पूरे निजी तौर पर चुगद हैं। यह आखिरी बार आपको समझा रहा हूँ, इसके बाद आपको मालूम होना चाहिये कि यह स्कीम आपके गले इस बुरी तरह पड़ेगी कि फिर मरने तक सफाइयाँ पेश करते रहना मगर जान न बचेगी।"

हमने फैयाज की भयंकरता को महसूस करते हुए कहा—खुदा के लिए मेरे हाल पर तरस खाओ, मैं तुम्हारी हरकतों को खूब समझता हूँ यह तुम्हारे बायें हाथ खेल है कि इसी मजाक को सचमुच ही पेश करके तुम मेरी जिन्दगी को हराम कर सकते हो।"

फैयाज ने फिर अपनी नार्मल हालत पर आकर कहा—"बस, तो फिर जो कुछ मैं कह रहा हूँ उसको खूब गौर से सुना करो। अपनी सोची लगी अक्ल को बीच में लाने की कोशिश कभी मत करो, और इस बात को गिरह में बाँध लो कि अगर तुमने मेरी सलाह के बिना जान बूझ कर या अनजाने में कभी इस भेद को खोलने की कोशिश की तो मैं तुम्हारा सत्यानाश करके रख दूँगा

और ऐसी जगह मारूँगा जहाँ पानी भी न मिले। फिर वही जो आपकी बेगम है न आप के लिए मौत के फरिश्ते का काम देगी।"

हमने कानों पर हाथ रखकर कहा—"अच्छा भाई, दिल से तोबा करता हूँ कि आगे से कभी चूँ भी न करूँगा। आप अपनी स्कीम बताइये।"

फैयाज ने लीडरों और विचारकों की तरह पहले आकाश की ओर देखा, दाँतों में अगुली दबायी, कुछ मुँह टेढ़ा किया, एकाध बार हाथ चलाये और फिर इस तरह कहना शुरू किया मानों कोई भविष्य-वाणी कर रहा हो—"किस्सा असल में यह है कि वह जो तुम्हारा साला इरफान है, उसके आस-पास तो क्या दूर तक इश्क के कीटाणु नजर नहीं आते। इश्क करने वालों में जो एक खास तरह की बेवकूफी होती है वह तो उसमें पैदाइशी तौर पर है, मगर इसके साथ ही साथ इश्क करने वालों के लिए जो दूसरी बातें भी होनी चाहिये, उसका उनके यहाँ कोई नाम-निशान नहीं। इश्क की फिलासफी को मेरे ख्याल में तुम खुद भी नहीं समझ सकते हो। यह कुछ एलक्ट्रिकसिटी तरह की चीज है। यानी निगेटिव और पाजिटिव दो तरह के तारों का मिलना करेन्ट पैदा करने के लिए बेवकूफी और खूबी दोनों का होना जरूरी है। अगर बेवकूफी ही बेवकूफी है तो आदमी घुगद बन कर रह जाता है। अगर खूबी ही खूबी है तो आदमी या तो पढ़ लिख कर वकील या बरिस्टर हो जाता है। और न पढ़ सका तो पुलिस में भरती हो जाता है लेकिन अगर यह दोनों चीजें बराबर मौजूद है तो उसका आशिक (प्रेमी) होना जरूरी है। आपके इन साले साहब का परीक्षण करने के बाद मैं इस नतीजे पर पहुचा हूँ कि यह जिस आसानी से आपके साले बन गये, उसी मुश्किल से किसी को अपना साला बनायेंगे। साला बनाने के लिए जिस निजी जौहर की जरूरत होती है वह उनमें कन्ट्रोल रेट पर तो क्या ब्लेक मार्केट में भी नहीं मिल सकता।"

हमने फैयाज की इन बातों से तंग आकर कहा—"खुदा के लिए मेरे हाल पर रहम करो। तुम तो अपनी काबलियत बखेर रहे हो और मेरा यहाँ दम निकला जा रहा है।"

एकदम से बरसते हुए बोले—"काबलियत बखेर रहा हूँ, इसका क्या मतलब? आपको मालूम होना चाहिए जनाब कि आपका यही दोस्त जो आपके

सामने खड़ा है, दो दोस्तों का घर बरबाद कर चुका है, जरा से चुटकले में तो मियाँ बीबी में तलाक की नौबत आ चुकी है इसलिए अगर आप को जरा भी शक हो तो हाथ कंगन को आरसी क्या ? आजमा कर देख लीजिए। न भाभी की तरफ से रोटी कपड़े का दावा कराया तो मेरा नाम बदल दीजिए।"

हमने अपनी जान से तंग होकर कहा—"तुम अपनी स्कीम बताओगे या दहला दहला कर ही मुझे मार डालने का इरादा है ?"

फैयाज ने मजे से कुर्सी पर पाँव पसारते हुए सिगार सुलगाया और उसका एक लम्बा कश लेकर उसने धुंआ हमारे चेहरे पर छोड़ दिया, फिर बोला—"हाँ तो बस मुझको एक यही फिक्र है कि बेवकूफी और खूबी का पलड़ा कैसे बराबर करूँ। बहरहाल शीला के अंदाज से यह मालूम होता है कि वह उनकी तरफ बड़ी आसानी से अपना दिल उछाल सकती हैं, इसलिए फिलहाल आपके साले को न छेड़ा जाये बल्कि शीला को ही इस बात के लिए तैयार किया जाये कि उनके इश्क में मरना शुरु कर दे। खुदा की मेहरबानी से उम्मीद तो यह है कि अगर यह साहब जाये जैसा कि तुम कहते हो तो सचमुच ही बालिग हो चुके हैं तो इन पर जरुर असर होना चाहिए। और अगर ऐसा न हुआ तो फिर अल्लाह मालिक है। हम निजी तौर पर खुद तो बहुत कम इश्क के चक्कर मे पड़े, मगर खुदा झूठ न बुलवाये इन्हीं हाथों से सैकड़ों के इश्क को पाल पोस कर बड़ा कर के विदा किया है। क्योंकि भानमती साहब हमारे खाँस पूर्वजों में से थे, जिसके बारे में आपने सुना होगा कि—"कहां की ईटें कहां को रोड़ा, भानमती ने कुनबा जोड़ा।"

फिर छड़ी से मेज को बजाते हुए बोले—"हाँ, तो मैं यह कह रहा था कि आज कल के नौजवानों में इश्क की रूह फूकँना कुछ ऐसा ज्यादा मुश्किल काम नहीं है। शीला तो वैसे ही इश्क के मामले में एवर रेडी (हर समय तैयार) टाईप की औरत है अगर आपके साले साहब क्लब के लोगों की चोंटें कुछ दिन सह गये तो फिर बचकर कहाँ जाते हैं ? इन सब के लिए जरा वक्त और इतमिनान की जरूरत है। आपने अगर जल्दबाजी से काम लेने की कोशिश की तो मेरी यह शानदार स्कीम मेरा तो कुछ बिगाड़ेगी नहीं बल्कि आपको ही ले डूबेगी।"

हमने बड़ी श्रद्धा से कहा—"हाँ, डायरेक्टर साहब मैं तो अपनी किस्मत आपको ही सौंप चुका हूँ, अलबत्ता शर्त यह चाहता हूँ कि सिर्फ मरने से कुछ देर पहले मेरे और बेगम के बीच सफाई हो जाये तो अच्छा है।"

फैयाज़ ने गम्भीरता से पहेलू बदलते हुए कहा—'तुम चूँकि योग्य आदमी हो इसलिए तुम यह चाहते हो! अगर ज़रा भी गहराई में जाते तो तुम कभी ज़िन्दगी में सफाई करने की तमन्ना न करते। ज़रा सोचो तो कि जब तुम मरोगे और एकाएक तुम्हारी बेगम को खबर होगी कि उनके मरने वाले शौहर के बारे में जो बातें मशहूर थीं, वह कितनी ग़लत था, तो वह जैसी तड़प तड़प कर रोयेगी। एक एक को बतायेगी कि हाय मरते दम तक अपना खूबियाँ छुपाई, अपनी नेकियो पर हमेशा परदा डाला। सुननेवाले सुनेंगे और कहेंगे कि अच्छे लोग ऐसी ही होते हैं। हो सकता है कि इसी सिलसिले में तुम्हारा उर्स (श्राद्ध) होने लगे, कौव्वालियाँ हों, चादरें चढ़े, गागरे उठे और औरतें अपने बदमाश शौहरों को तुम्हारी कब्र की धूल प्रसाद समझ कर चढ़ाया करें, मन्नते मानें कि 'या' शौहर शाह! अगर मेरा मियाँ राह रस्ते पर आ गया मैं फूलों वाली चादर चढ़ाऊँगी, तेल और गुड़ के गुलगुले लेकर बड़ी भयानक आवाज़ के कव्वालों के साथ आपके मज़ार तक आऊँगी......!"

हमने हँसते हुए कहा—"मसखरे! अब अपना यह स्वाँग खत्म करेगा या नहीं? मेरा मतलब तो सिर्फ यह है कि अपनी स्कीम को इतना न बढ़ाओ कि समेटने में मुद्दत लग जाये।"

फैयाज़ ने लापरवाही से मुँह चढ़ा कर कहा—"क्या बच्चों जैसी बातें करते हो! यह तो अपने हाथ का काम है। जहाँ पर कहो किस्सा खत्म कर दिया जाये, लेकिन मैं चाहता हूँ कि इरफान और इश्क की दिलचस्पी भी तुम्हें दिखाऊँ मैं कल ही इसका बन्दोबस्त करूँगा। यह बहुत ज़रूरी है कि इरफान और शीला को इसी लपेट में ला कर ठिकाने लगा दिया जाये।"

हमने कहा—"हाँ, हाँ! तो दिलचस्पियाँ भी बनाये रखो और हालात को भी काबू से बाहर न होने दो।"

अपनी छड़ी उठा कर फैयाज ज़मीन पर मुर्गे की तस्वीर बनाते हुए बोले—"इन सब बातों की फिक्र आप से ज्यादा मुझे है कम नहीं। क्योंकि इसको

ही मैं अपना फन (कला) समझता हूँ और कोई फनकार (कलाकार) फन के सिलसिले में कभी भी अपनी फनी (कलात्मक) काबलियत की बरबादी को बर्दाश्त नहीं कर सकता। खैर, आप खामोशी के साथ तमाशा देखते रहिये। मैं कल ही 'क्यूपिड' के तरकश का एक तीर इरफान के लिये छोड़ूंगा। अच्छा भाई अब तुम घर जाओ. क्योंकि मैं चुपचाप अपनी स्कीम पर गौर करना चाहता हूँ। क्योंकि किसी बेवकूफ आदमी की मौजूदगी में ऐसी स्कीम पर गौर नहीं किया जा सकता, इसलिये, आप तशरीफ ले जाइये।"

❀

Pil 8

१२

इरफान साहब हमारे यहाँ किस समय जाते थे कब अपनी बहिन को रिपोर्ट देते थे और किस समय हमारे विरुद्ध षड़यन्त्र करते थे, यह सब बातें हमसे बहुत छिपाई जाती थी। लेकिन हम भी ताक में रहते थे। इरफान सम्भवतः यह समझते थे कि सिर्फ वही अपने दफ्तर से छुट्टी पर हैं हाँलाकि हम भी दफ्तर बस इसी हद तक जाते थे कि घर से तो निकले दफ्तर जाने के लिए और घूम कर उसी कमरे में जा बैठे जहाँ से नाजो और बेगम की बातें पहले भी सुन चुके थे।

आज भी हम दफ्तर जाने के बहाने जैसे ही घर से निकले, इरफान साहब घर आ गये! हमने अपने कमरे से सुना कि इरफान ने आते ही पूछा—"भाई साहब, क्या गये दफ्तर ?"

बेगम ने करोशिये से बुनाई करते हुए कहा—"जी हाँ, तशरीफ ले गये दफ्तर भी वह न मालूम किस मजबूरी से जाते हैं! अगर घर पर टेलीफोन लगा दिया जाये तो शायद दफ्तर जाना भी छोड़ दें। खैर, तुम अपनी कहो यह शादी कब हो रही है ?"

इरफान ने रुमाल से पसीना पोंछते हुए कहा—"आपा, मैं सच कहता हूँ। वह औरत एक ही छटी हुई है। जितनी ऊपर नजर आती है, उसकी दुगनी

शायद जमीन के नीचे है। क्लब के जितने मेम्बर हैं सबको अँगुलियों पर नचा कर रख देती है। भला गजब खुदा का! मुझे भी आप छेड़ना चाहती हैं! मुँह भाड़ सिर पहाड़, न बात करने का ढँग, न शरीफ बहू-बेटियों वाले तरीके! बस, सूरत देख कर तो मैं आप से सच कहता हूँ, उसका यह हाल होता है जैसे चाय की प्याली में मक्खी पड़ गयी हो! मगर हमारे भाई साहब को खुदा जाने क्या हो गयी है कि जब देखिये उसकी दुम के पीछे लगे हुए हैं। कल फालसी रँग की बनारसी साड़ी बाँधे हुए आप तशरीफ लायी! चेहरे के ऊपर इस बला का पाउडर थोपा हुआ था जैसे खमीरी रोटी में फफूँद लग गयी हो।"

खीरे नीपारते हुए फिर इरफान बोला—"लेकिन चोंचले ऐसे दिखाती कि सुभानअल्लाह! मालूम होता था कि जैसे सब को मार ही तो डालेंगी। भाई साहब न उसे देखकर पहले तो आँखों में उसकी बलाय ली, इसके बाद भी जब न रहा गया तो सब के सामने ही कह दिया—"शीला! बड़ी अच्छी मालूम हो रही हो!' और उस कमबख्त को देखिये कि बजाये शर्माने के आपने अंग्रेजी में फरमाया—'ना, रीयली' (नहीं सचमुच) खुदा की कसम, हर ऐक उनकी बातों पर हँसता है, लेकिन उनको किसी की परवाह थोड़ी है। खुलेआम क्लब में हाथ में हाथ डाले इधर उधर फिरा करती हैं। अरे साहब! मैं आपसे क्या कहूँ, कल भाई साहब ने ऐसी ऐसी कसमें दे कर उसे आईसक्रीम खिलाई है कि आपको तो उमर भर इतनी खुशामद न की होगी!"

बेगम ने एक ठंडी साँस भर कर कहा—"मेरी खुशामद क्यों करते भैया? मैं भी कोई सोसायटी बटर फ्लाई (तितली) होती, या अल्लाह न करे मेरी वही हालत होती जो शीला की है कि आज इसके हाथ में हाथ, कल उसके हाथ में हाथ! तो मेरी भी कदर की जाती। मगर मैं तो उनकी खिदमत के लिये दी गयी हूँ न, मेरा काम तो सिर्फ यह है कि मैं उनकी इज्जत-आबरू लिए बैठी रहूँ और वह अपनी शराफत उछालते फिरें।"

इरफान साहब ने मानो अपनी योग्यता का सिक्का जमाने के लिए ठंडी साँस भर कर कहा—"ऐ माँओं, बहिनो, बेटियों, दुनियाँ की इज्जत तुम से है।"

बेगम ने जल कर कहा—"शीला भी तो माँ, बहिन, बेटियों में से है।"

इरफान साहब ने समझाते हुए कहा—"पाँचो अँगुलियाँ बराबर नहीं हुआ रती आया।"

हम खामोशी से यह बातचीत सुन रहे थे। और हैरान हो रहे थे कि यह रफान जो देखने में गूँगा भी नजर आता है और बेवकूफ भी, कितना बातूनी । बेवकूफी तो खैर इस समय उसकी बातों ही से प्रगट थी, मगर साथ ही साथ यह ेद भी खुल गया कि यह हजरत फसाद की जड़ भी हैं। उदाहरणतः फालसी ंग की साड़ी देख कर हमारी तारीफ करने वाली बात सिर से पाँव तक झूठी ी। आईसक्रीम खिलाने के सिलसिले में खुशामद करने वाला किस्सा भी सफेद झूठ था।

कई बार इरादा किया कि कमरे से निकल कर जरा इन साहबजादे से पूछें ो सही कि क्यों वे झूठों के सिरमौर! यह क्या हरकत है? मगर फिर खयाल ाया कि इस तरह की जिम्मेदारियाँ लेने के बाद लोग अपनी कार गुजारियाँ सी तरह दिखा सकते हैं। दूसरे इन बातों से हमारी स्कीम और भी मजबूत ो रही थी और सफल हो रही थी।

बेगम को सिर्फ यह मालूम करने की चिन्ता थी कि आखिर शादी वाली ात किस हद तक ठीक है, और अगर शादी होने वाली है तो कब तक? और यह जरत बात को जरा और मजेदार-चटपटी बनाने के लिए कुछ झूठ का नमक मिर्च ी लगा रहे थे। स्पष्ट है, यह तो अपनी बहिन से नहीं कह सकते थे कि क्लब ें जाकर साँप सूँघ जाता हूँ। पराये मर्दों के सामने शर्मा शर्मा कर रह जाता ूँ। इनको तो अपनी योग्यता का सिक्का बहरहाल बिठाना था। खैर वह तो ावा सोलह आने बेवकूफ थे ही, लेकिन बेगम की बेवकूफी पर मुझे कोई शक न ा, जिनकी निर्वाचन-दृष्टि अक्ल के इस पुतले पर पड़ी थी।

मुलाहजा फरमाइये, अपनी बहिन के सामने पूरी ऐक्टिंग के साथ फरमा हे थे—"अरे आपा। तुम्हारी कसम, एक से एक बेशर्म उस क्लब में भरे पड़े ै। तोबा, तोबा। ताश वह खेलें, और वह भी रुपये लगा कर जुए की तरह। ुझ से भी एक साहब ने कहा कि तुम भी ताश सीख लो, तो मैंने कानों पर हाथ ख कर कहा बख्शो जी बिल्ली। चूहा लूँडरा ही भला।

बेगम ने इस बातचीत को कोई महत्व न देते हुए कहा—"खैर, ताश खेलने

में तो कोई हर्ज नहीं है यही सब किया ही करते हैं। कोई घुड़दौड़ जाता है, कोई ताश खेलत है, किसी को सिनेमा का शौक है इन बातों की जो रोक-थाम करें उसकी बेवकूफी है।"

इरफान ने बिलकुल जनाजा अंदाज़ से कहा—"मर्दों का तो खैर वह काम भी है जो भाई साहब कर रहे हैं। रह गया, जुए के लिए आपका कहना कि कोई हर्ज नही मेरी समझ में तो आता नहीं। अब तक तो हमारे खानदान में कोई जुआरी गुज़रा नहीं, अब नई बातें हो रही हैं।"

बेगम ने बड़ी शानदार बात कहीं और खुदा की कसम तबीयत बाग-बाग हो गयी, बोलीं—"भैया। अब वह जमाना नहीं रहा है कि जुए को जुआ समझा जाये। अब तो यह पढ़े लिखे और सोसायटी के ऊँचे लोगों की एक तफ़रीह बन गयी है।"

इरफान ने बड़ी-बूढ़ियों की तरह कहा—"अच्छा जी यूँ ही सही। मगर इसका मतलब तो यह हुआ कि अगर वह आप से जुआ खेलने के लिए रूपये माँगे तो शायद आप रुपया उठा कर भी दे दें...?"

बेगम ने तुरन्त कहा "बेशक, दे दूँगी। इसलिए कि रुपया माँगना तो उनकी शराफत है, वरना, वह बिना माँगे जो चाहें कर सकते हैं। कमाई आखिर किसकी है? जो आदमी मेहनत करके कमा सकता है वह अपनी तफ़रीह पर खर्च करने का भी हक़ रखता है।

इरफान ने निराश होकर कहा—"बस, तो फिर खुदा ही मालिक है इस घर का। जिस घर में जुए वाली मनहूसियत पहुँची, उस घर का आगे बढ़ना फिर कोई बात नहीं है। और जो आपका यह हाल है तो फिर भाई साहब से आखिर क्या शिकायत हो सकती है?"

बेगम ने उसे समझाते हुए कहा—"मैं उनकी हर बात सहन कर सकती हूँ। तफ़रीह तो मैं खुद भी चाहती हूँ कि वह करें, रुपये को मेरी नजर में कोई कीमत नहीं है। अलबत्ता मेरे लिए सब से ज्यादा कीमती चीज़ वह खुद हैं। और मैं किसी कीमत पर भी उनको हाथ से खोने के लिए तैयार नहीं हूँ। शौला मुझ से जो चाहे ले लें, मेरे जेवरों का एकएक तार, मेरे बैंक का एक एक पैसा, मेरे घर की एक एक चीज़। मगर उनको मेरे लिये छोड़दें।"

इरफान ने मूर्खता भरे जोश के साथ कहा—"अजी, उसकी ऐसी तैसी। मुझे तो उस साली पर नहीं बल्कि आप पर गुस्सा आ रहा है जब भाई साहब को आपकी परवाह नहीं है तो आप की जूती की नोक से, वह एक नहीं पाँच सो शादियाँ करें। क्या आपके वालिद के पास आप को उमर भर बिठा कर खिलाने के लिए कमी है ?"

बेगम ने जोश के साथ, कदाचित अपने गुस्से को दबाते हुए कहा—"बस इफरान बस, मैं इस तरह की बातें तुम से क्या, अब्बा जान से भी सुनना पसन्द नहीं करूँगी।"

हमको इस बातचीत से भी यह महसूस हो रहा कि मानों स्वास्थय सुधारने के लिये हम गुलमर्ग की किसी घाटी में आये हुए।

इरफान जैसे बेवकूफ की बातों का बुरा मानना किसी समझदार आदमी का काम नहीं हो सकता और इस सिलसिले में बेगम के शरीफाना विचार और भावनायें सुनने देखने के बाद अगर हम यह कहें कि हम फूले न समाते थे तो सम्भवतः गलत न होगा। जी चाहता था कि इसी समय कमरे से निकल कर पागलों की तरह बेगम के कदमों पर गिर पड़े !

पर फैयाज का भूत हर बार निगाहों के सामने आकर आँखें दिखाता था कि—'खबरदार ! जो आगे कदम बढ़ाया ! वरना पछताना होगा।' इसलिए मन को मार कर चुप रहना पड़ा।

इरफान साहब इस समय फाड़ खाने के बाद अब कोई दूसरा लेक्चर दिलाने के लिए तैयार न थे, और कुछ खोये-खोये हुए बैठे थे। बेगम ने अपने अपनी पति-पूजा के भाव केसाथ धुआँधार भाषण करते हुए कहा—

'इरफान मियाँ ! तुम पढ़े लिखे हो। खुदा की मेहरबानी से ग्रेजुएट हो ! इतना तो तुमको सोचना चाहिए कि एक शरीफ औरत की माँग अपने शौहर से क्या हो सकती है ! अगर सच पूछो तो मैं उनसे प्यार भी नहीं मागती, सिर्फ यह चाहती हूँ कि उनका साया मेरे ही सिर पर रहे।'

इरफान की समझ से यह बातें बाहर थी। अपने दही को तो सभी मीठा कहते हैं, मगर हमारी राय ईमानदारी के साथ बेगम के बारे में यह है कि यह

बावजूद अपनी इस कोताही के कि इरफान की रिश्ते में बहिन थीं, न सिर्फ बुद्धिमान और होशियार थी बल्कि समझदार भी थीं।

बेगम हांलाकि साधारण भाषा में बातचीत कर रही थ , पर इरफान साहब कुछ इस तरह गर्दन हिला रहे थे मानों भैंस के आगे बीन बजायी गयी है। और वह खड़ी पगुरा रही है। अब उनकी बोलने की ताकत जैसे किसी ने खोल दी थी क्योंकि घर की एक मामूली औरत ने उनको भंझोड़ कर रख दिया था। सच पूछिये, तो हम उनकी जगह होते तो आत्महत्या करने की तरकीब सोचते। मगर उनका साहस देखिये कि भागने की कोशिश भी न की।

बार बार हमारा मन चाहता था कि काश इस समय फैयाज यहाँ होता और उससे हम कह सकते कि देख शैतान के बच्चे! हमारी बेगम क्या कह रही है, सुन उनके मोतियों में तोलने वाले शब्द! क्या ऐसी बेगम के साथ यह जो बर्ताव कर रहे हैं क्या कमीनापन नहीं है?

कई बार निश्चय किया कि दौड़ा हुआ फैयाज के पास जाँऊ और उसको यह सब बातें सुनाऊँ! मगर फिर यह सोचा कि हमको उस समय तक यहाँ ठहरना चाहिये जब तक इन दोनों बहिन भाइयों में यह बातें हो रही हैं। न जाने कौन सी बात हमारी अनुपस्थिति में तय पा जाये, जिसकी हमें खबर भी न हो सके!

आखिर हम उस समय तक बैठे रहे जब तक यह बातचीत खत्म नहीं हुई! और जब इरफान अपनी बहिन से विदा हो कर चले गये, तो हम भी अपने इस कमरे से निकल कर फैयाज की तरफ चल दिये।

❀

१४

फैयाज ने क्यूपिड के तरकश का वह तीर, जिसे इरफान पर चलाने का वादा किया था छोड़ दिया। और पता नहीं शीला या इरफान दोनों में किसी, एक को या दोनों को अलग-अलग क्या पट्टी पढ़ा दी थी कि आजकल इरफान और शीला को बहुत गाढ़ी छन रही थी। इरफान की वह औरतों वाली शर्म

तो खैर धीरे-धीरे दूर हो चली थी। पर स्वभावत, जो जनाना पन था, वह अपनी जगह उसी तरह था। शीला से आज तक तो सब लोग यह समझ कर मिले होंगे कि वह एक औरत है, और मर्द का फ़र्क अपनी जगह पर कायम रहा होगा। लेकिन इरफान शायद उसको अपनी गोइयाँ समझ कर मिल रहे थे।

क्लब के जिस कोने में शीला उनको लेकर बैठा करती थी, उसका नाम क्लब के मेम्बरों ने जनाना दर्जा रख छोड़ा था। रमेश कहा करता था कि अब तक तो क्लब में सिर्फ एक ही औरत थी, लेकिन अब तो भगवान की मेहरबानी से दो नज़र आने लगी। यानी शीला और इरफान। इखिलाक इन दोनों के मिलाप से बहुत खुश था। उनका खयाल यह था कि क्लब के मेम्बरों को एक ही समय में इन दोनों मुसीबतों से छुटकारा मिल गया! फैयाज़ भी अपनी सफलता पर बहुत खुश थे। सचमुच उसके प्रयोग आश्चर्य जनक थे कि उसने इरफान जैसे जानवर को इश्क के लिए सधा लिया था!

एक रोज़ शीला और इरफान को लान के बिल्कुल आखिरी कोने में बातें करने में तल्लीन देखकर फैयाज़ साहब के चेहरे पर सफलता चमक रही थी कि हमने उससे कहा—यार फैयाज़। तू एक सरकस क्यों नहीं खोलता!'

फैयाज़ ने एकदम चौंक कर कहा—'सरकस?'...

हमने अपने एक एक शब्द पर ज़ोर देते हुए कहा—'हाँ हाँ सरकस! खुदा की कसम बड़े फायदे की चीज़ है। और तू इस लाइन में इतना कामियाब [सफल] रहेगा कि जिस तनख्वाह की आजकल नौकरी कर रहा है न, उस तनख्वाह के नौकर खुद रख सकेगा!'

फैयाज़ ने आश्चर्य से सिर से पांव तक हमको देखते हुए कहा—'तबीयत तो अच्छी है आपकी? यह आखिर बैठे, बैठे आप बहकी बहकी सी बातें क्यों करने लगे?'

हमने उसके कन्धे पर थपकी देते हुए कहा—'नहीं, सचमुच तुमको जानवरों के सधाने के आर्ट में जो कमाल हासिल है उसका तकाज़ा नहीं है कि इससे कुछ फायदा उठाया जायें! अगर इरफान को तुम इश्क करना सिखा सकते हो तो बन्दर को नचाना, गधे को कुर्सी पर बिठाना, भालू को हुक्का पीना, बनमानुस को हाथ मिलाना भी आसानी से सिखा लोगे।'

कहकहा लगा कर बोले—अच्छा, यह बात है ! मगर अब मेरी यह स्कीम ज़रा बदल गयी है । अब तक तो यह मज़ाक था, मगर अब मैं यह सोच रहा हूँ कि हम लोगों की उमर सिर्फ दिल्लगी बज़ियों की नहीं है । कुछ न कुछ ठोस किस्म का काम भी हमें करना चाहिये । क्यों न इरफान और शीला की शादी करा दी जायें ।'

हमने एकदम चौंक कर कहा—'एँ...शादी कैसे हो सकती है ?'

फैयाज ने बड़ी लापरवाही से कहा—"जैसे शादी हुआ करती है, भाई आखिर बुराई क्या है ? इरफान की अब तक शादी नहीं हुई है और शीला भी कुँवारी है । लड़का मेरे नजदीक अभी सम्हला हुआ है । लड़की भी जहाँ तक मेरा ख्याल है सलामत है । आँखों का पानी जरूर मर गया है लेकिन मोती की आब शायद बाकी है । अगर शीला ने यह आब भी खो दी तो यह कोई अच्छी बात न होगी ।"

हमने झुंझला कर कहा—"आप क्या दुनियाँ भर के ठेकेदार हैं, खुदाई फौजदार है, आखिर बात क्या है ?"

हमसे खामोश रहने का संकेत करके, अपने कालर को पकड़ कर गर्दन लह-राते हुए फरमाया—"तुम समझते नहीं । इसमें ठेकेदारी या खुदाई फौजदारी की कोई बात नहीं है । जो बात मेरे दिमाग में नाच रही है और यह तो आपको मालूम ही होगा कि मेरे दिमाग में गलत बातें जरा कम आती हैं ।"

फैयाज को समझाते हुए हमने कहा—"इन मामलों में तुम न पड़ना ।"

फैयाज ने बात काट कर कहा—"क्यों ? आखिर क्यों न पड़ूँ इस मामले में ?"

हमने ऊँच-नीच समझाने के इरादे से कहना शुरु किया—"बात यह है कि अव्वल तो दोनों में धार्मिक भेद है । दूसरे आपको अभी यह मालूम नहीं कि दोनों निजी तौर पर एक दूसरे से किस हद तक पहुँचे हैं । यह शादी करने या न करने का फैसला तो दरअसल उन्हीं लोगों को करना है । हम लोग आखिर कौन होते हैं ?

फैयाज ने उपेक्षा से हमको देखते हुए कहा—"यार एक बात बताओ कि यह तुम्हारी खोपड़ी में जो भेजा है यानी जो अक्ल है वह तुमने कहीं से सैकिण्ड-

हैंडल तो नहीं खरीदी है ? मेरा ख्याल तो है कि इसका एक-आध पुर्जा या तो ढीला है, या कहीं गिर गया है । इस लड़ाई के जमाने में अब वह पुर्जे मिल भी नहीं सकते । अरे अक्ल के दुश्मन, अगर यह दोनों इतने ही समझदार होते और ऐसा ही फैसला करने की इनमें अक्ल होती तो आपस में इश्क क्यों लड़ाते ? जो लोग किसी के उकसाने पर एक दूसरे से इश्क कर सकते हैं वह इस लायक बिलकुल नहीं हैं कि अपने बारे में कोई संजीदा फैसला खुद कर सकें ।"

हमने जल कर कहा—"और सारे संजीदा फैसला करने के लिए जैसे एक आप ही खुदा की तरफ से भेजे गये हैं ।"

फैयाज ने सिगरेट केस पर तबले की कोई गत बजाते हुए कहा—"भाई साहब मैं खुदा की तरफ से अंधों के शहर में आईना बेचने के लिए नहीं आया हूँ । बल्कि चाहता यह हूँ कि जहाँ तक मुझसे हो सके इन अंधों को रास्ता दिखाता रहूँ । आप मेरी इस स्कीम को शायद इसलिए बेवकूफी समझ रहे हैं कि खुद अव्वल दर्जे के बेवकूफ हैं । मगर मैं आपको यकीन दिलाता हूँ कि यह बड़ी ही फबती हुई जोड़ है । न शीला को अपनी टक्कर का ऐसा बेवकूफ शौहर मिल सकता है । जैसा कि इरफान है । और न इरफान को अपने ढंग की ऐसी बेवकूफ बीवी मिल सकती है, जैसी शीला है । शायद आपने यह गौर नहीं किया है कि शीला एक समझदार किस्म की बीवी बनकर कयामत तक नहीं रह सकती है । मियाँ बीवी के बारे में सत्तरह बरस की खोजों के बाद मैंने जो चार्ट बनाया है, उसको अगर आप देखें तो आँखें खुली रह जायें । और इस चार्ट के मुताबिक शीला को लाजिमी तौर पर इरफान की बीवी होना चाहिये । शीला की तबियत ऐसी है कि वह प्यार करना चाहती है और उस आदमी से भागती है जो उससे प्यार करे । इरफान मरते मरते मर जायेंगे मगर क्या मजाल है जो अपनी बात कह जायें । इसलिए इस लिहाज से तो दोनों की निभ ही जायेगी ।"

फिर बोले—"अब रह गयी एक और बात । जो मेरे ख्याल में बैठी है, वह यह है कि शीला को ऐसा शौहर चाहिए जो उसकी बेवकूफी की बातों को समझने या न समझने के बारे में घबराहट से कोई फैसला न कर सके । यह घबराहट आपके साले साहब को इतनी ज्यादा है कि इस खजाने से वह मालामाल हैं । फिर यह दूसरों की भलाई का काम भी है । यानी शीला के

किसी अच्छे खासे समझदार मर्द से और इरफान को किसी भली और समझदार लड़की से बचाना ! अगर यह दोनों शादी करके आपस में एक दूसरे से गुथ गये तो एक लड़का और एक लड़का एक बहुत बड़ी मुसीबत से बच जायेंगे। लड़का वह जो शीला का शौहर बनने से बचा और लड़की वह जो इरफान जैसे भोंदू से शादी करने से बच गयी। अब इसको चाहे जो कुछ समझो, लेकिन मैं तो इसे एक बहुत बड़ा नेकी का काम समझता हूँ।"

हमने तंग आकर कहा--"जहन्नुम में जायें आप और भाड़ में जाय आपकी स्कीम। मालूम नहीं आपको क्या पड़ी है कि इन बातों में अपना सिर खपा रहे हैं।"

फैयाज ने बड़ी गम्भीरता से कहा—"भाई, मैं इसको अपना फर्ज समझता हूँ और मेरे नजदीक यह है, भी मुल्क की भलाई का काम। अब तुम इसको मेरा चाहे स्वराज समझ लो, या पाकिस्तान। बहरहाल, मैं इन मामलों पर वह नजर नहीं डालता जो आप लोग डालते हैं।"

हमने बात को खत्म करने के लिए कहा—"अच्छा; साहब ! आप जो कुछ फरमा रहे हैं ठीक है। मगर मैं सिर्फ यह चाहता था कि आप मेरे बारे में भी कुछ हुक्म कर देते। यह तो मैं आप से कह चुका हूँ कि अब बेगम को मेरे ताश खेलने से कोई एतराज नहीं है। यह भी आपको मालूम हो चुका है कि वह मेरा अब क्लब जाना भी गवारा कर सकती हैं। फिर आखिर उनको जो सजा दी जा रही है उसकी कोई मियाद भी है या नहीं ?

फैयाज ने बहुत बड़े चीफ जस्टिस के अन्दाज से कहा—"यह बिलकुल गलत है। मैं आपसे बार-बार कह चुका हूँ और फिर अर्ज करता हूँ कि इन बातों को समझने की काबलियत आपके इस बड़े से सिर वाली छोटी सी अक्ल में मुश्किल ही से पैदा हो सकती है। इस वक्त आपकी बेगम की जो हालत है वह बिलकुल उस माँ जैसी है जिसका एक बड़ा ही आवारा मर्द बच्चा बीमार पड़ गया है और मरने के करीब है। अब वह माँ गिड़गिड़ा कर दुआएँ मांग रही है कि इलाह यह आवारा हो कर ही जीये, यह बदमाश होकर भी जिन्दा रहे। लेकिन इसका यह मतलब नहीं कि वह उसकी आवारगी और बदमाशी को बर्दाश्त कर लेती है बल्कि यह तो सिर्फ बुरा वक्त

टाल रही है। मौत के मुँह से निकल कर जब वह लड़का फिर बदमाशी करेगा, तब वह फिर उसके खिलाफ हो जायेगी।"

जरा रुककर फैयाज ने फिर कहा—"इसी तरह अगर इस वक्त जनाब आपने अपनी बेगम को यह सब कुछ बता दिया कि यह सारी बातें झूठी हैं। न कोई शादी हो रही है न कोई सौत आ रही है तो वह खुश तो जरूर बहुत ही होंगी। सूखे धान पानी चढ़ जायेगा, मगर आपका जो हाल होगा वह भी सुनिये! वह फिर अपनी माँगे घुमा फिरा कर आपसे मनवाना चाहेंगी और जिस आजादी के लिये आपने इस वक्त तक यह जँग लड़ी है, वही आजादी जँग के जुर्माने के तौर पर उनको सुपुर्द करनी पड़ेगी समझे!"

हमने कुछ न कुछ समझते हुए कहा—"भाई साहब, सवाल तो यह है कि जो झगड़ा आपने फैलाया है उसको समेटना आखिर आप कब शुरु करेंगे... ?"

फैयाज ने कहा—"मैंने जो तरीका अपनाया है, उसकी हालतें अपने आप सुधरती जायेंगी। अब दरअसल मुझे या तुमको कुछ करना धरना नहीं है बल्कि यह इन्तजार करना है कि आपकी बेगम खुद कब असलियत को ढूढ़ने के लिए निकलती हैं और कब सच्चाई ढूँढ़ती हैं। इस बीच में हमारा काम सिर्फ यह रह जाता है कि हम दूसरी छोटी-छोटी बातों को जहाँ तक हो सके दिलचस्पी और साथ ही साथ अगर असानी से हो सके तो फायदेमन्द बनाते चलें। मिसाल के तौर पर शीला और इरफान के किस्से को ले लीजिए। देखने में तो यह किस्सा आपके मामले से एक अलग चीज नजर आ रहा है, मगर हालात यह साबित करेंगे कि यह भी इस सिलसिले की एक बड़ी अहम (महत्वपूर्ण) कड़ी है। कहने का मतलब यह कि आपका या किसी और का आपकी बेगम पर इस भेद को खोलना इतना ही नुकसान दे सकता है जितना इस भेद को छुपाये रखना फायदा दे सकता है और देख लीजिएगा, कि वह खुद ही बड़े नाटकीय अंदाज के साथ बहुत जल्द इस भेद की तह तक पहुँच जायेंगी!"

हमने फैयाज की बात को मानते हुए कहा—"खुदा करे ऐसा ही हो! मगर अब तो तबीयत उलझ कर रह गयी है।"

बड़े इतमीनान से बोले—"तबीयत ठीक हो जायेगी। तुम बहुत जल्दबाजी से काम ले रहे हो हाँलाकि अपने अधिकार पा लेना बच्चों का खेल नहीं होता।

हर एक को अधिकार पाने के लिए हाथ पैर मारने की जरूरत होती है। आप अपने मुल्क के हालात पर ही गौर कीजिए कितने दिनों तक आपके लीडर आजादी की जंग में डटे रहे और न जाने क्या क्या मुसीबतें उठा चुके हैं। आप तो अभी तक न जेल गये हैं, न पुलिस ने आप पर डंडे चलाये हैं और न तो आपको कोई और मुसीबत झेलनी पड़ी है। खामोशी से इन्तजार कीजिए अब अपकी मंजिल दूर नहीं है।"

शीला और इरफान दोनों इसी ओर आते हुए दिखाई दिये, लिहाजा हम लोगों ने इस वर्तालाप को यही खत्म कर दिया।

*

१५

बेगम को अपने प्यारे भाई इरफान की बेवकूफियों का पूर पता था और शायद यही कारण था कि वह इरफान की ओर से पूरी तरह सन्तुष्ट न थी। नाजो के आने जाने का सिलसिला बराबर जारी था। कभी बेगम उनके यहाँ चली गयी, कभी वह हमारे यहाँ आ गयी। फैयाज से इस तरह की सारी सूचनाएँ हमको मिल जाया करती थी, और हम उसी प्रोग्राम के अनुसार कभी फैयाज के यहाँ पहुँच जाते थे, कभी खुद अपने घर के उसी कमरे में, जहाँ से हम हमेशा यह षड्यन्त्रकारी बातें सुना करते थे।

आज नाजो हमारे यहाँ आयी हुई थी और बेगम उनसे सिर जोड़ कर बड़ी महत्वपूर्ण सलाहें कर रही थी। हम भी अपने उसी कमरे में एक ट्रंक पर बैठे हुए बड़ी खामोशी के साथ इस बातचीत पर कान लगाये हुए थे कि एकाएक बेगम की आवाज सुनाई दी जो नाजो से कह रही थी—

"बात यह है कि बहिन! कि मुझे इस इरफान की तरफ से कोई इतमीनान नहीं है। एक तो परले सिरे का बेवकूफ, दूसरे खुदा की मेहरबानी से एक नम्बर का झूठा, न जाने कितनी बातें सच कहता है और कितनी बातें झूठ! मैं तो सिर्फ यह चाहती थी कि मुझे क्लब की बातें मालूम होती रहें। मगर इरफान

ने तो यह तरीका अपना रखा है कि बराबर उनकी तरफ से भड़काने और बहकाने के अलावा दूसरी बात ही नहीं करता।"

नाजो ने एक कानूनी नुक्ता निकाल कर कहा—"यह तुमने कैसे समझ लिया कि वह तुमको बहकाने और भड़काने की कोशिश कर रहा है। हो सकता है कि वह जो कुछ कहता हो वही सच हो! भड़काने या बहकाने से आखिर उस बेचारे को क्या फायदा? और यह तुम कैसे समझ सकती हो कि वह झूठ बोल रहा है।"

बेगम ने नाजो को समझाते हुए कहा—"अरे तुम्हें मालूम नहीं कि इरफान की बचपन से लेकर अब तक की एक एक हालत मेरी नजर के सामने से गुजरी है। झूठ बोलना तो उसकी आदत है ही! और पहिचानने वाले फौरन पहिचान लेते हैं कि कौन सी बात उन्होंने सच कही है और कौन सी झूठ! सच बोलते वक्त उनकी हालत में कोई खास तब्दीली नहीं होती, लेकिन जहाँ से झूठ बोलना शुरु करते हैं तो अजीब हरकतें शुरु कर देते हैं। हकलाना शुरू कर देते हैं, आँखें जल्दी-जल्दी खोलते और बन्द करते हैं, नाक के नथनें फुलाते हैं और दायीं कनपटी फड़कने लगती है।"

नाजो को बड़े जोर से हँसी आगई और उसने बड़ी मुश्किल से हँसी पर काबू पाते हुए कहा—"बड़ी बड़ी पहिचानें तुमने उसकी मुकर्रर कर रखी हैं। मगर मैं तो पूछती हूँ कि आखिर उसको इस सिलसिले में झूठ बोलने की जरूरत ही क्या है...?"

बेगम ने कहा—"जरूरत? यह जरूरत क्या कम है कि इस तरह से वह मुझे खुश करके शाबाशी पाना चाहते हैं।"

नाजो ने कहा—"फिर आखिर क्या सूरत अपनायी जाये...?"

बेगम ने विरोधात्मक ढँग से कहा—"सूरत अब सिर्फ यही है कि फैयाज भाई को बुलवाती हूँ और उनकी हर तरह खुशामद करके उन्हें अपना राजदार बनाने की कोशिश करूँगी।"

नाजो ने सोचते हुए कहा—"भई, तुम समझ लो। ऐसा न हो कि वह मुझ पर ही बरस पड़ें कि तुमने क्यों बताया!"

बेगम ने पर्चा लिखते हुए कहा—"वह नाराज नहीं होंगे और न तो तुम

पर बिगड़ेंगे, इसकी जिम्मेदारी मैं लेती हूँ अभी यह पर्चा भिजवाये देती हूँ, अगर घर पर हुए तो फौरन आ जायेंगे।"

बेगम ने पर्चा लिख कर तुरन्त नौकर के हाथ फैयाज के यहाँ भिजवा दिया और इस बीच में वहाँ चाय पानी शुरू हो गई। ज्यादा देर न हुई थी कि फैयाज की मोटर साइकिल की आवाज सुनाई दी, इसलिए हम लपक कर अपनी जगह पर पहुँच गये।

फैयाज ने अन्दर आते हुए दूर ही से कहा—"आदाब अर्ज करता हूँ भाभी जान! यह आज मुझे किस सिलसिले में याद किया गया है।"

बेगम ने साड़ी का आँचल ठीक करते हुए सीधे खड़ी होकर कहा—"फैयाज भाई, आप तो शायरी करते हुए तशरीफ ला रहे हैं। मैंने तो आपको इसलिए बुलाया था कि यह आपकी जोड़दार यहाँ बहुत देर से बैठी थी, मैंने कहा आप भी तशरीफ ले आयें।"

फैयाज ने कहा—"और खुद आपका जोड़दार कहाँ है...?"

बेगम ने उदासी से कहा—"क्या बताऊँ, वह तो किसी और के चक्कर में पड़े हुए हैं!"

फैयाज ने मानो चौंकने का अभिनय करते हुए कहा—"जी! क्या फरमाया आपने? अरे नहीं, वह ऐसा नहीं है। शायद आपको गलतफहमी हुई होगी।"

बेगम ने अर्थपूर्ण मुस्काने के साथ गर्दन हिला कर कहा—"आप मुझे बनाने को रहने दीजिए! आप तो बड़े कानूनी आदमी हैं इसलिए आपको तो मालूम होना चाहिए कि जुर्म को छिपाना भी उतना ही बड़ा जुर्म है जितना कि असली जुर्म।"

फैयाज ने हाथ जोड़ कर कहा—"दरोगा जी, चाहे जैसी कसम ले लीजिए मुझे कुछ नहीं मालूम।"

बेगम ने हंसते हुए कहा—"अरे फैयाज भाई! अगर मैं सचमुच दरोगा जी होती तो इस वक्त आप टिकटिकी (एक तरफ का शिकंजा जिसमें अपराधी को कसा जाता है।) पर बंधे नजर आते। मैं आपको यह बताना चाहती हूँ कि आपकी टिकटिकी यह बेगम भाजो जो है, इनसे तो कोई सुराग मिलता नहीं, मगर मुझे यह अच्छीतरह मालूम हो चुका है कि आपके क्लब में आज कल क्या खेल खेला

जा रहा है। यह भी मालूम है कि आप निजी तौर पर अपने दोस्त के हक में नहीं है।मुझे यह भी मालूम है कि आपकी हम दर्दियाँ मेरे ही साथ हैं । सिर्फ आप पर इलजाम यह है कि आपने अब तक मुझ से यह बात छिपाने की कोशिश क्यों की...... ?"

फैयाज ने बड़ी शानदार एकटिंग की, कुछ घबराया, कुछ हकलाया फिर बोला—'जी वाह...मेरा मतलब यह है कि...मुझे तो...ऐसे किसी खेल की कोई खबर नहीं है।'

बेगम ने नौकर को आवाज़ देकर शीशा लाने के लिए कहा, और फैयाज से कहा—'मैं अभी खुद आपको आपकी शक्ल दिखाती हूँ जिस पर जुर्म छिपाने की सारी अलामतें चेहरे का नूर बन कर छाई हैं।'

फैयाज़ ने मानों तर्क पेश करते हुए कहा—'साहब! बात असल में यह है कि मैं ज़रा इन मामलों से दूर ही रहना पसन्द करता हूँ! मियाँ बीबी का झगड़ा ही क्या ? आँखों के एक इशारे और होंठों की एक मुस्कान से बीच की खाई भर जाती है और होता यह है कि—

'तुम गले से मिल गये, सारा गिला जाता रहा!'

मगर बीच में पड़ने वाले का गला ख्वाहमख्वाह कटता है। उन हज़रत को अगर खबर हो गयी तो वह यही कहेंगे कि मेरी बेगम को भड़काया! आप से कुछ नहीं कहता हूँ तो आप बुरा मानती हैं। इस हालत में क्या यह नहीं हो सकता कि आप मेरे पर रहम करें और मुझसे कुछ न पूछें!'

बेगम ने फैयाज़ को मनाते हुए कहा—'देखिये, फैयाज भाई! कुछ न कहने की सूरत में भी आप कह तो सब कुछ गये। आपकी बातचीत से कम से कम मालूम तो हो ही गया है कि कुछ न कुछ किस्सा जरूर है और यह भी मालूम हो गया कि इस किस्से के सब हालात की आपको पूरी जानकारी है। फिर आपकी इस भेद छिपाने वाली बात को सिवाय अकलमन्दी के और क्या कहा जा सकता है। मुझे सारी बातें खुद मालूम हैं, मगर मैं आपको अपना भाई समझ कर आपसे सिर्फ इतनी हमदर्दी चाहती हूँ कि आप मुझको क्लब के अन्दर की बातों की खबर देते रहें, ताँकि जो कुछ होने वाला है वह कम से कम मुझे तो पता चल जाये!'

फैयाज़ ने शरारत के साथ हँसते हुए कहा—'खैर, भाई बनाने की तकलीफ तो गवारा न कीजिए। मैं भाई बन कर ऐसी अच्छी भाभी से हाथ नहीं धोना चाहता। एक मर्द की इससे बढ़कर और बदकिस्मती क्या हो सकती है कि वह दुनियां की सारी खूबसूरत औरतों का भाई बन कर रह जायें। मैं भी इस घाटे के लिये तैयार नहीं हूँ। अलबत्ता अगर आप इस तकलीफदेह किस्से को सुनने के लिए इतनी ही बेचैन हैं तो आप जो पूछियेगा, बताता रहूँगा। लेकिन एक बात फिर अर्ज कर दूँ कि आपके शौहर साहब मेरे जिगरी दोस्त हैं और इस तरह गोया उनकी नाराज़गी मोल ले रहा हूं। जहाँ तक आप से हो सके मेरे और उनके दोस्ताना रिश्ते को खराब न होने दीजिए, आगे आप जाने।'

बेगम ने छूटते ही सवाल किया—"अच्छा, अब यह बताइये कि आपकी नयी भाभी कब तक आ रही हैं और यह शादी आखिर कब तक हो जायेगी।"

फैयाज ने मानो अपने ऊपर बहुत जबरजस्ती करके कहा—"भाभी जान क्या बताऊँ, कुछ कहा नहीं जाता और बिना कहे रहा नही जाता। मैंने तो इस सिलसिले में जहाँ तक मुझसे हो सकता था रुकावट पैदा करने की कोशिश की। आपके मियाँ शरीफ को समझाया, शीला कमबख्त को डराया-धमकाया, उसके बाप को न जाने क्या क्या पट्टी पढ़ाई। उसकी बिरादरी में बात उठाने का सवाल पैदा किया, लेकिन कोई तीर निशाने पर न बैठा। शीला उनके लिए सब कुछ छोड़ने के लिए तैयार है। यहाँ तक कि अपना धर्म भी! और आप के शौहर माफ कीजिएगा एक नम्बर के बेवकूफ हैं। जब मैंने उनको बहुत समझाया तो आखिरी बात उन्होंने यह फरमायी कि भाई शीला मुझे छोड़ सकती है, यूँ चाहे मुझे जमाने का जमाना छोड़ दे। उनकी दलील यह है कि मैं उसको कैसे छोड़ सकता हूं, जब कि वह मेरे लिये सब कुछ छोड़ने को तैयार है। और भाभी मैंने अन्दाज किया है कि सचमुच वह कमबख्त तो कुछ दीवानी सी हो गई है। मैंने तो उसे यहाँ तक कहा कि अरे भाई शीला, अगर तुम्हें इश्क ही करना है तो मैं मौजूद हूँ। मेरी नाजो बेगम मुझे बड़ी आसानी से इजाज़त दे देंगी।"

नाज़ो ने एकदम चमक कर कहा—"अरे सुना कि नहीं, ज़रा होश ठिकाने रखना। ऐसी बातों में मज़ाक मुझे अच्छा नहीं लगता है, चले हैं वहाँ से इश्क

करने। मैं कोई रफ्फो तो नहीं हूं कि घर में बैठी आंसू बहाती रहूँ' क्लब में पहुँच कर उस कुतिया की ऐसी खबर लूँ कि सूरत भी पहिचानी न जाये।"

फैयाज़ ने मुंह चिढ़ाते हुए कहा—"ऐसी ही तो आप रुस्तमें हिन्द हैं। कसम खुदा की अगर वह एक हाथ रसीद करे तो आप उन्नीस कलाबाजियां खा जाय। यह सारे फैसले उसी वक्त तक हैं जब तक मैं ज़रा शरारत से काम ले रहा हूं। अभी अगर किसी और का शिकार हो जाउं तो बेगम जान आपकी तबीयत साफ होकर रह जाये।"

बेगम ने इस बातचीत को अनावश्यक समझ कर कहा—"आप दोनों मियां बीवी तो घर जा कर खूब मजे से लड़ियेगा। इस वक्त तो मुझे यह बताइये कि आखिर आपके दोस्त का प्रोग्राम क्या है? यानी शादी के बारे में क्या तय हुआ है?"

फैयाज़ ने कहा—"कसम खुदा की मुझे कुछ मालूम नहीं। आप यकीन मानिये कि मैं इन दोनों के इस मेल-जोल से इतना घबराता हूं कि शीला से तो खैर मुझे तकरार थी ही, आपके मियाँ साहब से भी कोई लगाव नहीं रहा है। अलबत्ता शीला के बाप से यह जरूर पता चला है कि दिसम्बर की छुट्टियों में शायद यह शादी हो जायेगी, बशर्ते आपके मियां ने फिरोजाबाद वाली कोठी और बाग शीला के नाम लिख दिया।"

नाजो ने आश्चर्य से कहा—"फिरोज़बाद वाली कोठी और बाग पर उनका क्या हक है वह तो रफ्फो की मलकियत है न?"

बेगम ने इसको मामूली बात समझ कर कहा—"खैर, यह तो कोई बात नहीं, अगर वह सिर्फ जायदाद ही के लिए उनसे शादी करना चाहती है तो मैं बड़ी खुशी के साथ सब कुछ उसके नाम लिखने को तैयार हूं। लेकिन सवाल तो यह है कि आपके दोस्त ने इस मांग का क्या जवाब दिया...?"

फैयाज़ ने बिना किसी भिझक के बेधड़क यह शानदार झूठ बोल दिया कि—"जायदाद लिखने को तो तैयार हैं। मगर फिरोजाबाद वाली नहीं बल्कि लखनऊ वाली, जो खुद उनकी है। इसलिए कि शायद इस सिलसिले में वह आपका एहसान लेकर शर्मिन्दा नहीं होना चाहते। मगर शीला के बाप की कोशिश यही है कि फिरोज़ाबाद वाली जायदाद के बदले में लखनऊ वाली

को इसलिए दी जाये कि वहाँ से पास ही मीनपुर में उनका असली घर है। तो अब यह समझिये कि इस मामूली सी बात के लिए मामला गड़बड़ में पड़ा हुआ है वरना अब तक यह शादी हो चुकी होती।"

बेगम ने पानदान फैयाज़ की तरफ बढ़ाया, पान खाते ही फैयाज़ ने बेगम से कहा—"भाभी जान आप मुझे फिरोज़ाबाद वाली जायदाद के कागज़ तो ज़रा दिखाइये।"

यह सुनते ही हमारा दम निकल गया। इसलिए कि वह कागज़ इसी कमरे बल्कि उस ट्रंक के अन्दर बन्द थे, जिस पर हम बैठे हुए इस कांफ्रेंस की कार्यवाई सुन रहे थे।

अब सवाल यह था कि भागें तो किधर और छिपें तो कहाँ? कमरे के बाहर माली पौधों को पानी दे रहा था। दूसरे दरवाजे से बेगम पधारने वाली थीं। सोचने का समय न था।

घबरा कर हम उस कोने में छिप गये जहाँ खस की टट्टियों के पीछे मकड़ियों ने बहुत सुरक्षित जगह समझ कर हज़ारों जाले तान रखे थे। शुक्र है कि हमारे छिपते ही बेगम कमरे में आयी और ट्रंक खोलकर कागज निकाल ही रही थीं कि हमारा पाँव एक टीन के डिब्बे पर इस तरह पड़ा कि हम तो खैर दम साध कर रह गये मगर बेगम 'उई' करती हुई चीखकर उछल पड़ीं।

फैयाज़ और नाज़ो बेगम की आवाज सुनकर घबराये हुए अन्दर आये कि बात क्या है? बेगम ने दोनों को इतमीनान दिलाते हुए कहा—"कुछ नहीं। इन कमबख्तों के मारे नाक में दम है। एक से एक कदआदम चूहा भरा पड़ा है। कम्बख्त चूहेदान भी घसीट कर ले जाते हैं।

यह कद-आदम चूहा खामोशी से अपनी शान में यह कसीदा सुनता रहा, और बेगम कागज लेकर बाहर चली गयीं। अब हम इस कमरे में न ठहर सके। जाले न जाने कहाँ कहाँ चिपक गये थे और मकड़ियाँ अपने बाल-बच्चों सहित हमारे बदन के विभिन्न भागों पर चहलकदमी कर रही थीं।

हमने झाँककर माली को देखा, वह एक झाड़ी के अन्दर कुछ और झाँक रहा था। मालिन उसके पास खड़ी घूंघट के भीतर से उसको बड़ी लगावट की

नजरों से देख रही थी। मौका गनीमत जान कर हम बाहर निकल आये और चुपके से एक ओर को रेंग गये।

*

१६

क्लब का वातावरण आज कल कुछ विचित्र-सा था। फैयाज साहब अपनी जगह पर डिक्टेटर बने हुये थे। हम एक अजीब पशोपेश की अवस्था में थे कि देखिये हमारा ऊँट किस करवट बैठता है। इखिलाक और रमेश वगैरह खामोश दर्शकों में शामिल थे।

शीला और इरफान का तो पूछना ही क्या ?. शीला पर तो खैर कोई अचरज नहीं, लेकिन इरफान को देख देख कर आश्चर्य होता था और हंसी भी आती थी, और फैयाज की जादूगरी का कायल होना पड़ता था कि इस बंजर जमीन में इश्क पैदा करने में सफलता प्राप्त की है। कौन कल्पना कर सकता था कि इरफ़ान को रोमाँस से कभी भी कोई लगाव पैदा हो सकता है। मगर वहाँ तो इस रोमाँस में इस बला की गम्भीरता आ चुकी थी कि कुछ पूछिये नहीं, यहाँ तक कि शीला खुले आम सबसे कह चुकी थी कि वह इरफान को हर तरह समझ चुकने के बाद इस नतीजे पर पहुंच गयी है कि इरफान उसके जीवन का अनिवार्य अङ्ग है। और उसने अपना यह फैसला भी हर एक को सुना दिया था कि जीवन की इस दौड़ में बिना इरफान के वह एक कदम भी आगे बढ़ नहीं सकती।

फैयाज साहब ऐसे अवसरों की तलाश ही में रहते हैं, खुदाई फौजदार जो ठहरे। फिर यह रोमांस तो उनकी कोशिशों का एक सफल नतीजा था। आप इन दोनों के 'गार्जियन' (संरक्षक) बने हुए थे। उन्हें सलाहें दे रहे थे, डांट रहे थे, चेतावनियाँ दे रहे थे, सारे दाव-पेंच समझा रहे थे। सारांश यह कि फैयाज दोनों के बुजुर्ग बने हुए थे। दोनों को अपनी छत्र-छाया में रखे हुए थे। इरफान इस सिलसिले में 'हां' तो नहीं कह सकते थे, पर 'नहीं' कहना भी 'हाँ' का अर्थ रखती थी। उनका उदाहरण तो वही था कि—"मन चाहे पर मुंडियां हिलाये।"

आज भी क्लब में हम लोगों ने इधर उधर से लोगों को पकड़ कर अपनी कमी का कोरम पूरा किया। और यह तीनों हम सब से बहुत दूर एक ओर कुर्सियां डाले अपनी कांफ्रेंस करते रहे। आखिर रमेश से सहन न हो सका और उसने कह ही दिया—

"भाई, यह ग़लत है। कसम भगवान की बहुत दिल चाह रहा है कि उन लोगों की बातें सुनी जायें। शीला और इरफान तक की कांफ्रेंस तो बर्दाश्त की जा सकती है, मगर यह फैयाज साहब का उनकी कांफ्रेंस में शामिल होना बड़ा अर्थपूर्ण और खतरनाक भी है, मैं तो ज़रूर सुनूँगा कि यह लोग आपस में क्या बातें कर रहे हैं?"

खैरियत यह थी कि इरफान, शीला या फैयाज हम लोगों के बिल्कुल सामने न थे, वरना वह हमारा यहाँ से उठना देख लेते। रमेश के आग्रह पर हम सब के सब दबे पाँव वहाँ तक पहुँचे, जहाँ यह कांफ्रेंस अपना कोई अत्यंत आवश्यक सम्मेलन कर रही थी। हम सब आड़ लेकर खड़े हो गये और उनकी बातचीत सुनने लगे।

फैयाज साहब शीला से कह रहे थे—"आप तो पूरी बेवकूफ हैं। भारती साहब को आखिर क्या इनकार हो सकता है। दूसरे जब मैं यह कह चुका हूँ कि उनको समझाने की जिम्मेदारी मेरी है तो फिर आपका दम क्यों निकला जा रहा है?"

शीला ने कहा—"फैयाज साहब! मैं तो खुद कहती हूं कि आप डैडी को समझाइये! लेकिन आप यह जो कह रहे हैं कि शादी के बाद समझा लिया जायेगा, बस यही बात मेरी समझ में नहीं आती!"

फैयाज ने फिर तर्क के साथ कहना शुरू किया—"देखिये साहब! या तो यह तय कर लीजिए कि आप मुझ से ज्यादा अक्लमन्द हैं, वरना जो कुछ मैं कह रहा हूं वही कीजिए। आपके पिता जी के लिए तो बस इतना जानना काफी है कि आप गोया शादी कर रही हैं चाहे आपका शौहर कोई भी ऐरा गैरा नत्थू खैरा हो। वरना कायदे से तो उनको आपसे शादी की उम्मीद ही न होनी चाहिये। इसको यूं समझिये कि यह तो जैसे एक तरह का एहसान है जो आप उन पर और अपने खानदान पर इस शादी के सिलसिले में करेंगी। नहीं तो

इसमें बुरा मानने की बात नहीं है जो आजादी आपने पायी है उसके बाद उनको अपनी नाक की तरफ से किसी वक्त भी कोई इतमीनान न होना चाहिए।"

शीला ने बुरा मानने का इरादा किया ही था कि फैयाज ने फिर डांटा—"पहले पूरी बात सुनलो! इसके बाद त्योरियों पर बल डालना। मैं एक सच्ची बात कह रहा हूं जो हमेशा कड़वी होती है। हां, तो मैं यह कह रहा था कि अब किसी से पूछने ताछने की कोई जरूरत नहीं। इन सब बातों के लिए आखिर मैं मौजूद हूं या नहीं! इसी बेचारे इरफान को देखो, खुदा की मेहरबानी से माँ-बाप सब मौजूद हैं मगर कैसी सआदतदारी से यतीम बना हुआ मेरे सामने बैठा है और हर बात की बाग डोर मेरे हाथ में दे रखी है। अब तो अगर यह जरा भी इनकार करे तो कसम खुदा की मारते मारते हुलिया बिगाड़ दूं! मैं तो सिर्फ यह चाहता हूं कि भई तुम एक शरीफ खानदान की लड़की हो, यह भी एक शरीफ घराने का चिराग है। आखिर ख्वाह-मख्वाह बदनामी क्यों हो? शैतान को अपना काम करते कुछ ज्यादा देर नहीं लगती। दोनों तरफ भरपूर जवानी है, दिलों में एक दूसरे के लिए प्यार है, एकांत की यह मुलाकातें, इस ठंडे मौसम की यह जालिम चांदनी मालूम नहीं किस वक्त क्या वारदात हो जाये? उसी वक्त से मैं डरता हूं। और इसी लिए यह चाहता हूं कि किसी तरह जल्दी से दोनों कानूनी और सामाजिक तौर पर एक दूसरे के हो जाओ!"

शीला ने अपने बुजुर्ग उपदेशक की एक-एक बात गिरह में बाँधते हुए कहा—"खैर यह बात तो होनी ही है। मुझसे ज्यादा मुश्किलें इनको हैं। लेकिन जब यह हर बात के लिए तैयार हैं तो मैं सब कुछ बर्दाश्त करूंगी। बस, मैं चाहती यह थी कि किसी तरह आप डैडी को इसमें शामिल कर लेते!"

फैयाज ने फिर एक डाँट पिलायी—"डैडी-वैडी कुछ नहीं, जो कुछ मैं कहता हूं वह होगा। फिर यह कह दो कि मुझे कोई हक ही नहीं।"

शीला ने जल्दी से कहा—"हक का सवाल नहीं फैयाज भाई! आप तो बुरा मान जाते हैं। मैं तो सिर्फ यह चाहती हूं कि किसी तरह का कोई झगड़ा पैदा न हो! बल्कि अगर आपकी राय हो तो इरफान के डैडी भी इसमें शामिल हो जायें तो अच्छा है।"

इरफान ने घबरा कर अपने खास अंदाज के साथ कहा—"नहीं अब्बा मियाँ, नहीं !"

शीला ने उसको घूरते हुए कहा—"क्या मतलब...?"

इरफान ने रोनी शक्ल बना कर फैयाज की ओर देखते हुए कहा—"फैयाज साहब ! यह समझती बूझती तो हैं नहीं, बस डाँटने लगती हैं। अब्बा मियाँ, भला यह सुन कर मुझे जिन्दा छोड़ेंगे !"

फैयाज ने इरफान की सराहना करते हुए कहा—"लड़का ठीक कहता है। न इनके अब्बा की जरूरत है और न तो आपके डैडी की। वह दोनों अपनी-अपनी शादियाँ आपकी सलाह के बगैर पहले ही कर चुके हैं तुम समझतीं नहीं हो शीला। यह इन बुड्ढों की खास आदत होती है कि इनको अपने छोटों के अरमानों का खून करने में बड़ा मजा आता है। भला बताइये कि एक लड़का और एक लड़की जब खुशी-खुशी एक दूसरे के साथ शादी करने को तैयार हैं तो इन बुड्ढों की गाँठ से क्या जाता है ? मगर नहीं, वह जब तक हजार रुकावटें पैदा नहीं करेंगे उस वक्त तक उनको चैन ही नहीं आ सकता। मसनवी जहरे-इश्क पढ़ी है तुमने ? उस बेचारी को बनारस भेज जा रहा था, नतीजा क्या हुआ ? कत्ल के लिए पान लगाये जहर खाया और सो रही। अगर आपका भी यही इरादा है तो अभी पानदान मंगवाता हूँ, और करता हूँ दुनियाँ विदा करने का इन्तजाम।"

शीला ने हंस कर कहा—"आपकी बातें तो बड़ी मनोरंजक होती हैं।"

फैयाज ने अपने भाषण का क्रम जारी रखते हुए कहा—"इस सिलसिले में तो खैर मैं आदाब अर्ज करता हूं मगर मैं इस वक्त जो बातें कर रहा हूँ। वह दिलचस्पी (मनोरंजन) पैदा करने के लिए नहीं है, बल्कि मैं सचमुच संजीदगी से कह रहा हूँ कि अब इस सिलसिले में ज्यादा देर करना ठीक नहीं। चुपके से अदालती तौर पर सिविल-मैरिज हो जायें और अपने कुछ खास खास दोस्त उसमें शामिल हों और इसके बाद क्लब में एक छोटा सा डिनर हो जायें। इसके बाद उन बुजुर्गों को खबर होती रहेगी। उछलेंगे, कूदेंगे और चुप रह जायेंगे। इस वक्त तो आशंका यह है कि मान लीजिए उन दोनों में से कोई बुजुर्ग ज्यादा उछल गया तो उसका असर बिना वजह शादी पर पड़ेगा। मैं इस अक्लमन्दी का कायल नहीं हूं कि चलती गाड़ी में रोड़े अटकाये जाए। कहो,

क्या कहती हो ? मेरे पास ज्यादा वक्त नहीं है कि आप लोगों के साथ सिर खपाता रहूं।"

शीला ने इरफान की ओर देखकर कहा—"तुम भी तो कुछ बोलो।"

इरफान ने माचिस की तिली चबाते हुए कहा "हम क्या जाने, जो आप लोगों की राय हो वह कीजिए।"

फैयाज़ ने इरफान की पीठ पर थपकी देते हुए नारा लगाया—"शाबाश बेटे। इसको कहते हैं अक्ल मन्दी कि भट्टी, अगर अपने पास खुद अक्ल नहीं है तो वह बेचारे दूसरों की अक्ल से काम ले रहे हैं। आपकी तरह थोड़े ही हैं कि अक्ल गायब और बेवकूफी हाजिर। बहरहाल, इरफान तो अपनी राय दे चुका, आपको जो कुछ कहना हो कहिये और मेरी जान छोड़िये। इस लिए कि और सारे इन्तजाम भी तो मुझे ही करने हैं।"

शीला ने कुछ देर तक सन्नाटे में आने के बाद इरफान का हाथ अपने हाथ में लेते हुए और सचमुच अत्यंत भावुकता में डूब कर कहा—"मैं तो अपने को इनके हवाले कर ही चुकी हूं। अब अगर आपकी यही मर्ज़ी है कि हम लोगों के माता-पिता को बाद में खबर हो तो मुझे इसमें कोई उज्र नहीं। जो दिन और जो तारीख चाहें सोचकर रख लीजिए।"

फैयाज़ ने शीला को पीठ थपकाते हुए कहा—"बस, यह एक बात कही है, अब मैं कल तक तुम लोगों को तारीख बताऊँगा। चलो, देर हो रही है। उठिये यहाँ से।"

वह लोग उस तरफ उठे और इधर हम लोग वहाँ से खिसक गये।

*

१७

इरफान अब तक बेगम को खबरें पहुँचा रहे थे। प्रतिदिन जाने की बजाय पहले तो उनकी उपस्थिति दूसरे दिन होने लगी और इसके बाद हफ्ते में दो बार रह गयी। लेकिन बेगम को भी उनकी कोई परवाह न थी, इसलिए कि अपने इसी

काम के सिलसिले में यह अपने को हर सम्भव तरीके से महामूर्ख सिद्ध कर चुके थे। बेगम उनकी बातें सुन तो लेती थीं, मगर किसी एक बात को भी ध्यान देने के योग्य न समझती थी।

हम अब भी उसकी एक एक बात अपने उसी कोने में बैठकर ध्यान पूर्वक सुना करते थे, सिर्फ यह अन्दाज़ा करने के लिए कि एक बेवकूफ झूठ बोलने वाला आदमी अपनी समझ बूझ से कैसे ऊँट पटाँग काम लेता है। झूठ बोलने वाले के विषय में यह बात तो खैर निश्चित है कि वह जिससे बोलता है, उसे यकीनन बेवकूफ समझता है। और झूठ बोलने को आर्ट का दर्जा देकर यह सिद्ध करने की कोशिश करता है, मानो वह अपनी इस कला के द्वारा ऐसा जादू कर रहा है कि एक एक गलत चीज को सही सिद्ध करके दिखा देगा। इसमें सन्देह नहीं कि झूठ का कला की दृष्टि से बड़ा दर्जा है। और अगर कोई पूर्ण अर्थों में कलाकार इस कला के चमत्कार दिखाने शुरु कर दे तो झूठ की महानता का अन्दाजा होता है और यह भी पता चलता है यह कितनी बड़ी कला है।

एक झूठ बोलने वाले के लिए यह बहुत जरुरी है कि वह शिक्षित भी हो समझदार भी हो साधारण जानकारी में दक्ष हो, राजनीतिक जानकरी रखता हो, विनोद-प्रिय और वाक् पटु हो और अच्छा बहाने बाज भी हो। लेकिन जब तक उसे एक्टिंग में दखल न हो, उस समय तक उसे झूठ बोल कर झूठ की महानता को ठेस पहुंचाने का इरादा न करना चाहिए। एक बेवकूफ और नौसिखिया जब कभी झूठ बोलने की कोशिश करता है तो लोग तुरन्त ताड़ लेते हैं कि यह झूठा है। इसके चेहरे पर झूठ का साइन-बोर्ड लटक रहा है, और इससे बढ़कर नीच इन्सान मुश्किल ही से कोई हो सकता है। लेकिन जब एक कलाकार झूठ बोलता है तो उस झूठ को राजनैतिक, ऐतिहासिक और अन्य मेकअपों से सजा कर पेश करता है। यह कलाकार अपनी इन्हीं कलापूर्ण साधनों के सहारे ऊँचा समझा जाता है। वह डिक्टेटरी करता है। कहीं हिटलर कहलाता है कहीं मसोलीनी। साराँश यह कि अगर बदनाम ही होता है तो नामवरी के साथ और विश्वास की बात भी यही है कि झूठ बोलना सबका काम हो ही नहीं सकता, बल्कि अगर हम लुकमान हकीम होते और हमसे कोई पूछता कि

दुनियां का सब से अधिक कठिन काम क्या है तो हम आंख बन्द करके कह देंगे कि 'झूठ बोलना।'

असल में एक होता है झूठ बोलना और एक होता है झूठ बकना। झूठ बोलने का काम, जैसा कि हम कह चुके हैं हिटलर और मुसोलिनी टाइप के लोगों को ही हो सकता है। और झूठ बकने के लिए जिसका जी चाहे बक ले। अतः या तो कोई बहुत बड़ा राजनीतिज्ञ झूठ बोलता है या कोई परले दर्जे का बेवकूफ झूठ बकता है। मध्यम श्रेणी के लोग आम तौर पर सच ही बोला करते हैं।

इरफान साहब जो कुछ भी थे, वह अब हमसे क्यों कहलवाते हैं स्वयं ही समझ लीजिए। बहरहाल आजकल आप उधर तो शीला के साथ शादी के मामले पक्के कर चुके थे और इधर अपनी बहिन के मुखबिर-खास बने हुए थे। जब तशरीफ लाते थे एकाध नयी गढ़ी कहानी अपनी बहिन को सुना कर अपने ख्याल से यह समझते थे कि भला वह क्या जान पायेगी कि क्या सच है और क्या झूठ?

आप अपने ख्याल से हाथ-पांव चलाकर, आंखें मटकाकर और कई उचित अवसरों पर मुंह चढ़ा चढ़ा कर झूठ बोलने की कोशिश करते थे। खुद दूसरे को बेवकूफ बनाते और अपनी बेवकूफी से बराबर [illegible]। इसलिए बेगम के अंदाज से मालूम होता था कि वह इन हजरत की बातों को सिर्फ इस ख्याल से सुनकर खामोश रह जाती थी कि जैसे कुछ भी हैं फिर भी अपने रिश्तेदार हैं। नहीं तो उनके झूठों का जवाब यह था कि शक्ल पहिचानी न जाती। और अगर बेगम सब्र और शराफत से काम न लेती तो इरफान साहब का दोनों कानों के बीच में सिर नजर आता।

हमको उनकी बातें सुन-सुनकर कई बार तो इतने जोरकी हंसी आती कि उसे दबाना मुसीबत हो जाती थी। अब चूंकि शीला आपकी जीवन साथी बनने वाली थी, इसलिए आपकी जासूसी रिपोर्टों का रुप बहुत बदल गया था।

कहने लगे—"अरे आपा! मैं आप से सच कहता हूं वह औरत अपनी जात से बहुत नेक है। अगर वह शराफत से काम न लेती और अपने माँ बाप की इज्जत की तरफ से जरा भी लापरवाह होती तो हमारे भाई साहब अब तक न जाने क्या कर चुके होते!"

बेगम ने ऊन के गोले में तीली घसौंते हुए कहा—"अच्छा तो वह बड़ी शरीफजादी हैं और तुम्हारे भाई साहब बड़े कमीने हैं।"

इरफान ने सिटपिटा कर कहा—"न...न...न...मेरा यह मतलब नहीं है बल्कि मैं यह कहना चाहता था कि यानी मेरा मतलब यह था कि मैंने इतने दिनों में शीला का खूब अन्दाजा कर लिया है ? अगर भाई साहब की तरफ से जोर न दिया जाये और भाई साहब ही उसको घेरे न रहते तो उसकी तरफ से कोई खास बात का सवाल ही नहीं उठता !"

बेगम ने झुंझला कर कहा—यह जनाब का अन्दाजा है न, इसलिए इसका गलत होना जरूरी है मैं वलव की बातों को जानती हूं, न मैंने आज तक शीला की शक्ल देखी है, न तुम्हारे भाई साहब ने मुझसे कुछ कहा है। मगर तुम्हारी इस बातचीत का अन्दाजा करने के बाद मैं इस नतीजे पर पहुंची हूं कि तुम वहाँ जाकर और सब कुछ देखने और समझने के बाद भी कोरे के कोरे हो, और तुम से ज्यादा मैं घर बैठ कर ही समझ चुकी हूं कि उसका सिर्फ 'शौकी' कहना इस बात की दलील है कि उसको किस हद तक दिलचस्पी है !"

इरफान ने गर्दन हिलाते हुए कहा—"यह तो है !"

बेगम ने इस समर्थन से और भी जलकर कहा—"अब आप कह रहे हैं यह तो है और अभी जो आप फरमा रहे थे वह क्या था ? हजार बार तुमसे कहा है कि भाई तुम खुदा के लिए कोई अपनी राय न दिया करो ! सिर्फ जो देखो वह ज्यों का त्यों बता दो। मगर तुम अपनी काबलियत से मजबूर हो। बातें कम बताते हो और राय ज्यादा देते हो।"

इरफान ने अपनी समझ से बहुत बड़ी बात कही—"अच्छा तो गोया आप का मतलब यह है कि जैसे अखबारों में एक तो होता है न्यूज एडीटर और एक होता व्यूज एडीटर तो क्या मैं न्यूज एडीटर मुकर्रर किया गया हूँ।

बेगम ने बिना मुसकुराये हुए कहा—"जी हाँ। मुकर्रर किये गये थे। मगर मैं सोच रही हूं कि अब इस जगह से भी आपको हटा दूं। मुझे तो हैरानी होती है कि तुमने आखिर बी० ए० कैसे पास कर लिया ? बात असल में यह है कि जिस साल तुम पास हुए हो, उसी साल मुल्क की आजादी के सिलसिले

में हर जेल से पन्द्रह कैदी छोड़े गये थे और हर यूनिवर्सिटी से पन्द्रह लड़के रियायती तौर पर पास किये गये थे, वरना तुम्हारे जैसे स्टूडेन्ट को जो यूनीवसिटी बी० ए० की डिगरी दे दे वह तो इस लायक है कि उस पर पैट्रोल छिड़क कर दियासलाई दिखा दी जायें।

इरफान ने बेवकूफी से हंसते हुए कहा—"अरे आपा। आप क्या समझ सकती हैं कि मैंने किस मेहनत के साथ बी० ए० पास किया है। खुदा की कसम, आज तक प्रोफेसर तारीफ करते हैं।"

बेगम ने आँखो में आँखे डाल कर कहा—"जरा उन प्रोफेसरों को किसी दिन यहाँ ले आओ। हिसाब का इम्तिहान तो उसी वक्त ले लूंगी, पचासी माँरुगी और एक गिनूंगी। बात यह है न, जैसी सह वैसे फरिश्ते। आखिर आप ही के प्रोफेसर हैं न। वह प्रोफेसर जिनके चेलों का हाल यह है कि होने वाले ससुराल को पहला ही खत भेजा तो लाहौर की जगह 'लाहोल' लिख दिया। वहाँ से जवाब आया कि—'लाहौल विलाकूवत। ऐसे चुगद को हम अपनी लड़की नहीं दे सकते'...... ।"

इरफान ने बजाय झेंपने के हंसते हुए कहा—'मगर आपको यह बात खूब याद रही। हांलाकि मैं अंग्रेजी में 'लाहौर के स्पेलिंग ठीक लिख सकता हूं!'

बेगम ने इस बेवकूफ को अवज्ञा से देखते हुए कहा—'तो क्या हुआ। कोई ऐसी और हिमाकत कर सकते हो। मगर आप तो अपनी बेवकूफी पर खुद ही हंसने लगते हैं ऐसा आदमी जब अपनी बेवकूफी पर आपही हंसे उसका कोई इलाज नहीं। और मालूम नहीं क्या बात है कि मुझे बेवकूफ के साथ चाहे वह किसी भी हालत में हो कभी हमदर्दी नहीं हो सकती। बात यह है कि जाहिल होना कोई बुरी बात नहीं, लेकिन आप जैसे पढ़े लिखे जाहिलों का तो कोई इलाज ही नहीं। मुसीबत यह कि यूनीवर्सिटी ने आपको यह समझा दिया है कि आप बी० ए० हैं। मगर हाल यह है कि आपको मालूम नहीं कि खुद पास हुए हैं या किसी और के डिपलोमें पर अपना नाम लिख लिया है!'

इरफान ने बात टालते हुए कहा—'खैर, अब तो सवाल भाई साहब का है उनके बारे में आप क्या तय करती हैं और मेरे लिये क्या हुक्म है?'

बेगम ने लापरवाही से कहा—'आप उनकी फिक्र न कीजिए। अगर आप सिर्फ क्लब की खबरें बिना अपनी राय के पहुंचा सकते हैं तो शुक्रिया। वरना आप से कोई शिकायत तो हो ही नहीं सकती।'

इरफान ने कहा—'यह आज आखिर बात क्या है कि आप मुझसे कुछ नाराज़ हैं?'

बेगम ने सच बोलते हुए कहा—'बुरा न मानो तो कहूँ और खुशामद न समझो तो तुम्हारे मुँह पर कह दूँ कि तुम बेवकूफ़ हो। और मैं सब कुछ कर सकती हूँ मगर किसी बेवकूफ से खुश नहीं हो सकती। किस्मत ने तुमको बना दिया है भाई, इसलिए मजबूर हूँ वरना हाकिम होती तो तुम्हें शहर से निकलवा देती। तुम्हारे जैसा शौहर मिलता तो खुदकशी कर लेती! लेकिन अब करूँ तो क्या करूँ? आप ठहरे मेरे भाई और शर्म आती है मुझको जो कोई तुमको देखता है। मेरा भाई भी समझता है और बेवकूफ हालांकि तुम बेचारे भी मजबूर हो, कोई आदमी अपनी खुशी से बेवकूफ नहीं बनता बल्कि शायर की तरह पैदा होता है। यह चीज़ पढ़ने लिखने या सिखाने सीखने से नहीं मिलती बल्कि खुदा जिसको चाहे दे दे। फरिश्तोंसे कुछ बेहूदी सूरतें बनवायी गयी थी और कुछ फ़ुरसत के वक्त दिल बहलानेके लिए उन्होंनेकारटून बना लिये थे। मतलब था उनका आपस में आपकी सूरत से दिल बहलाना। लेकिन भूल से दुनियां की तरफ़ आने वाली भीड़ में आप भी चले आये और यह मुसीबत इस खानदान पर आ गयी''

इरफान ने जल्दी से अपनी टोपी उठाते हुए कहा—'आज आपकी तबीयत कुछ बहुत ज्यादा खुश मालूम होती है और आप सचमुच ही मुझे बेवकूफ बनाना चाहती है इसलिए मैं तो आदाब अर्ज करता हूँ!'

बेगम ने कोई जवाब नहीं दिया और इरफान चुप चाप बाहर निकल गया।

*

१८

फैयाज साहब से आजतक मुलाकात ज़रा मुश्किल से होती थी। दोनों घरों

की शादी के प्रबन्ध और बेचारा अकेला आदमी। लड़की के बाप बने हुए थे और लड़के के भी बुज़ुर्ग। बड़ी मुश्किल से एक दिन मुलाक़ात हुई तो हमने उनको देखते ही कहा—

"तू अगर भूल गया हो तो तुझे बतला दूँ,
तेरे फ़िराक़ में शायद कोई नख़्चीर भी था।"

कहने लगे—"बात यह है कि अब कहिये तो आप से माफ़ी माँग लूँ। मगर आपकी बदौलत जो काम अपने सिर ले रखा है उसे भी तो अंजाम तक पहुँचाना है बड़े झगड़े पड़े हुए हैं इस शादी में। वह जो बेवकूफ़ आपके साले इरफ़ान साहब हैं, उन हज़रत ने मालूम नहीं किस किस से इस बात की चर्चा कर दी है और यह ख़बर गश्त करता हुई भारती साहब तक पहुँच गयी। वह बुड्ढा कहता है कि वे दूलहा और दुलहन दोनों को गोली मार देगा। दुलहन तो ख़ैर अपने इश्क़ के सिलसिले में अपने बाप के हाथों से शहीद होने के लिए तैयार है क्यों कि उसे मालूम है कि भारती साहब के पास बन्दूक की लाइसेंस नहीं है। लेकिन इरफ़ान ने जब से यह सुना है उनका दम निकला जाता है कि कहीं भारती साहब बिना बन्दूक ही के उसको गोली न मार दें! लाख लाख समझाता हूँ कि बरख़ुरदार, इस तरह के मामलों में ऐसी बातों का सामना करना ही पड़ता है। लैला के बाप ने तो मजनूँ के लिये न मालूम कितने आदमी छोड़ रखे थे कि जहाँ मिले पकड़ कर साले को ख़ूब ठोंको। मगर वह लैला के इश्क़ से बाज़ न आया।"

ज़रा रुक कर फिर कहने लगे—"लेकिन वह बेचारे इरफ़ान इस वहशत ओ इज़्तराब में मरे जाते हैं और कुछ ऐसे डर गये हैं कि आजकल नदी के किनारे वाली सड़क से घूमकर क्लब आते हैं कि कहीं रास्ते में भारती साहब की गोली उनकी इन्तज़ार में टहल न रही हो! शीला के पक्के इरादे को देखिये कि भारती साहब ने जब उससे पूछा तो उसने साफ़-साफ़ कह दिया कि—"जी हाँ! यह बिलकुल सच है। और अगर आपने इनकार भी किया तो भी मैं इरफ़ान से वादा कर चुकी हूँ! अपने वादे पर क़ायम रहूँगी। क्यों कि लड़की एक बार ही किसी की होती है और फिर ज़िन्दगी भर उसी की रहती है!' भारती साहब ने उसको हर तरह डराया, धमकाया, नाचे कूदे, चीखे चिल्लाये, घर सिर पर उठा लिया! कहने का मतलब यह कि जो कुछ इस बुढ़ापे में कर सकते थे कर गुज़रे! लेकिन शीला टस से मस

न हुई। आखिर नौबत यहाँ तक पहुँची कि खुद मुझे भारती साहब के पास जाना पड़ा! आदमी ज़रा काम आने वाला किस्म का बेवकूफ है मैंने उनको सारी ऊँच नीच समझाने के बाद इस हद तक राज़ी कर लिया है कि वह इरफान से मिलना चाहते है।"

फैयाज़ साहब अपनी छड़ी घुमाते हुए पुनः बोले—"उनका भी ख्याल ठीक है! कहता यह है बुड्ढा कि साहब मुझे न धार्मिक भेद भाव की फिक्र है न जात-पात की और न मुझे इससे कोई बहस नहीं कि वह लड़का किस तरह का है! लेकिन यह बात ठीक थी तो आखिर मुझसे छिपायी क्यों गयी? छिपायी तो वह चीज़ जाती है जो किसी न किसी एतबार से ठीक न हो! खैर, मैंने उस बुड्ढे पर अपना मन्त्र फूंक कर पढ़ दिया है और आज तीन दिन से वह इरफान से मिलने की इन्तजार में हैं। मगर अब इरफान को कौन समझाये? उनका दम निकला जाता है। मैं चाहता हूँ कि इस वक्त तुम मिल गये हो तो हम दोनों मिल कर इरफान को भारती साहब के पास ले चलें! इरफान यहीं क्लब में कहीं झाक मार रहा होगा, मैं उसे लाता हूं। तुम यहीं इन्तजार करो......!"

यह कहकर फैयाज़ गये और उल्टे पाँव इरफान को लेकर वापस भी लौट आये। हम कदाचित् कुछ सानाना चाहते थे, लेकिन इतना समय ही न मिल सका! घंटे भर तक हम दोनों इरफान को समझाते बुझाते रहे और वह हज़रत इस तरह अपनी जान बचाने की कोशिश करते रहे जैसे बकरा कसाई से भागता है।

बड़ी मुश्किल से उनके काँपते हुए बदन को सम्हालते हुए और धड़कते दिल को थामें हम लोग उनके भावी ससुर के घर तक पहुँचे!

भारती साहब ने देखते ही बड़े ज़ोर से डाँटा—"आइये...आइये।"

और इरफान सहम कर जहाँ खड़े थे वहीं खड़े रह गये।

फैयाज़ ने इरफान का परिचय कराते हुए कहा—"भारती साहब! आप ही हैं मिस्टर इरफान, लखनऊ यूनीवर्सिटी के ग्रेजुएट और नहर के मुहकमें में एक जूनियर इन्सपेक्टर।"

भारती साहब ने चश्मा लगा कर इरफान की ओर देखा और एक मिनट तक लगातार देखने के बाद, अब जो बढ़े हैं वह अपना सिगार उठाने तो इरफान

ने समझा कि निशाना बाँध चुके हैं और अब बन्दूक उठा रहे हैं । सदा के लिए बिदा लेने वाली नजरों से हम दोनों की ओर देखा, होंठों ही होंठों में कुछ कहने की कोशिश की, शायद मरने से पहले कुछ जाप कर रहे थे ।

लेकिन भारती साहब ने इस बीच में अपना सिगार सुलगाकर इस खतरे को दूर कर दिया ? फिलहाल इरफान को आयी हुई बला टल गयी । भारती साहब ने सिगार के दो भयानक कश लेते हुए कहा—"जी, तो मिस्टर इरफान । आप मेरी लड़की शीला के साथ शादी करना चाहते हैं ?"

इरफान ने सोचा कि मरते समय झूठ न बोला जाये । बड़े साहस से काम लेकर कह गये—"जी...वह...यानी...गोया...मेरा मतलब यह...कि... शायद...जी हाँ ।"

भारती साहब ने उनको घूरते हुए कहा—"क्यों ? आखिर क्यों... ? यानी क्यों शादी करना चाहते है......?"

वह तो खैर इरफान थे, लेकिन यह सवाल अगर दुनियाँ का कोई ससुर अपने होने वाले दामाद से करे तो सम्भवतः कोई दामाद भी ऐसा नहीं हो सकता जो साफ साफ यह बता सके कि वह शादी करना क्यों चाहता है ?

अतएव बेचारा इरफान भी हड़बड़ा कर रह गया । मगर भारती साहब ने अपने सवाल को खुद ही विस्तार से दोहराया—"मेरा मतलब यह है कि आपने अपना जीवन साथी बनाने के लिए मेरी लड़की यानी शीला का चुनाव किस कारण से किया होगा और वह सारा कारण शायद आप प्रेम बतायेंगे जिसको मैं एक तरह की बेहूदगी के अलावा और कुछ नहीं समझता । बेहूदगी मैं इसलिए कहता हूँ कि शीला की माँ से पहले मैंने भी एक लड़की से प्रेम किया, उसके इस प्रेम का नतीजा यह हुआ कि मुझे शादी करनी पड़ी और शादी का नतीजा यह हुआ कि वह प्रेम खत्म होगया ! फिर रंजिशें शुरु हो गयी, लड़ाइयाँ हुई । दो साल तक जिन्दगी मुसीबत बनी रही और आखिर मुझे तलाक देना पड़ा । शीला की माँ से मैंने डर के मारे शुरु से लेकर आज तक कभी प्रेम नहीं किया, नतीजा यह हुआ कि हम अभी तक दोनों जिन्दा हैं । वह पत्नी है और मैं पति हूं । हम लोगों की ये दो लड़कियाँ हैं । एक यह शीला और एक इससे बड़ी कमला । कमला तीन साल हुए प्रेम के

चक्कर में पड़कर एक इन्जीनयर से शादी कर चुकी है और हम लोग हर समय इन्तजार में हैं कि उन दोनों के बीच कब तलाक की नौबत पहुँचती है। वही सूरत अब शीला के सिलसिले में पेश आने वाली है। हाँ, तो मैं यह पूछना चाहता हूं कि मिस्टर इरफान आप शीला से आखिर क्यों शादी कर रहे हैं?"

भारती साहब के इस बयान पर हम और फैयाज़ दोनों चकित थे। इरफान बेचारे किस खेत की मूली। इस सवाल पर उन्होंने पहले हमको फिर फैयाज को देखा, तो फैयाज ने उनकी वकालत करते हुए कहा—"भारती साहब। बात असल में यह है कि यह दोनों स्वाभाविक तौर पर एक दूसरे से इतनी बराबरी रखते हैं कि दोनों की यह चाह है कि इन दोनों की आपस में शादी हो जायें। यह एक कुदरत किस्म की माँग है और हम सबका फर्ज यह है कि इस सिलसिले में उनकी मदद करें।"

भारती साहब ने चश्मे की ओट से हमारी ओर देखते हुए कहा—"ठीक हैं ठीक है। लेकिन मैं न स्वभाविक समानता को मानता हूं और न तो मेरे खयाल से इसका कोई असर जीवन पर पड़ता है। मेरी जिन्दगी का तजुर्बा यह है कि शीला की माँ हमेशा से बहुत हँसमुख रही है। बहुत बातूनी भी है और मैं स्वभाविक तौर पर जरा एकान्त प्रिय और गम्भीर किस्म का आदमी हूँ। मेरी जिन्दगी का रिकॉर्ड यह है कि एक बार भी अकारण नहीं हंसा। वह मिर्चे ज्यादा खाती हैं और मै नमक ज्यादा पसन्द करता हूँ। उनको फिल्मी गाने पसन्द हैं और मै पक्के रागों का दिलदार हूँ। वह शराब से बेहद नफरत करती हैं और मैं अपने जीवन में उस दिन को शामिल ही नहीं समझता जिसकी शाम का सूर्य अस्त होने के बाद मेरे लिये एक जाम न निकले।"

फैयाज ने खुशामद का बड़ा अच्छा अवसर देख कर कहा—'सुब्हान अल्लाह कैसा शानदार शायरात बयान है।'

भारती साहब ने जल्दी से कहा—'न, न, न, ! अगर यह शायराना बयान है तो मैं माफी चाहता हूँ। मुझे शायरों कवियों से बहुत नफरत है। बल्कि मेरे एक किरायेदार थे, जब मैंने उनके साइन-बोर्ड पर उनका नाम देखा और यह मालूम हुआ कि यह एक शायर हैं तो फौरन उनको नोटिस दे दिया कि अब मकान खाली कर दीजिए। एक साहब ने एक बार मुझे अपनी कविता सुना दी,

इसके बाद से वह जब कभी आते हैं तो मैं अन्दर ही से कहलवाता हूँ कि मैं घर पर नहीं हूँ। एक बार एक मुशायरे में फँस गया तो मुझे धड़कन होने लगी। अगर अब भी किसी जलसे आदि में जाता हूँ तो पहले छानबीन कर लेता हूँ कि यहाँ पर वह बात तो नहीं होने वाली जिसको शायरी कहते हैं।'

फैयाज़ ने अवसर उचित समझकर कहा---'यह अजीब बात है। हमारे इरफान साहब को भी शायरी से ऐसी ही नफरत है।'

भारती साहब ने बड़े ज़ोर से कहा—'तो होगी नफ़रत, यह कोई अच्छी बात थोड़ी है। अगर इन्हें इससे दिलचस्पी होती तो अच्छा था, क्योंकि शीला को तो इसका बहुत शौक है। शायरी से मिस्टर इरफान की नफरत बड़ी अच्छी चीज़ थी बशर्ते कि वह मेरे साथ शादी के उम्मीदवार होते।'

हम सबको इस बात पर अनायास हंसी आ गई।

भारती साहब ने पूर्ववत् गम्भीरता से कहा—"न न न! हँसी की बात नहीं, बल्कि जो कुछ मैं कह रहा हूं उस पर ध्यान दीजिए। अभी अभी आप कह रहे थे कि दोनों के स्वभाव बहुत मिलते जुलते हैं लेकिन यह तो बड़ी आपस में दुश्मनी है।"

फैयाज ने बैठे बिठाये यह मुसीबत मोल ले ली। खुशामद में एक बात कह गये और अब इस बुड्ढे से जान छुड़ाये न छुटती थी। आखिर हमने फैयाज की तरफ देखते हुए कहा—"मेरे खयाल से फैयाज साहब आपका यह खयाल कुछ ठीक नहीं। इन दोनो के बीच तो शायरी की खूब बातचीत होती रहती है...।"

भारती साहब ने बात काट कर कहा—"बातचीत दूसरी चीज है। हो सकता है बातचीत यही होती हो कि वह कहती हो मुझे दिलचस्पी है और यह कहते हों कि मैं इस से दिलचस्पी नहीं रखता। शुरु में तो जवानी के जोश में यह मतभेद भावनाओं के पहाड़ के सामने राई नजर आता है। लेकिन जब शादी हो जायेगी, अरमान पूरे हो जायेंगे तो यही मतभेद बन जायेंगे पहाड़, और भावनाएँ होंगी राई। क्या समझे आप? सिगरेट पीजिएगा या कुछ और मँगवाऊं?"

फैयाज ने कहा—"काफी।"

भारती साहब ने झटपट कहा—"काफी तो शायद न होगी, चाय मगँवा सकता हूँ।"

फैयाज ने जल्दी से कहा—"जी नहीं, मेरा मतलब यह था कि सिगरेट काफी है।"

भारती साहब ने गौर करते हुए कहा—"काफी के अर्थ हैं बहुत। इसकी जमा यानी बहुवचन क्या है मिस्टर इरफान साहब...?"

इरफान ने ज़िन्दगी भर में शायद पहली बार समझदारी की बात घबराकर गलती से कह दी—"काफी की जमा क्या हो सकती है...जमा तो बहुत सी चीजों को कहते हैं और काफी का मतलब खुद बहुत के हैं।"

भारती साहब ने खुश होकर कहा—"बहुत खूब, बहुत खूब। आपको शायद ऐसी ही कोई बात शीला को पसन्द आ गयी होगी। यह ठीक है, मेरी राय में आप जरूर शादी कर लीजिए। लेकिन मैं यह मालूम करना चाहता हूँ कि आपने शादी के फिलसफे (दार्शनिकता) पर भी गौर किया है या सिर्फ शादी कर रहे हैं...?"

इरफान मालूम नहीं किस अदृश्य शक्ति के आधीन बोल रहा था। कहने लगा—"गौर तो मैंने नहीं किया, इसलिए कि जब तक शादी का इत्तिफाक पेश न आये, गौर शादिर कैसे हो सकता है? गौर करने के लिए यह जरूरी है कि जिस चीज पर गौर किया जा रहा हो वह कम से कम निगाहों के सामने नहीं तो खयालों में जरूर हो अभी तो मैंने अपनी मोजूदा जिन्दगी पर गौर करने के बाद यह फैसला किया है कि शादी कर लूँ। अब शादी करने के बाद..."

भारती साहब ने बात काटकर कहा—"शादी करने के बाद यह गौर करूँगा कि अब क्या करूँ? यानी वही बात हुई कि—

'अब तो घबरा के यह कहते हैं कि मर जायेंगे
मर के भी चैन न पाया तो किधर जायेंगे!'

उमर के कारण दिमाग इतना खराब हो चला है कि देखिये, शेर तक पढ़ जाता हूँ!"

फिर असली उद्देश्य पर आते हुए भारती साहब बोले—"खैर, मैं यह कह रहा था कि मुझे एतराज नहीं है आप लोग तारीख आदि तै करने के बाद मुझको सूचना दे दीजिएगा ताँकि मैं अपने प्रोग्राम में इसे भी लिख लूँ। और हाँ, हफ्ते के दिन एक बजे के बाद या इतवार के दिन यह सूचना न होनी चाहिये

क्यों कि बैंक कल दिन बन्द हो जाता है और मैं इस मौके पर एक तुच्छ रकम अपनी लड़की को देना चाहता हूं। मैं चेक दे देता, मगर हो सकता है हाथ काँपने के कारण दस्तखत कुछ गलत हो जायें और आप मेरे लिए कोई गलत राय कायम न कर लें। अब आप लोग जा सकते हैं और जिस दिन आपका जी चाहे और आप मेरे यहाँ खाने पर आना चाहें तो मेरे खानसामा को खबर कर दीजिएगा, अच्छा गुड नाइट !"

※

१६

क्लब में आजकल हर तरफ इरफान और शोला की शादी के चर्चे थे, पर फिर भी सावधानी यह बरती जाती थी कि क्लब से बाहर यह बात न पहुँचे। इरफान को तो और अपने बाप का डर था लेकिन फैयाज को इरफान के बाप से ज्यादा इस बात का खयाल था कि अगर यह खबर इरफान के वालिद को पहुँची तो फिर बेगम तक भी यह बात पहुँच जायेगी। और उनको खबर पहुँचाने के अर्थ यह थे कि जैसे सारा खेल ही खत्म हो गया।

फैयाज इस सिलसिले में हर सम्भव सतर्कता बरत रहे थे और चूंकि क्लब के मेम्बर भी हमारे हमराज थे, इसलिए उनकी तरफ से तो कोई आशंका न थी, अलबत्ता खुद दूल्हे मियाँ इतने नासमझ थे कि खुद उनकी तरफ से कदम-कदम पर डर था कि न मालूम यह क्या कर गुजरें। और कहीं डर के मारे घर ही में किसी से यह भेद न खोल दें। जहाँ तक हो सकता था उनको समझाने की पूरी कोशिश की जा रही थी, और भारती साहब के यहाँ के किस्से के कारण कुछ उनके भी कान खड़े हो गये थे कि उनकी बेवकूफी के कारण से ही इस बात ने अकारण भारती साहब तक तूल खींचा था।

आज क्लब के मेम्बरों ने उन्हें बधाई देने के लिए एक जलसा किया था क्योंकि इरफान भारती साहब के यहाँ जाकर जिन्दा ही वापस जो आ गये।

कोई फूलों के हार लाया था, कोई कुछ कोई कुछ। इरफान ने लाख इस अवसर पर भागने की कोशिश की, मगर सबने उसको घेर कर बिठा ही लिया। उसको रोकने वालों में शीला भी शामिल थी। जो इरफान को बराबर कहे जा रही थी कि तुम अपने दोस्तों में अपने आपको बेवकूफ सिद्ध करने की कोशिश क्या कर रहे हो? दोस्त ही आपस में मजाक न करेंगे तो कौन करेगा। मुझको देखो कि तुम्हारे कारण मेरा भी मजाक उड़ता है, लेकिन मैं इस तरह रस्सियाँ नहीं तुड़ाती।

बहरहाल, शीला ने और बाकी सब ने इरफान को समझा बुझाकर मना लिया और इस जलसे की करवाई शुरू हुई। सब से पहले फैयाज ने खड़े होकर इस बहादुर सिपाही की सेवा में अभिनंदन-पत्र भेंट किया, जो बड़ी बहादुरी से अपने खौफनाक ससुर के सामने सिर पर कफन बाँध कर गया और उस मैदान से पीठ दिखा कर भागने की बजाय सफल होकर वापस लौटा। अभिनंदन पत्र में उन सब कारनामों का जिक्र था जो इस वीर सिपाही ने भारती साहब के यहाँ पेश किये। यह सूरमा जरा न सहमा, न झिझका, न झपका बल्कि मौत से जिस वीरता के साथ खेल खेला है उसके पुरस्कार में मिलना तो चाहिए था विक्टोरिया क्रास, लेकिन फिलहाल उसे शीला मिलने वाली है।

इस अभिनंदन-पत्र का मजा तो सभी ने लिया पर सबसे ज्यादा शीला आनंदित हो रही थी। अभिनंदन-पत्र के बाद कई दोस्तों ने कवितायें पढ़ीं। फिर खलीक और रमेश ने उसे हार पहनाये। कई दोस्तों ने दूर ही से उस पर फूल उछाले।

क्लब के सेक्रेटरी की हैसियत से रमेश ने कहा—सज्जनो! बधाई के मौके पर क्लब की कार्य-कारणी की यह हार्दिक इच्छा थी कि मिस्टर इरफान को चाँदी और सोने में तोला जाये। लेकिन क्लब की आर्थिक दशा ने इस बात की इजाजत नहीं दी। यह सूरत भी सम्भव हो जाती बशर्ते क्लब के मेम्बरों के जिम्मे चन्दे की काफी रकम बाकी न होती। खुद मिस्टर इरफान की तरफ भी चौरासी रुपये चार आने निकलते हैं। खैर, चूँकि इस रस्म का न होना एक तरह की अपशगुनी है इसलिए आपको सोने की बजाय अखबारों के पुराने फाईलों से तौलने का प्रस्ताव पेश करता हूँ।"

इस प्रस्ताव का यों तो सबने समर्थन किया पर शीला ने उसको पसन्द न किया और यह कहकर इस मजाक को खत्म कर दिया—"बस, रमेश ! हर बात की एक हद होती है।"

अतएव जलसे की कारवाई खत्म कर दी गयी। लेकिन जलसे के बाद भी इरफान का भारती साहब के यहाँ जाना, बातचीत का एक खास विषय बना रहा।

फैयाज ने गम्भीरता के साथ कहा—"खैर, यह तो मजाक था। मगर मैं सचमुच हैरान हूं कि भारती साहब के सामने पहुँच कर इरफान में कैसी गजब की हिम्मत और किस बला की हाजिर जवाबी पैदा हो गयी था यानी दुजिलाक ! तुम सोच भी नहीं सकते कि उसने कैसे कैसे जवाब उनको दिये हैं।"

हमने बात काटकर कहा—"साहब इनके जवाबों से ज्यादा भारती-साहब के सवालों पर हैरान हूं क्या क्या बातें उनको सूझ रही थीं ! एकदम से काफी की जमा पूंजी बैठे।"

शीला ने हंसी से बेकाबू होते हुए कहा—"अरे ! उनकी बातें आपने अभी सुनी ही कहाँ हैं। वह बातें करते हैं तो न जाने कहाँ से कहाँ पहुंच जाया करते हैं। आज ही आप लोगों के आने की बातें करते हुए एकदम से कहने लगे कि इरफान का नाम क्या है?' मैंने उन्हें बड़ी मुश्किल से समझाया कि इरफान ही है। यह बात उनमें कुछ उमर के कारण पैदा नहीं हुई हैं बल्कि उनका तो हमेशा से यही हाल है।

रमेश ने गर्दन हिलाते हुए कहा—"तो यह कहिये कि यह जो आप में और आपकी बातचीत में प्रायः बेहूदापन पैदा हो जाता है वह आपके वंश और पैतृकता की खूबी है।

शीला ने रमेश की ओर त्योरियों पर बल डालकर देखते हुए कहा—"और श्रीमान की पैतृक खूबी शायद ये ताने और व्यंग्य हैं। मैं तुमसे पत्त की जलो बैठी हूं रमेश, कि तुम तो ताने आप मेरी बात पर, और गुस्सा उतारें बेचारे इरफान पर। जैसे धोबी से बस न चले तो गधे के कान ऐंठे।"

रमेश ने तड़पकर कहा—"वाह वाह क्या बात कही है ! सुन रहे हो इरफान भाई, शादी की तारीख अभी निश्चित ही नहीं हुई लेकिन आपके बारे में यह पहले ही हो गया कि आप गधे हैं।"

फैयाज ने एकदम से चौंककर कहा—"मेरे भाई ! यह किस्सा छाड़ो । शादी की तारीख तै होना सबसे जरूरी है ।"

हमने राय देते हुए कहा—"मेरा ख्याल यह है कि भारती साहब ने चाहे हम पर ही सब बाते छोड़ दी हैं मगर हमारा फर्ज यह है कि हम तारीख उन्ही से तै करायें । उन्होंने कहा है न कि हम लोगों का जिस दिन जी चाहे उनके खानसामा को खबर देकर खाने पर जा सकते हैं । इसलिए आज खानसामों को पर्चा लिखिये कि कल हम लोग खाने पर आ रहे हैं । और कल ही यह तारीख उन्ही की सलाह से तै हो जायें !"

फैयाज ने हमारी सम्मति का समर्थन तो किया, मगर यह बात उनकी शान के विरुद्ध थी कि किसी की राय को एकदम से मान लिया जाये । अतएव कुछ देर सोचने के बाद बोले—"राय तो आपकी ठीक है मगर आपने इस बात पर गौर नही किया है कि हमको पहले आपस में एक तारीख तै कर लेनी चाहिये । इसके बाद उसी तारीख के बारे में उनकी सलाह लेगें । नहीं तो अगर हमने उन से पूछी तारीख और उन्होंने यह कह दिया कि आपकी कुर्बानि दिसम्बर को कौन सी तारीख होगी, या यह फरमाया कि सोमवार किस दिन है, तो बताइये हमारे पास इसका क्या जवाब होगा......?"

शीला अपने पति के विषय में यह बातें सुन सुन कर बहुत खुश हो रही थी आखिर उन्होंने कहा—"आप खुद कोई तारीख तै कर लीजिए । उनको इस झगड़े में न डालिये नही तो वह पता नहीं क्या क्या उलझनें पैदा करके आपके 'प्रोग्राम' को गड़बड़ कर दें जो आपके सम्भाले भी न सम्भल सके ?"

रमेश ने माथे पर हाथ मार कर कहा—"हाय कमबख्ती । क्या जमाना आ लगा है, यह आज कल की लड़कियाँ जो अपने ब्याह की बात में बढ़ बढ़ कर बोल रही हैं ।"

शीला ने छूटते ही कहा—"मुझे क्या मालूम था कि यहाँ रमेश मौसी बैठी हैं !"

रमेश पर बात चिपककर रह गयी और सबने इतने कहकहे लगाये कि रमेश बदहवास हो कर रह गया । यहाँ तक कि चलते चलते उससे जिस जिस व्यक्ति ने बात की, 'मौसी' कह कर सम्बोधन किया ।

❀

२०

नाजों और बेगम को जो कानफ्रेंसें हो रही थीं, उनमें कभी कभी फैयाज साहब भी शामिल हुआ करते थे और जिस कानफ्रेंस में उनके आने की सूचना हमको हो जाता थी उसका तमाशा देखने के लिए हम जरूर घर पर मौजूद रहते थे और उसी कमरे से जहाँ बेगम के कथनानुसार एक से एक फन्ने आदम चूहा भरा पड़ा था, कानफ्रेंस की कारवाई सुना करते थे।

अतएव आज भी फैयाज साहब तशरीफ लाये हुए थे और कानफ्रेंस में बड़े मार्के के धुआंधार भाषण दे रहे थे। यह भाषण कुछ इरफान के बारे में ज्यादा था। अफसोस यह है कि हमने पूरा भाषण नहीं सुना, अलबत्ता जिस समय हम पहुंचे तो वह कह रहे थे—

"हैरत होता है भाभी कि यह इरफान आपके भाई हैं कैसे? आप माशा अल्लाह, ऐसी समझदार हैं कि आपके काटे का मन्त्र नहीं, ऐसी ऐसी बातें करती हैं कि गैरत वाला पानी भी न मांगे। और एक वह हैं अक्ल के पीछे लठ लेकर फिरने वाले कि एक घंटा जिस किसी से बातें कर लो, एक महीने तक समझ बूझ उसके आस पास नहीं आ सकती। अरमान रह गया कि कभी तो कोई समझदारी की बात की होती। मगर जब भी कहते हैं, एक ऐसी सड़ी हुई बात कहते हैं कि सुनकर हंसी और समझ कर रोये बिना नहीं रहा जा सकता। अपने दफ्तर में भी बड़े नेकनाम हो रहे हैं। सुना है कि एक चौकीदार को जिसने पिछले महीने यह अर्जी दी थी कि मेरा बाप मर गया है जनाजे में जाने की इजाजत दीजिए। उसे कल यह हुक्म दिया है कि जा सकते हो। दफ्तर के क्लर्क इस हुक्म को लिये लिये फिरते हैं और एक एक को दिखाते हैं कि यह हमारे बड़े साहब का कारनामा है।"

बेगम ने हँसी से बेकाबू होते हुए कहा—"यह बात आपकी मन गढ़ंत है या सचमुच ऐसा हुआ है? उनकी अक्लमन्दी तो खैर जो कर गुजरें थोड़ा है, लेकिन आप भी माशा अल्लाह बातें गढ़ने में कमाल ही करते हैं।"

फैयाज़ ने गम्भीरता से कहा—"नहीं साहब यह मेरी गढ़ी हुई बात नहीं है

बल्कि किस्सा असल में यह है कि आपके भाई साहब के कुछ कागज़ दफतर में कहीं दबे रह गये थे! वह जब मिलें तो आपने सब पर एक साथ आर्डर लिखने शुरु कर दिये। उन्हीं कागज़ों में यह अर्जी भी थी। इसलिए बिना आर्डर के कैसे रह जाती? खर, यह तो जो कुछ वह करते हैं उसको वह जानें और उनका वह कमबख्त महकमा! मगर आपने जो ड्यूटी उनको सौंप रखी है उसके बारे में खुद मुझे आपकी समझदारी पर शक पैदा हो रहा है कि आखिर क्या समझ कर आपने उनको इस काम के लायक समझा है?"

अपनी छड़ी घुमाते हुए फिर बोले—"आपको मालूम है कि वह इस सिल-सिले में क्या क्या कर रहे हैं? यहाँ तक कि खुद शीला से पूछा करते हैं कि कहिये कब हो रही है शादी? और वह भी अकेले में जब क्लब का कोई भी मेम्बर आस-पास नहीं होता। शीला भी यह समझती है कि चलो एक से दो भले। अब तक तो बेचारी अकेली औरत थीं, वहाँ आपके भाई साहब ने इस कमी को पूरा कर दिया है। मुझे तो डर है कि किसी दिन वह आपके शौहर का यह न कह बैठे कि आप मुझे पहिचानते नहीं हैं, मैं तो आपका रिश्तेदार हूं।"

बेगम ने घबराकर कहा—"कहीं ऐसा भी गजब न कर दें वरना सारा भांडा ही फूट जायेगा। इतना तो खैर मैं भी जानती हूं कि वह सिर्फ बेवकूफ ही नहीं बल्कि परले दर्जे के धूर्त भी हैं। झूठ को सच समझ कर बोलते हैं और अपनी बेवकूफियों की तरफ से इतना इतमीनान है कि जैसे यह उनका पैदाइशी हक (जन्मसिद्ध अधिकार) है। कहने का मतलब यह कि उनको यदि कोई डांटे तो अंगूठा चूसने लगते हैं। वह तो कहिये कि बड़ी सिफारिश पहुंचा कर उनको यह नौकरी मिल गयी वरना यह तो इस लायक थे कि किसी गर्लस स्कूल में उस्तादनी के तौर पर रख लिये जाते।"

फैयाज साहब ने अपनी बीवी नाजों की ओर रुख करते हुए कहा—"लेकिन हमारी बेगम नाजो को वह बहुत पसन्द हैं। फरमाती हैं कि वह बड़ी भोली बातें करता है।"

नाजो ने चमककर कहा—"फिर आपने झूठ बोला! मैंने कब कहा था?"

फैयाज ने याद दिलाते हुए कहा—"अरे भाई। परसों ही की तो बात है

कि तुम कह रही थी, बेचारा सीधा आदमी है। उसकी बातों में घुमाव-फिराव नहीं होता।"

नाजों ने तीखी नजरों से देखते हुए कहा—"तो इसका मतलब यह हुआ कि मैं उन्हें पसन्द करती हूं। अरे, अगर मुझे किसी को पसन्द करना होता तो सब से पहले तो तुम्हें ही पसन्द करती।"

फैयाज ने एक दम से खड़े होकर कहा—"सुना आपने भाभी जान? गालिब की किस्म का शेर कहा है हमारी बेगम ने। यानी मतलब यह हुआ कि इस शेर का शायर कहता है कि मैं तुमको पसन्द नहीं करती। कैसी सफाई के साथ कहने वाले ने अपने महबूब (प्रेमी) का नफरत लायक ठहराया है।"

नाजों ने जल कर कहा—"महबूब नहीं तो वह...... !"

फैयाज ने प्यार की दृष्टि से नाजों की ओर देखते हुए कहा—"वह तो खैर हम हैं ही तुम्हारे, मगर तुम भी बड़ी वह हो, तुम्हें मार के टुकड़े कर दूं। भाभी जान यह शेर सुना है न आपने कि—

'तु बड़े वह हो, तुम्हें मार के टुकड़े कर दूं।' इसका पहला मिसरा मैं आपको तो सुना नहीं सकता, इनको अलबत्ता घर जाकर सुना दूंगा।"

नाजों ने डांटते हुए कहा—"यह क्या वाहियात है? तुम्हारी जबान के आगे तो दिन बदिन खन्दक होती जा रही है। जो मुंह में आता है बकते चले जाते हैं।"

फैयाज ने कहा—"अरे बेगम साहब, न हुआ मैं इनके मियां की तरह का कि खुद तो क्लब में गुलछर्रे उड़ाता और आप बजाय इस डांट-डपट के मेरी एक प्यार भरी नजर के लिये नमाजे पढ़ पढ़ कर दुआयें करती।"

बेगम ने सम्भवतः इस बातचीत से तंग आकर कहा—"आप लोगों की लड़ाई के मारे तो और नाक में दम है। मैं न जाने आप से क्या क्या पूछना चाहती हूं और आपको अपने आपस ही के झगड़ों से फुरसत नहीं। मैं आप से यह कहना चाहती हूं कि मुझे तो किसी दिन अपनी होने वाली भाभी को दिखाइये।"

फैयाज साहब ने साफ इनकार करते हुए कहा—"न साहब। यह झूठ है और न मेरे सिर में इतने बाल हैं कि आपके शौहर की चपतें खाऊं। दरअसल

आपकी यह मांग भी ठीक नहीं है। आप उसे आखिर क्यों देखना चाहती हैं ?" सिर्फ जलने के लिये, अपने को कुढ़ाने के लिए ? मालूम यह होता है कि आपको जलाने और कुढ़ाने के लिए मियां का बर्ताव शायद काफी नहीं है ?"

बेगम ने कहा—"नहीं, यह बात नहीं है। बल्कि यह बात एक स्वाभाविक सी है कि अपने दुश्मन को देखने को जी चाहता ही है। अच्छा, एक बात बताइये कि मेरी भी इस सिलसिले में कभी वह चर्चा करते हैं ?"

फैयाज ने बड़ा प्रभावित करने वाला अंदाज अपनाते हुए कहा—'मैं झूठ नहीं बोलूंगा। दरअसल वह आप से डरता नहीं है। इस जमाने में मौत से डरने वालों की गिनती बहुत कम है। खुदा से डरने वाले खुदा की मेहरबानी से अब पैदा ही नहीं होते। बहुत अरसा पहले इस तरह के लोग पाये जाते थे जिनकी बातें अब पुरानी कहानियों में तो मिलती हैं लेकिन देखने में वे लोग नहीं आते। ऐसे जमाने में अपनी जोरू से डरने वाला आदमी मुश्किल से ही नजर आयेगा। और मेरे खयाल में एक शरीफ आदमी की सब से बड़ी पहिचान यही है कि वह बीवी से डरता हो। कई बार मुझ से कह चुका है कि मैं बेगम को क्या मुंह दिखाऊंगा। जो भूल होनी थी, वह तो खैर हो चुकी है मगर अब उसे बेगम से बतलाना मेरे लिए एक पहाड़ बना हुआ है जो समझ में नहीं आता कि कैसे लांघों जायें....... !"

बेगम ने भोलेपन से कहा—"और मेरी समझ में यह नहीं आता फैयाज भाई कि जब इस किस्से को बताने के बाद वह अपनी आँखों में जब शर्मिन्दगी पैदा करके रह जायेंगे उस वक्त मैं क्या करूंगी !"

नाजो ने बुरा मान कर कहा—"तुम चाहे मुझसे लिखवा लो कि तुम से कुछ भी न हो सकेगा। उल्टी उन्हीं की लल्लो-चप्पो शुरु कर दोगी। मैं सच कहती हूं कि तुम्हारी तरह की औरतों ने तो इन मर्दों का दिमाग खराब कर दिया है। खुदा की कसम पसलियां चीर के, कलेजा निकाल ले और अपने हाथों से अपना गला घोंट के मर जाये, मगर ऐसे मर्दों के नाम पर थूकना भी न चाहिये।"

फैयाज साहब ने हाथ जोड़कर कहा—"यह आप बिना वजह मुझको धमका

रही हैं, हालाँकि न मेरा इरादा दूसरी शादी का है और न मैं अपने नाम पर आप से शुक्वाने का हक छोड़ सकता हूं ।"

नाजो ने तुरन्त कहा—"खैर, तुम अपनी न कहो। तुम्हें पूछेगा कौन ? तुम भी इस लायक होते तो कौन सी कसर उठा रखते !"

फैयाज ने मानों सच बोलते हुए कहा—"क्यों साहब। अगर हम किसी लायक न थे तो जनाब से किसने कहा था कि छुप छुप कर चिट्ठियाँ लिखा करें। रुमाल के ऊपर नाम काढ़ कर भेजे और आखिरी चिट्ठी में यह लिख दें कि खुदा के लिए शादी का इन्तजाम करो, नहीं तो मैं कुछ खाकर सो रहूंगी।"

नाजो ने यहाँ से जाने का इरादा करते हुए कहा—"आज कुछ पी तो नहीं गये हो ? ऐसे ही बेचारे हसीन थे कि मैं इनके लिए कुछ खाकर सो जाती। सब से पहले मौसी के घर मैंने देखा था जब छालटीन का थान बगल में दाबे हुए आये थे पायजामे सिलवाने में समझी कि शायद कोई कपड़े का फेरी वाला है। अल्लाह जानता है बड़े बेवकूफ नजर आ रहे थे। अब चाहे मुकर जाओ, मगर तुमने घबराकर मुझे सलाम कर दिया था। सलमा ने बताया यह फैयाज भाई हैं।"

फैयाज ने एक ठंडी साँस लेते हुए कहा—"हाय, उसी दिन तो पहला तीर खाया था। क्या मालूम था कि यही तीरअन्दाज साहबा जान का रोग बनकर रह जायेंगी। मैंने कहा सुनती हो, तुम हमारी शादी नहीं ठहरा सकती कहीं...?"

नाजो ने उसी तेजी से कहा—"अरे क्यों नहीं, चाँदसी तुम्हारी दुलहन लाऊंगी। धूम से तुम्हारी बारात ले जाऊँगी, अपनी सौत लाने के लिए। ऐसा ही अरमान है तो फर क्यों नहीं कर लेते शादी, कौन तुम्हें मना कर रहा है।"

फैयाज ने बेगम की ओर संकेत करते हुए कहा—"देख रही हो भाभी इनका क्या हाल है ?"

नाजो ने कहा—"यह तो हैं बेवकूफ, न हुई मैं इनकी जगह, अगर मजा न चखा दिया तो नाम बदल देती ?"

बेगम ने फिर बीच-बचाव करते हुए कहा—"मैं कहती हूं, तुम दोनों इतने ल के क्यों हो ? एक हम मियाँ बीवी हैं कि इतनी बड़ी बात हो रही है लेकिन क्या मजाल जो हम दोनों में लड़ाई के नाम की आधी बात भी आयी हो !"

नाजो ने बेगम की ओर से रुख बदलते हुए कहा—"न तो मैं तुम्हारी तरह देवी हूँ और न खुदा करे ऐसी बेजबान ! मेरे साथ अगर ऐसा बर्ताव करें तो मैं भी इनको मजा चखा के रख दूं। और मैं तुम से भी कहती हूँ कि जो कुछ होने वाला है वह तो होकर रहेगा। यह चुपके चुपके जो तुम घुल रही हो इससे आखिर क्या फायदा है ? उनको भी तो कुछ सजा मिलनी चाहिये !"

फैयाज ने बड़ी सहानुभूति के साथ कहा—"सजा तो खैर क्या मिलनी चाहिये। लेकिन हाँ, यह मेरा भी जी चाहता है कि ठीक शादी के वक्त मैं आपको लेकर वहाँ पहुँच जाँऊ ताँकि दूलहा मियाँ की घबराहट का तमाशा त देखा जायें। मगर आप से यह सब कैसे देखा जायेगा... ?"

बेगम ने बड़े साहस से कहा—"क्यों, देखा क्यों नहीं जायेगा ? फैयाज भाई, मुझपर तो जो तकलीफ गुजरनी थी गुजर चुकी। अब तो मैं कलेजे पर पत्थर रख चुकी हूँ। आप मुझसे वादा ले लीजिए मैं सब बर्दाश्त कर लूँगी। आप मुझे एक दम से निकाह के वक्त ले चलिये।"

फैयाज ने मुंह माँगी मुराद पायी। लेकिन दिखाने लिए अपने को बड़े पशोपेश में डालकर के कहा—"क्या बताऊँ भाभो कुछ समझ में नहीं आता। अच्छी बात है मैं आपके लिए अपने प्यारे दोस्त की नाराजगी भी मोल ले लूँगा !"

नाजो ने कलाई पर नजर डालकर कहा—"ओह, दस बज रहे है अब चलते हैं। क्यों, चलने का इरादा भी है या नहीं। उठिये, अब बस।"

आज इन लोगों ने हमको बड़ी देर तक कमरे में बन्द रखा ! अतः उनके जाते ही जब हम बाहर आये तो क्लब जाने का भी समय न था ! मजबूरन थोड़ी देर इधर उधर टहल कर समय बिताया ताँकि शामको जल्दी ही घर पहुँचने का इलजाम हम पर न लगाया जा सके और बेगम यह न कह सकें कि आज एक दिन ठीक समय पर घर आ गये थे !

❋

२५

भारती साहब के यहाँ खाने पर जिस समय हम पहुँचे हैं तो वह बेचारे सम्भवतः हमारी ही प्रतीक्षा में अपनी कोठी के बरामदे में शन्टिंग कर रहे थे।

हम लोगों को देखते ही—"आइये!" का नारा लगाया। एक बार ठहरे फिर घबराकर खाँसते हुए कमरे के भीतर घुस गये, और उस कमरे के भीतर ही से आवाज़ दी—"आप लोग बैठिये, मैं ज़रा कपड़े बदल कर आता हूँ?"

हम लोग इधर उधर कुर्सियों पर बैठ गये और चुपके चुपके एक दूसरे से बातें करने लगे, कि इतने में शीला ने आकर चुपके से फैयाज़ के कान में कहा—"डिनर सूट पहन रहे हैं!"

और इस वाक्य के खत्म होने के बाद ही भारती साहब अपनी जवानी के ज़माने का बनवाया हुआ डिनर सूट पहनकर जो अब लगभग उन्हीं की तरह बूढ़ा हो चुका था, बाहर तशरीफ़ लाये और अपनी तरफ से क्षमा माँगते हुए बोले—"बात यह है कि मैं यह भूल गया था कि खाने के लिये एक वर्दी भी हुआ करती है। आप लोगों को खाने के वास्ते रूम में देखकर मुझे भी आज सात साल के बाद यह डिनर-सूट पहनने का संयोग हुआ। बड़ी देर तक 'बो' (Bow) बाँधने का तरीका ही समझ में नहीं आया। तो खैर उस दिन तो मैं यह पूछना भूल गया कि आप सब लोगों की अलग अलग तारीफ़ क्या है?"

फैयाज़ ने सबसे पहले अपना परिचय कराते हुए कहा—"इस नाचीज़ को फैयाज़ अहमद कहते हैं।"

भारती साहब ने बात काट कर कहा—"अच्छा तो फैयाज़ का क्या मतलब होता है और यह नाचीज़ क्या बला है?"

फैयाज़ ने सफाई पेश करते हुए कहा—"फैयाज़ का मतलब है फैयाज़... यानी यह तो नाम है और नाचीज़ कहते हैं बहुत छोटे को यानी..."

भारती साहब ने एकदम से कहा—"ओह। खैर कुछ भी हो। हाँ, तो क्या नाम बताया है आपने?"

फैयाज़ ने घबड़ाकर कहा—"जी। बता चुका हूँ, मेरा नाम फैयाज़ अहमद है और सिविल सेक्रेट्रिएट में नौकर हूँ। आप मेरे दोस्त शाहिद साहब हैं, आप यहाँ के इनकम टैक्स आफिस में असिस्टैंट इनकम टैक्स आफिस हैं।"

भारती साहब अपने कमरे में टँगी हुई एक तस्वीर को देखने लगे थे, सबको सम्बोधित करके कहा—"इस तरह की तस्वीरें चित्रकार के दस्तावेज़ी झूठका नमूना होती हैं यानी किसी हालत में सच्ची नहीं हो सकती देखिये, इस तस्वीर में यह औरत नदी में पैर लटकाये बैठी है। अब जरा ध्यान दीजिए—कि नदी उसके पाँव के मुकाबले में छोटी है। दूसरी बात यह है कि आपने बहुत कम औरतों को देखा होगा कि वह नदी में पैर लटकाकर बिना वजह बैठी रहें।" खैर, तो आपने क्या फरमाया था कि आप यहाँ क्या करते हैं, शायद कुछ इनकमटैक्स की ही बात थी। हाँ, तो मैंने दो वर्ष तक इन्कमटैक्स का मुकदमा लड़ा है और अब बारह सौ रुपये साल की चपत खा रहा हूँ।"

फिर सब की ओर देखते हुए बोले—"तो खैर, जिस समय आपका खाने को जी चाहे खान-सामा से कहकर मँगवा लीजिए। बात यह है कि मेरी श्रीमतीजी यानी धर्मपत्नी खानेकी मेज पर नहीं आयेंगी। एक तो वह छुरी काँटे से खाना नहीं चाहती हैं। दूसरे हमारे यहाँ का तरीका यह होकर रह गया है कि लड़कियाँ ही अपने मजाज़ से नहीं झेंपती पर सास अपने दामाद से शर्माने लगती है। इन सबके अलावा बात यह है कि आजकल के नौजवान किसी श्रीमान् को देखकर उनकी श्रीमतीजी के लिये राय कायम नहीं करते बल्कि श्रीमतीजी को देखकर उनके श्रीमान के बारे में राय कायम की जाती है। 'इसलिए...इसलिए' यानी कि मेरा कहने का मतलब यह है कि अपनी श्रीमतीजी को आप लोगों के सामने लाकर वह राय कायम नहीं कराना चाहता जो आप उन्हें देखने के बाद कायम करना चाहेंगे। क्योंकि बात यह है कि आप चारों आदमियों को मिलाकर वह आप लोगों के बराबर हैं। तो खैर, मिस्टर इरफान के बारे में मुझे एक बात और भी पूछनी है कि इनके राजनैतिक विचार क्या हैं? क्यों मिस्टर इरफान? आपके अपने खयाल में हिन्दुस्तान के लिए वह कौन-सा तरीका अपनाया जाय कि हिन्दुस्तान के सारे दल एक साथ एक सिद्धांत मानलें।"

इरफान ने बेबसी के साथ पहले अपनी और अपने दोस्तों को देखा फिर भारती साहब का मुँह ताकते रह गये।

इतनी देर में भारती साहब पचासों गज़ल गौर कर गये, कहने लगे—"मेरे खयाल में सब हिन्दुस्तानियों को सिर्फ़ एक चीज़ सन्तुष्ट कर सकती है और वह है कि वह आज़ादी की रट लगानी ही छोड़ दें!"

इरफान के मुँह से निकल गया "जी, हाँ!"

भारती साहब एक दम से बरस पड़े—"जी हाँ से क्या मतलब? यानी आपके अपने खयाल में क्या आज़ादी को लो लेना बड़ी अच्छी बात है? यह आपने जी हाँ, कहा कैसे? अरे साहब मैं आपसे ही पूछता हूँ। मैं समझ गया, आपके राजनैतिक विचार ओछा होता है आप अखबार पढ़ते हैं?"

इरफान ने कहा—"जी हाँ!"

भारती साहब ने फरमाया—"क्यों पढ़ते हैं आप अखबार? यानी मेरा मतलब यह है कि अखबार पढ़ने से आपको क्या लाभ होती है? बहुत से लोग फैशन के लिए अखबार पढ़ा करते हैं, बहुत से लोग नशे के तौर पर अखबार के आदी होते हैं, कुछ लोग सिनेमा के इश्तहार देखने के लिए और कुछ नौकरी के कालम पढ़ने के लिए अखबार को देखा करते हैं! तो कहने का मतलब यह है कि आप किस मतलब के लिए अखबार पढ़ते हैं?"

इरफान ने कहा—"मैं दुनियाँ का हाल चाल मालूम करने के लिए अखबार पढ़ता हूँ!"

भारती साहब ने अपना सिगार सुलगाते हुए कहा—"लेकिन दुनियाँ का हाल पढ़कर क्या? उनके हालचाल तो बिना आपके मालूम किए भी पता चल जाते हैं! खैर, आज जो आपने अखबार पढ़ा उसकी 'हेड-लाईन' क्या थी...?"

अखबार होता तो बेचारा हेड-लाईन भी बता सकता। लेकिन वहाँ तो शायद चार-चार साल से अखबार पढ़ने की नौबत ही न आयी होगी! आखिर कुछ देर तक सोचने के बाद भारती साहब के तकाजों से तंग आकर बेचारे ने कह दिया—"कुछ याद नहीं रही!"

भारती साहब एकदम सम्हल कर बैठ गये—"याद नहीं रही, इसका क्या मतलब? आपकी याददाश्त का अगर यही हाल है तो कुछ दिनों के बाद अपनी

लाइफ यानी मेरी लड़की शीला के बारे में यह कह सकते हैं कि याद नहीं रही। क्यों मिस्टर मैं ठीक कह रहा हूँ ना? तो जवानी में जब आपको यादाश्त का यह हाल है तो मेरी उम्र तक पहुंचते पहुंचते तो आप शायद अपना नाम भी भूल जायेंगे। हालांकि मेरा हाल यह है कि मुझे सन् १८६४ की अखबारों की सुर्खियाँ यानी हेड-लाइन अबतक याद हैं। क्या आप भी कोई ऐसी मिसाल पेश कर सकते हैं......?"

ठीक इसी समय खानसामा ने आकर बेचारे इरफान की मुश्किल आसान कर दी और भारती साहब "तो खैर" कहते हुए हम लोगों के साथ खाने की मेज पर आ गये।

और खाने पर बैठने के पहले इरफान के कंधे पर हाथ रख कर बड़े जोर से बोले "अरे भई, सुनती हो, तुम किधर हो? खैर जहाँ कहीं भी हो देख लो यही है वह लड़का जिस के साथ शीला की शादी हो जायेगी।"

फिर सब के साथ बैठते हुए कहा—"खैर, कौन सी तारीख ते की है आप लोगों ने?"

फैयाज ने बनते हुए कहा—"आपके होते हुए हमको तारीख ते करने का क्या हक है।"

भारती साहब ने मुर्ग से खंजर आजमाई करते हुए कहा—"इसकी सिर्फ दो टाँगे हैं। एक तो मैं लूँगा। एक के लिए आप लोग फैसला कर लीजिए। इसी तरह का एक मुर्ग शायद उधर भी होगा। मैं खाने के सिलसिले में जरा निस्सकोंच हूँ। आदमी को चाहिए कि वह खाने पीने के मामले में जरा संकोच न करे। तो खैर, मेरे खयाल में तारीख ऐसी होनी चाहिए कि बैंक में जिस दिन छुट्टी न हो। यह बात मैं पहले भी कह चुका हूँ और चूँकि हम लोगों को कुछ करना नहीं है इसलिए क्यों न कल परसों यह फर्ज पूरा कर दिया जाये। मिस्टर इरफान, आपके वालिद को आसानी के साथ किस दिन शामिल होने की फुरसत हो सकती है?"

पूर्व इसके कि इरफान साहब कुछ कह सकते। फैयाज बोल पड़ा—"इरफान अपने वालिद को इस शादी की फिलहाल खबर नहीं करना चाहता।"

भारती साहब ने चौंक कर कहा—"क्या मतलब? यानी क्यों खबर नहीं

करना चाहते? यह शादी शायद शादी ही है, कोई खून, चोरी, डकैती या कोई बदमाशी तो है नहीं।"

फैयाज़ ने समझाते हुए कहा "जी हाँ। यह ठीक है मगर इरफान साहब के वालिद आपकी तरह स्वतन्त्र विचारों के बुजुर्गों में से नहीं हैं। और चूँकि उनके दखल देने से इरफान साहब को यह डर है कि शायद कोई झगड़ा पैदा न हो इसलिए यह चाहते हैं कि शादी के बाद ही उनको खबर हो तो अच्छा है।"

भारती साहब ने मुर्ग की टाँग पर अपने नकली दाँत तेज़ करते हुए कहा—स्वतन्त्र विचार वाला तो खैर मैं भी नहीं हूँ और न तो मेरे खानदान में आज तक कोई स्वतन्त्र विचारों वाला गुज़रा है। लेकिन चूँकि शीला की तरफ से मुझे इतमिनान है कि अगर मैंने खुशी से उसको इजाजत न दी तो वह मेरी नाखुशी के साथ, बिना मेरी इजाज़त लिये ही शादी कर लेगी। इसलिए मैं इसी में भलाई समझता हूँ कि जो उसकी खुशी है वही मेरी खुशी है। अगर यह इतमीनान मिस्टर इरफान साहब अपने वालिद को दिला सकते तो शायद उनको झक मार कर इजाज़त देनी पड़ती। इसका मतलब यह है कि इनमें वह हिम्मत नहीं है जो मेरी लड़की में है। और इसका दूसरा मतलब यह कि यह मेरी लड़की के साथ शादी नहीं कर रहे हैं बल्कि मेरी लड़की इनके साथ शादी कर रही है।"

पानी पीने के बाद गिलास मेज़ पर रखते हुए फिर बोले—"इसलिए मैं खुश हूँ कि बजाय इसके कि कोई मेरी लड़की से शादी कर लेता, खुद मेरी लड़की किसी से शादी कर रही है। इसलिए मेरे खयाल में एक बहुत बड़ा फर्क है जो मैं किसी वक्त आपको समझा दूंगा फिलहाल तारीख तै कीजिए। मेरे खयाल में कल या परसों। इस समय तो ज्यादा देर हो चुकी है नहीं तो यही शादी का खाना बन सकता था। मेरे खयाल में शादी बस इसी तरह होनी चाहिए, जैसे आदमी को प्यास लगी और उसने उठा कर पानी पी लिया। तो फरमाइये, कल या परसों?"

फैयाज़ ने कुछ हमसे सलाह की और कुछ इरफान से पूछा। और आखिर में डिनर की समाप्ति पर परसों की तारीख भारती साहब को बतायी। जिसको वह तो मानों पहले ही तय किये बैठे थे। तारीख निश्चय हो जाने के बाद हम लोगों को वहाँ ठहरने की कोई ज़रूरत न थी।

२२

क्लब में आज खूब चहल-पहल थी। इसलिए कि भारती साहब से रस्मी तौर पर अनुमति प्राप्त कर लेने के बाद शादी का प्रबन्ध हम लोगों ने उसी जगह किया था जहाँ यह हरकत पैदा हुई और बढ़ पल कर इस परिणाम पर पहुँची।

फैयाज़ की जिम्मेदारियों का तो पूछना ही क्या, बौखलाये हुए इधर से उधर फिर रहे थे। रमेश को सजावट का काम सौंपा गया था। इत्तिफ़ाक़ दिन में ही इरफ़ान और शोला के कानूनी विवाह के सिलसिले में सारी लिखा-पढ़ी पूरी कर चुके थे। शाहिद एक कोने में बैठे सेहरा लिख रहे थे और हम इस सम्बंध में शादी के विचार से विरक्त होकर स्वयं अपने बारे में सोच रहे थे कि जब नाज़ो और बेगम हमको दूलहा बना हुआ देखने को बजाय इरफ़ान को इस हालत में देखेंगी तो उनका सूरत आश्चर्य का कैसा दिलचस्प तमाशा होगी। दिन इसी कल्पना से खुश होकर हमने काटा और शामको जब सब मेम्बर क्लब में जमा हो गए और भारती भी अपनी श्रीमती जी के साथ तशरीफ ले आये, तो फैयाज़ ने कहा—"अब मैं जाता हूँ नाज़ो और भाभी को ले आऊँ न ?"

हमने कहा—"जाओ। बस अब उन्हीं का तो इन्तज़ार है।"

फैयाज़ ने कहा—"शोला से उनको तुम खुद मिलाना और दूलहे से बाद में मैं मिला दूंगा।"

हम लोगों में यह बातें हो ही रही थीं कि फैयाज़ का नौकर खुदाबख्श आता हुआ दिखाई दिया। हमने फैयाज़ से कहा—"खैरियत तो है, खुदाबख्श आ रहा है.........।"

फैयाज़ ने कहा—"नज़र आता है वह लोग खुद ही आ गयीं।" और यह कहकर वह फाटक की ओर लपका और हम शोला को बुलाने के लिये क्लब के हाल में चले गये।

जिस समय हम शोला को साथ लेकर आये तो बेगम और नाज़ो सीढ़ियों तक आ पहुँची थीं।

हमने बेगम को देखते ही कहा—"अरे तुम...?"

बेगम ने व्यंग्य के साथ मुस्कराकर उत्तर दिया—"मैं आपके दुःख ही में नहीं, सुख में भी साथी हूँ।"

हमने शीला की ओर देखते हुए कहा—"शीला। इनसे मिलो, यही हैं मेरे दुख की साथी जो फरमा रही हैं कि सुख की भी साथी हूँ। यानी सब मिला कर मेरी जिन्दगी के लिए मुसीबत।"

बेगम ने गुस्से से काँपते हुए, लेकिन संयत स्वर में कहा—"उनसे क्यों कह रहे हैं, जो कुछ कहना है मुझसे कहिये न।"

नाज़ो ने बेगम का हाथ पकड़ कर कहा—"ऐ, चलो वापस चलो, दरअसल आपको यहाँ आना ही नही चाहिए था।"

शीला ने दो दो करके चारों सीढ़िया फाँदकर बेगम का हाथ अपने हाथ में लेते हुए कहा—"आप क्यों वापस जाना चाहती हैं, क्या बात हुई आखिर? मैं आपको न जाने दूँगी।"

बेगम ने शीला की ओर देखते हुए बड़ी हसरत से कहा—बहिन! मुझे तुम से कोई शिकायत नहीं। मैं और तुम दोनों एक ही नाव में सवार हैं। फर्क इतना है कि यह नाव तुम्हें किनारे लगाना चाहती है और मुझे डूबोना।"

शीला ने बिना समझे हुए कहा—"ब्यूटीफुल! कितनी अच्छी बात कही है आपने, लेकिन क्यों कहा है?"

नाज़ो ने जलकर कहा—"हाय हाय री, बेचारी ऐसे बन रही है जैसे कुछ जानती ही नहीं हैं।"

शीला ने भौंचकी होकर नाज़ो की ओर देखा और कुछ समझ न सकी कि क्या बात है? बेगम ने अपने कलेजे की हूक को शब्दों के भेष में पेश करते हुए कहा—"मैं तुम्हारी एक नालायक दासी हूँ। इसलिए कि जिसकी पूजा मेरा फ़र्ज़ है वह खुद तुम्हारा पुजारी बन गया है।"

शीला ने फिर बेवकूफी का प्रमाण देते हुए कहा—"क्या यह किसी ड्रामे के डॉयलाग हैं?"

इतने में फैयाज ने आकर इस वार्तालाप का सिलसिला फिलहाल खत्म करा दिया और आते ही कहा—"कहिये भाभी! आप हमारी नई भाभी से मिलीं? और शीला बताओ तो इनमें से कौन-सी मेरी बेगम है और कौनसी भावज...?"

शीला ने कहा—"मुझे तो दोनों ही अच्छी लग रही हैं। असल में तो आप इन दोनों में से किसी के लायक न थे !"

फैयाज ने कहा—"हाँ भाई आप सच कहती हैं, लायक तो मैं सिर्फ आपके ही था, लेकिन आपने तो हमें पूछा ही नहीं ! खैर, हाजिर में हुज्जत नहीं, जो कुछ भी हम हैं, वह हैं। यह हैं मेरी बीवी नजहत जिसे मैं नाजो कहता हूँ और यह हैं आपके शौकी की बेगम रफिया सुल्ताना जिनको शौकी साहब मारे लाड़के 'रफ्फो' कहते हैं, और खुद इस वक्त जाने कहां रफ्फू चक्कर हैं !"

नाजो ने उसी कटु स्वर में कहा—"वह बेचारे ज्यादा देर तक आंखे चार नहीं कर सके। नई दुलहन की खुशामद में इस बेचारी को 'जिन्दगी की मुसीबत' तक ही कह पाये थे कि शायद इसके बाद हिम्मत न हुई !"

शीला ने चकित होकर कहा—"मेरी खुशामद......?"

फैयाज ने कदाचित यह समझकर कि भेद खुलने ही वाला है, बेगम और नाजो को साथ लेकर उस कमरे में आ गया, जहां इस उत्सव में आये हुए मेहमान दुलहे को घेरे हुए बैठे थे। बेगम ने दूलहे को देखा और देखने के बावजूद पहिचान न सकी ! "मन के विश्वास ने आंखों से वही दिखाया जो वह पहले समझी हुए थीं। यहां तक कि फैयाज ने स्वयं हमारे सामने कहा—"आइये भाभी ! दुलहन से तो आप मिल चुकी, अब दूलहे से भी मिल लीजिए !

बेगम ने अपनी डूबती हुई आवाज से कहा—"जिन्दगी भर मिल चुकी हूँ, अब क्या करूँगी मिलकर !"

फैयाज ने जोर दिया—"मिलिये तो सही, आपको शर्मिन्दा करने का वक्त तो यही है।"

हम पास ही खड़े मुस्करा रहे थे, मगर मजा यह था कि बेगम और नाजो दोनों गर्दनें झुकाये बुत बनी बैठी थी और दोनों में से कोई भी हमें देखने को मानों तैयार ही नहीं थीं !

आखिर फैयाज की जबरदस्ती से बेगम और नाजो दूलहे तक गयी, और जब दूलहे मियां इरफान ने गड़बड़ा कर कहा—"अरे आपा......!" तो अचरज का एक तमाशा बेगम थीं और दूसरी नाजों !

लेकिन स्वयं दूलहे मियां भी अचरज का कारटून बने हुए खड़े थे ! द ।

मिनट निरंतर मौन रहने के बाद जब बेगम ने फैयाज की ओर देखते हुए कहा—

"यह आखिर क्या पहेली है······?"

फैयाज ने हमारी ओर संकेत करते हुए उत्तर दिया—"इस पहेली का हल यह बदमाश है जो आपके पीछे खड़ा हँस रहा है।"

बेगम ने पलट कर हमको देखा तो हमने झुक कर आदर से सलाम किया।

लेकिन बेगम और नाजा से बढ़कर शीला फैयाज के सिर हो गयीं—"आखिर यह क्या गोरख-धंधा है? अगर यह कोई मजाक है तो अब इसे खत्म कीजिए।"

नाजा ने बेगम की ओर देखते हुए फैयाज से कहा—"बहुत बुरी बात है फैयाज! अच्छा इस वक्त इस हालत में नहीं है कि तुम इस तरह का मजाक करो।"

फैयाज ने इन दोनों को समझाने की अनुमति नजरों ही नजरों में हमसे चाही। हम उसको अनुमति देते हुए बेगम को साथ लेकर लान के उस कोने में आ गये जहाँ शीला ने हमको पहली बार 'शोफर' की उपाधि दी थी।

हमने बेगम को घास पर ढकेलते हुए कहा—"बेगुमान औरत! तुम मेरी शादी में शामिल...?

बेगम ने उसी स्वर में कहा—"बदजबान मर्द! देखी एक औरत की हिम्मत...? लेकिन मुझे सबसे पहले समझा दो कि यह किस्सा क्या है, मेरी तो समझ में नहीं आ रहा है कि यह जो कुछ मैं देख रही हूँ जीता-जागता सच है या सपना... ?

हमने बेगम को सता-सताकर गुदगुदा-गुदगुदाकर शुरू से आखिर तक की सारी कहानी दस पन्द्रह मिनट के अन्दर सुना दी, और ठीक उस समय जब कि बेगम बड़े दुलार से हमारे बालों के साथ खेल खेल रही थी—"उफ रे चोर!"

पीछे की झाड़ियों से एक कहकहा गूँजा और शीला ने बड़े जोर से कहा—"वाह, क्या शान है!" बेगम देखकर शीला से लिपट गयी। हम फैयाज की कमर में हाथ डालकर खड़े हो गये। फैयाज का हाथ नाजा के कन्धे पर था।

और इरफान खड़े अँगूठा चूस रहे थे कि एकाएक शास्त्री साहब की आवाज आयी—"तो आखिर मतलब यह है कि यह क्या वाहियात है? यानी कुछ तो ऊँघ रहे हैं और कुछ सूख रहे हैं। दो तीन आदमी मेरी श्रीमतीजी को देख

कर अब भी हँस चुके हैं। और तुम लोग यहाँ हँसी मजाक कर रहे हो। मेरी राय में आप सब को वहीं जाना चाहिये ताकि मेरी श्रीमतीजी की तरफ से लोगों का ध्यान हटे। वह अगर मोटी है तो इसकी शिकायत मुझे होनी चाहिये किसी और को हंसने की ज़रूरत नहीं है। हालाँकि निन्यानवे प्रतिशत औरतों का भविष्य यही होता है कि वह अपनी आखिरी उम्र में पहुँचकर इमारत बन जाया करती हैं। आप से पूछता हूँ, क्या नाम बताया था आपने अपना, शायद फैयाज वगैरह था। हाँ, तो आप ही बताइये कि यह बात एक मोटी औरत के पति के शर्मिन्दा होने के लिये काफी है या नहीं। चाहे यह अवसर उसकी बेटी की शादी का ही क्यों न हो...!"

फैयाज़ ने सबको अन्दर कमरे में चलने का संकेत किया, जहाँ सचमुच मिसेज़ भारती इस तरह बैठी हुई थी, मानो दूलहा इसी हाथी पर आया है।